वन्देमातरम्

लेखक
विनायक सदाशिव सुखठणकर

प्रस्तावना
कमलादेवी चट्टोपाध्याय

स ह यो गी – प्र का श न
हीराबाग : गिरगांव : बम्बई

सहयोगी-प्रकाशन ५

मई १९४३ : ६५०

मूल्य — दो रुपए

(युद्ध-जन्य वृद्धि सहित)

सूची

प्रकाशक—भानुकुमार जैन, मंत्री-सहयोगी-प्रकाशन, हीराबाग, बम्बई ४.

मुद्रक—आर. आर. बखले, बम्बई वैभव प्रेस, गिरगांव, बम्बई

भारतीय साहित्य का मुखपत्र.-"हंस"
संपादकः— प्रेमचंद.
कन्हैयालाल मुनशी.
प्रकाशकः— दि हंस लिमिटेड,
सरस्वती प्रेस, बनारस कैन्ट

सं० 1683 H.
ता० 20-11-1935 ई०

My dear friend,

Your story 'Flood' was out in Nov. issue & you must have read the copy. It is one of the finest stories I have read. The interest is all along sustained & the climax has been reached with such a consummate skill that it extorts admiration. It has been widely appreciated

Yours
Premchand

[नवम्बरके "हंस" में आपकी "नदीकी बाढ़" कहानी प्रकाशित हुई है। मैंने जितनी सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ पढ़ी हैं उनमें यह एक है। इसके पढ़नेमें आदिसे अन्ततक दिलचस्पी कायम रहती है और इसमें उत्कर्ष-बिन्दु ऐसे कौशलके साथ लाया गया है कि उससे हमारे मुँहसे बरबस कहानीकी तारीफ निकल पड़ती है। इसकी कद्र व्यापक रूप में हुई है।—**स्वर्गीय मुन्शी प्रेमचन्दजी**] (व्यक्तिगत पत्रसे)

श्री. हरींद्रनाथ चट्टोपाध्याय—"I consider your work truly fine and full of vision..I like especially 'The Flood'..Your other tales too..have genius in them."....
—(व्यक्तिगत पत्रसे)

आचार्य काका कालेलकर—

..'वंदेमातरम्' इस कथामाला-का अन्तिम मधुर ग्रास है। रोमांचकारी इति-हास या विविध रसप्रधान महा-काव्यको सजानेवाले प्रसंगको एक कोनेमें रखकर केवल उसके प्रकाशमें एक सहानुभूति-पूर्ण लड़कीके हृदय-सरोवरकी सौम्य लहरोंको प्रदर्शित-कर लेखकने अपना कौशल दिखाया है, ... पग पगपर कथाकार ने श्रेष्ठ कलाकी आत्मा — संयम को निभाया है। उनकी अभिरुचि बहुत ऊँचे दर्जे की प्रतीत होती है।"..

(चित्रमय जगत्‌से)

केन्द्रिय न्यायालयके प्रसिद्ध न्यायाधिश और साहित्य-कोविद डॉ. मुकुन्दराव रामराव जयकर—

"....The first story 'Jai-Jui' is superb. It is equalled by a few other pieces in the series..The author's literary gifts are well-known. He deftly sketches, in attractive outlines the habits and customs of a community, which has hitherto been, regarded as too outlandish to find a place in the literary writings of our age ... If other authors follow the example of Mr. Sukhthanker in a few years' time Marathi literature will be representative of the entire Marathi speaking people and not only of a few select sections"...

श्री. बाल गंगाधर खेर-"Mr. Sukhthanker's book 'At the foot of the Sahyadri' is really a fine book of modern fiction."...

महाराष्ट्र-ज्ञानकोशकार स्व. डॉ. श्रीधर व्यंकटेश केतकर

"श्रीयुत सुखठण-करने अपनी इन कहानियोंमें जो प्रसंग वैशिष्ठ्य और स्थान — वैशिष्ठ्य दिखाया है वह बहुत ही उत्तम रीतिसे लाया गया है। और इस दृष्टि-से इस समय मराठी कहानियोंमें यह रचनायें अद्वितीय हैं।...उनके सदृश व्यापक सहानुभू-तिका लेखक मराठी साहित्यकी अभि-वृद्धिके लिए अत्यधिक वाच्छ-नीय है।"—....

('यशवंत'से)

प्रस्तावना

...आज जब कि कहानी पश्चिमी देशोंमें विकास की चरमावस्थाको पहुँच रही है, भारतवर्षमें अब भी वह अपनी शैशवावस्थामें ही है । परन्तु पुनर्निर्माण-कालके साथ ही आज समस्त देशमें विभिन्न दिलचस्पीसे भरे और मौलिक प्रयत्न दीख पड़ रहे हैं। हमारे नवयुवक कलाकार श्री सुखठणकरका उद्योग भी उन्हींमेंसे एक है । अपनी उन्नतिके चावमें भारतवर्ष अपनी बहुतसी बुराइयोंके प्रति जागरूक हो गया है और यह प्रवृत्ति उसके प्रत्येक संघर्षशील साहित्यिक प्रयत्नमें स्पष्ट और विद्रोहात्मक रूपमें व्यक्त होती दीखती है। फलतः कहानी राष्ट्रकी प्रतिष्ठाके लिए कलंक-स्वरूप बुराईके प्रदर्शनार्थ, निस्सन्देह सबसे उत्तम और शक्तिशाली साधन सिद्ध हुई है। श्री सुखठणकर भी उन्हींमेंसे एक हैं, जिन्होंने उस उद्देश्यकी पूर्तिके लिए कहानीका यथेष्ट सफलताके साथ प्रयोग किया है। परंतु कोई भी उनपर प्रचारवादी लेखक होनेका आक्षेप नहीं लगा सकता । वे सुधारवादी विचारों के प्रचारक होनेकी अपेक्षा कहीं अधिक कलाकार हैं। वे उस पात्रके समान हैं, जिसके द्वारा सौंदर्य केवल अपने आत्म-प्रकाशनके आनन्दके लिए ही स्वतः निसृत होता है । वे आत्माभिव्यक्तिकी तीव्र इच्छासे अत्यधिक आंदोलित हैं। उनकी रचनाओंमें सबसे अधिक आकर्षक वस्तु उनकी मौलिकता और नवीनता है । पुनर्निर्माण-कालके सच्चे शिशुकी भाँति उन्होंने अपने लिए एक नया ही मार्ग बनाया है और भावी लक्ष्य तक पहुँचने अथवा अपने भविष्यका स्वयं निर्माण करनेके लिए वे उसपर साहस-पूर्वक बढ़ते चले जा रहे हैं ।

गोआ निवासी होनेके कारण उनकी सभी कहानियाँ अपने जीवनके उपकरण और रंग उसी सुन्दर प्रदेशसे ग्रहण करती हैं। यह प्रान्त अत्यधिक हरा-भरा और कुछ ग्रामीण तथा कुछ वन्य-प्रकृतिका है । इसलिए सभी कहानियोंमें आदिम और पौराणिक सौंदर्यकी छाप है। गोआ-निवासी, बड़े बच्चोंके समान हैं। वे सरल और सीधे तथा एक दूसरेमें पूर्ण विश्वास रखनेवाले हैं। वास्तवमें कुछ समय पहले वहाँ चोरीका नाम तक न था। आज जब कि सारे संसारमें सनसनीपूर्ण हत्याओं, भयानक धोखेबाजियों,

सामाजिक डकैतियों और सभ्योंके हथकण्डोंसे उथल-पुथल मच रही है गोआका जीवन अबाधित रूपसे अपने उसी ढंग पर चला जा रहा है।

श्री सुखठणकरने इन विशेषताओंको मधुर यथार्थवादी रूपमें व्यक्त किया है। साथ ही गोआके अपने मुहावरोंके प्रयोग द्वारा गोआका वातावरण पैदा करनेमें उन्होंने विशेष सौंदर्य ला दिया है।

'ताम्रपत्र' शीर्षक कहानी सजीव आकर्षणके साथ ही उस 'जीवन-तत्व' से पूर्ण, सरलता और अछूते सौंदर्यका अनमोल रत्न है। उसे पढ़ कर हमें बरबस रूसी कहानियोंकी याद आ जाती है। इस कहानीमें हमें उस प्रभाव के दर्शन होते हैं जो भारतीय साहित्यके लिए अत्यंत वांछनीय है और जिसका पूरा-पूरा स्वागत भी हो चुका है। इस कहानीमें ही आर्थिक और राजनीतिक शोषणकी चक्कीमें पिसती हुई एक जातिकी भूखी नग्नताका चित्रण है, इसलिए वे सीधी भारतीय जीवनके भीतरी स्तरको छूती हैं।

'वन्देमातरम्' करुणासे ओत-प्रोत एक छोटी-सी कवित्वपूर्ण कहानी है। यह उस अभागे देशकी करुण और विषादपूर्ण कथा है, जहाँ स्वतन्त्रताको प्रेम करना शहादतका आह्वान करना है। अत्याचारी सदैव कायर होता है और वह अपने मार्गमें छोटी-से-छोटी छायाको देखकर भी डर जाता है। इसलिए वह अपनी अन्यायपूर्ण स्थितिकी रक्षाके लिए अत्यंत निर्दयतापूर्ण और घृणित उपायोंको काममें लाता है। जेलकी अँधेरी कोठरियोंमें वन्द विचाराधीन कैदियों पर होनेवाले नैतिक और शारीरिक अत्याचार अब केवल कहानी ही नहीं रह गये हैं। वल्कि ये साहसी वीर अब अदालतोंमें न्यायाधीशोंके सम्मुख ही अपने ऊपर होनेवाले दुर्व्यवहारोंका कच्चा चिट्ठा खोलते हैं। अदालती कागज़ातों पर ज़बरन हस्ताक्षर, झूठी मुखबिरीके लिए मनगढ़न्त किस्से और सबसे अधिक निन्दनीय कार्य बनावटी मुखबिरोंकी पेशी आदि आजकल नित्यप्रति होनेवाली साधारण घटनाएँ हैं। यही क्यों यदि स्वामि (मालिक) की शक्ति खतरेमें हो और उसके शासनाधिकारके प्रति मन, वचन और कर्मसे विरोध प्रगट हो तो अन्तर्राष्ट्रीय कानून भी उठाकर एक ओर ताकमें रख दिये जाते हैं।...

इस कोमलतम कहानीको कठोरता मिलती है, चट्टानके समान दृढ़ तथा साहसी उन दो बंगाली विद्रोहियोंसे, जो दूसरे और विद्रोहियोंके समान सिर्फ 'विद्रोही' व्यक्ति ही नहीं, वरन् स्थायी 'विचार' हैं। उन्हें भले ही शूली दे दी जाय, पर्वाह नहीं; लेकिन उनके आदर्श कहानीकी उस छोटी-सी लड़कीके हृदयके आदर्शोंकी भाँति ही अमर हैं। मदिराकी भाँति वे हमारे रोम-रोममें व्याप्त हैं और समयके साथ-साथ मधुर तथा विकसित होते जाते हैं। वह छोटी लड़की उन दोनों देशभक्तोंकी शक्ति और साहसकी सरस और कोमल अभिव्यक्ति है। यद्यपि वह अभी भोली और अनजान है फिर भी वह उनकी महान् शक्तियोंके प्रति चैतन्य है; और इसी लिए वह अपने हृदयका समस्त प्यार और भक्ति उनके जाज्वल्य अनुरागको समर्पित कर देती है। उसे स्वप्नमें भी यह गुमान न था कि ऐसे पुण्य और महत् कार्यका परिणाम क्रूरता और उत्पीड़न होगा। उसके मस्तिष्कमें तो वे दोनों आत्माएँ किसी परिस्तान के दो जगमगाते हुए सुन्दर सितारोंके समान, अपने मोहक मंत्र वंदेमातरम्‌को लिए हुए सुशोभित थीं। आयु और अनुभव उसके बचपनके विश्वासोंको न मिटा सके, क्योंकि उसका मस्तिष्क केवल सार वस्तुको ग्रहण करता है और देश-प्रेमकी भावना तथा साहसकी ज्योति जगानेवाले वे दोनों देशभक्त शक्तिशाली विचारोंके अतिरिक्त और कुछ हैं ही नहीं। उन दोनों वीरोंका एक साथ मृत्युको आलिंगन करना सैक्को और वेंजेटीके समान ही है और यह वेंज़ेटी द्वारा अपनी फाँसीके पूर्व दिए हुए अंतिम संदेशसे पूर्णतया स्पष्ट है—

'यदि मानवताकी मुक्तिके महान् कार्यके लिए हमने अपना जीवन अर्पित न किया होता तो हम एक साधारण आदमीका जीवन जीकर मर जाते। न हमें कोई जनता और न हमारा जीवन सफल कहा जाता! परन्तु आज हमारा मनुष्य-जीवन सफल हुआ है। और यही हमारी विजय है। जीवन का यह अन्तिम क्षण ही हमारी विजय है। इस विजयके मुकाबले हमारी वेदनाएँ और यन्त्रणाएँ कुछ भी नहीं।

'हमें अपने सत्यपर होनेकी संपूर्ण श्रद्धा और विश्वास है। यदि हमें दुबारा जन्म लेना पड़े तो भी हम वही करेंगे जो हमने इस जन्ममें किया और खुशी-खुशी फाँसीके तख्ते पर झूल जाएँगे।'

उपर्युक्त संदेश ही उन समस्त देशभक्तोंकी हार्दिक अभिलाषाओंका प्रतीक है, जो स्वतंत्रताके लिए जीवित रहते हैं, श्रम करते हैं और अपने प्राण देते हैं और जिनका मंत्र, जिनका आराम और जिनका विश्राम सदाके लिए केवल एक ही है ' वंदेमातरम् ' ! *

जुलाई १९३१ | **कमलादेवी चट्टोपाध्याय**

---

* लेखक की मूल मराठी पुस्तक ' **सह्याद्रीच्या पायथ्याशीं** ' में दी गई अंगरेजी भूमिका में से उद्धृत।

नदीकी बाढ़

नदीकी बाढ़

सान्तु शणै और पावलू-द-सा, इन दोनों पड़ोसियोंके आपसी मन-मुटावकी खबर जब बाहर फैली तो पहले-पहल तो इसपर किसीको विश्वास ही न हुआ। लेकिन कुछ दिनोंसे जब लोगोंने स्वयं उन्हींको गाँवकी चौपालमें एक दूसरेकी निन्दा करते सुना तो उन्हें विश्वास करना ही पड़ा। फूलगाँवके लिए यह खबर कुतूहलजनक और विस्मयोत्पादक थी। और यह स्वाभाविक भी था। क्योंकि, ये दोनों घराने फूलगाँवमें अत्यधिक प्रतिष्ठित समझे जाते थे। सान्तु शणै और पावलू-द-साकी अपने गाँवमें इतनी अधिक साख थी कि उन दोनोंकी सलाह न केवल ग्राम-पंचायत, ज़मींदारी और लेन-देनके मामलेमें ही अपितु लोगोंके घरेलू झगड़ों तकमें मान्य समझी जाती थी। सान्तु शणैके हिन्दू और पावलू-द-सा-के ईसाई होते हुए भी उन दोनों परिवारोंमें पीढ़ियोंसे जिस तरहकी आत्मीयता और घरोपा चला आरहा था उसे देखते हुए किसीको स्वप्नमें भी यह कल्पना नहीं हुई थी कि इन दोनोंमें कभी किसी तरहका वैमनस्य भी पैदा हो सकता है!

फिर इन दोनों घनिष्ठतम पड़ोसियोंके मनमें गाँठ पैदा करनेवाली घटना भी कितनी नगण्य थी!

इस सब झगड़ेकी जड़ था सान्तु शणैका नाती सोनू! कुल जमा सोलह-सत्रह बरसका, अभी कलका लौण्डा! ननिहाल आये उसे मुश्किलसे चार दिन हुए होंगे कि इसी बीच उसने ईर्ष्याकी यह भयंकर ज्वाला सुलगा दी!

परन्तु सोनूको मात्र सोलह-सत्रह बरसका एक साधारण लड़का समझ बैठना

भूल होगी। वह कोई ऐसा-वैसा साधारण व्यक्ति नहीं था। वह गोवाके एक बड़े शहरका रहनेवाला था। एक ऐसे शहरका जो 'गोवाका पूना' कहा जाता है। वह उन शहरी नवयुवकोंका एक अच्छा नमूना था जिनके दिमाग़में वहाँकी सभा-सुसाइटियों, वाचनालयों और व्याख्यान-समितियोंसे उपार्जन किया हुआ अधकचरा ज्ञान ठँसा होता है। वह एकके बाद एक स्थापित होकर टूट जानेवाले पाँच-सात विद्यार्थी-संघों और मंडलोंका मंत्री भी रह चुका था। इतना ही नहीं इधर कुछ दिनोंसे शहरमें होनेवाली अधिकाँश सभाओंमें उसे प्रस्ताव, समर्थन और आभार-प्रदर्शन करनेका सम्मान भी धीरे-धीरे मिलने लगा था। यों एक होनहार देशभक्त और सार्वजनिक कार्यकर्ताके रूपमें शहरकी जनता उसे चाहने लगी थी।

इन सब बातोंके परिणामस्वरूप उसे ऐसा विश्वास हो चला था कि ऐसा एक भी राजनैतिक, धार्मिक या सामाजिक मसला नहीं है जिसकी वह सम्पूर्ण जानकारी नहीं रखता हो।

विशेषकर पिछले कुछेक महीनोंसे अखबारोंमें उत्तर भारतके विभिन्न स्थानोंपर हुए हिन्दू-मुस्लिम दंगोंके विस्तृत विवरण और समाचार पढ़ते-पढ़ते 'हिन्दू धर्म पर विधर्मियोंका आक्रमण' उसका अति प्रिय विषय बन गया था। ईसाइयोंका कोई धार्मिक जुलूस, गिर्जाघर या काले कपड़े पहने हुए कोई पादरी उसे दिख-भर जाना चाहिये, बस, सोनू महाशयका जोशीला भाषण शुरू हो जाता था। वह अपने श्रोताओंके आगे अत्यंत ओजस्वी भाषामें गोवाके हिन्दू और ईसाइयोंके आपसी वैमनस्यका हृदयद्रावक चित्र उपस्थित कर देता था। सनसनाहटभरी घटनाओं और चुभती हुई भाषाकी उसके पास कोई कमी न थी। क्योंकि ब्रिटिश महाराष्ट्रके कुछ खास अखबारोंमें छपे हुए हिन्दू-मुस्लिम-समस्या संबंधी जिन लेखोंका उसने मनन किया था, उनके 'मुसलमान' शब्दोंको 'ईसाई' शब्दमें परिवर्तित-भर कर देनेसे उसका काम आसानीसे हल हो जाता था।

फूलगाँवमें आनेके दिनसे ही अपने इस प्रिय विषयपर सोनूकी वक्तृताएँ जोर पकड़ने लगीं। राजनैतिक स्पर्धा और ईसाइयोंके पाश्चात्य रहन-सहनके कारण गोवाके शहरोंमें बसनेवाले हिन्दू और ईसाइयोंके बीच जो थोड़ा बहुत भेदभाव और विरोध दिखाई पड़ता था उसका फूलगाँव जैसे देहातमें नितान्त अभाव ही

था। वहाँ दोनों सम्प्रदायोंमें गहरी एकता और मेलजोल देखकर सोनूको लगा कि यह विपत्ति स्वयं हिन्दू-समाजने अपने हाथों अपने गलेमें बाँध रखी है; अतएव खतरेका बिगुल बजाकर हिन्दुओंको इस विपत्तिसे उबारने और उन्हें आक्रमणशील बनानेके लिए वह कमर कसकर तैयार हो गया।

सान्तु शणैके घरके चबूतरेपर गाँवकी वृद्ध मंडली हर रोज़ साँझको जमा होती थी और इधर-उधरकी गप-शप लड़ाकर घड़ी दो घड़ी अपना मनोरंजन किया करती थी। सान्तु शणै इस मंडलीमें अपने नातीकी विद्वत्ताकी बातें बहुत बढ़ा-चढ़ा कर सुना चुका था। आज जब सोनू आगया तो उसके बारेमें अपने कथनकी सत्यता प्रमाणित करनेके लिए वह अधीर हो उठा। फलस्वरूप सोनूको बूढ़ोंकी इस मजलिसमें प्रवेश करते देर न लगी। उसने दो ही दिनमें उन लोगोंपर अपनी अच्छी धाक जमा ली और वहाँ हिन्दू-धर्मपर विधर्मियोंके आक्रमण विषयपर उसके बिला नागा भाषण होने लगे।

उज्ज्वल आर्य-संस्कृति, सनातन हिन्दू-धर्म, मुसलमानों और पोर्तुगीज़ोंकी अन्धी धार्मिकता, वास्को-डि-गामा, जेजुइत्स्, इन्क्विज़िशन, औरंगज़ेब और जजिया-कर, स्वामी दयानन्द, आर्यसमाज, हिन्दू शहीद आदि महत्त्वपूर्ण विषयोंपर उसका ओजस्वी शब्दचातुर्य सुननेमें उसके श्रोता इतने अधिक तल्लीन हो जाते थे कि बाज वक्त तो हुक्केका गुड़गुड़ाना तक भूल जाते थे।

परन्तु लोग-बाग प्रतिदिन हिन्दू धर्मपर उसके प्रवचनोंको तल्लीन होकर सुनने; वास्को-डि-गामा द्वारा की गई हिन्दुओंकी हत्या और दिओग रुद्रिगिश द्वारा ज़मींदोस्त किये गये हिन्दू मन्दिरोंकी हृदय-विदारक कथा सुनकर दुःखसे आहें भरने; और 'हिन्दुओंको गले लगाओ, विधर्मियोंको मार भगाओ' सूत्र और विशेषकर इसके उत्तरार्ध पर ही अवलम्बित सोनूका उपदेश सिर झुकाकर मान लेनेके बावजूद भी सान्तु शणैके चबूतरेपरकी बैठक समाप्त हो जानेपर घर लौटते समय हर रोज पावल्-द-सा और गाँवके अन्य ईसाई पड़ोसियोंके यहां जाना और उनका कुशल समाचार पूछना भी नहीं भूलते थे। अपने इन ईसाई पड़ोसियोंके चबूतरोंपर बैठे और उनकी दी बीड़ियाँ फूँकते हुए वे लोग तबतक सुखदुःख और आपसी हितु-मिताईकी बातें करते रहते थे जबतक बीड़ियाँ ढूँठ रहकर उनकी अंगुलियाँ नहीं जला देतीं और उन्हें उठनेको बाध्य नहीं कर देती थीं। उनके इस नित्यके

क्रममें सोनूके उपदेशोंके बावजूद भी जब कोई अन्तर न पड़ा तो उसे लगा कि उसका सारा प्रयत्न चिकने घड़ेपर पानी डालनेके समान निष्फल ही हो रहा है।

अन्तमें एक दिन यह आजमानेके लिए कि हिन्दू-धर्मकी रक्षाका अति महत्त्वपूर्ण कार्य अपने ऊपर लेनेके लिए ये लोग कहाँ तक तैयार हैं उसने बड़े ही ओजपूर्ण शब्दोंमें निश्शंक होकर उनके सामने यह प्रस्ताव रखा कि गोवा-स्थित हिन्दू जनताका यह कर्त्तव्य है कि वह अब सावधान हो जाय और ईसाइयोंके विरुद्ध धार्मिक जेहाद बोलनेका निश्चय कर ले। इस प्रस्तावका स्वयं ही समर्थन करते हुए उसने अपने श्रोताओंसे साग्रह प्रार्थना की कि फूलगाँववालोंको इस धार्मिक कृत्यका श्रीगणेश कर अन्य लोगोंका मार्ग-प्रदर्शन करना चाहिये।

जब बात यहाँ तक बढ़ गई तो कई लोग बड़े असमंजसमें पड़ गये। किन्हींने बात टालनेके इरादेसे उसकी हाँमें हाँ मिलाई और किन्हींने उसकी बात हँसीमें उड़ा देनेका प्रयत्न किया। एक धूर्तने कहा—'सोनू महाशयकी बात सवा सोलह आने सही है! हमें उनके प्रस्तावको अवश्यही कार्यान्वित करना चाहिये, अन्यथा वह हम हिन्दुओंके लिए एक भयंकर कलंककी बात होगी! परन्तु अभी तो बरसातके दिन आ लगे हैं। लोगोंको अवकाश भी नहीं है। ज़रा ये दो-तीन महीने बीत जायँ तो विजयादशमीके शुभ मुहूर्तपर इसका श्रीगणेश किया जाय' और यों मीठे शब्दोंमें सोनूके प्रस्तावकी खिल्ली उड़ाई। उन लोगोंमें एक मुँहफट बुड्ढा भी था। उसने छाती ठोककर कहा कि उसकी सारी ज़िन्दगी होगई परन्तु उसने ब्रिटिश-भारतके हिन्दू-मुस्लिम दंगोंके समान गोवामें हिन्दू-ईसाई दंगे या ईसाइयों द्वारा हिन्दुओंपर अत्याचार किये जानेकी एक भी घटना देखना तो दर किनार सुनी तक नहीं। आज दिन तक उसके पुरखे ईसाइयोंके साथ घनिष्ठता का जो संबंध रखते चले आये थे भविष्यमें उसीको बनाये रखनेका अपना दृढ़ निश्चयभी उसने व्यक्त किया और सोनूके उपदेशों को मूर्खता-पूर्ण बतलाते हुए कहा कि 'अभी कलका छोकरा' छोटे मुँह बड़ी बात करता है!

सोनू गँवई गाँवके एक बूढ़े खूसटके हाथों अपना और विशेषकर अपने सिद्धान्तका ऐसा अपमान सह ही कैसे सकता था? वह आग-बबूला हो उठा। उसने ताल ठोककर अपने प्रतिद्वन्दीको शास्त्रार्थके लिए ललकारा; परन्तु उस पाजी बूढ़ेमें इतना साहस ही कहाँ था? उलटा वह तो यह कहकर अपना बढ़प्पन जतलाने

लगा कि अभी चार दिन पहले इसी लौंडेने गोदमें उठानेपर उसका धोबीसे धुला इस्त्रीबन्द दुपट्टा गन्दा कर दिया था; और यह तो अभी कलकी बात है कि उसके शैतानी करनेपर उसने उसके कान ऐंठ दिये थे। भला ऐसे छोकरेके कौन मुँह लगे ? और अन्तमें वह सान्तु शणैके चबूतरेपरसे भागकर आश्रय लेने पावलूके चबूतरेपर पहुँच गया।

बस, उस दिनसे सोनूको पक्का विश्वास हो गया कि जराजीर्ण वृक्षके इन पुराने धड़ोंको कितना ही क्यों न सींचा जाय इनमें कोंपलें फूटना संभव नहीं ! इन मुर्दा-दिल बूढ़ोंपर हिन्दू-धर्मके उद्धारकी आशाका मदार बाँधना सरासर भूल ही है ! समाजकी भावी आशा, आजके बालकोंमें ही स्फूर्तिके बीजारोपण करना एक मात्र उत्तम मार्ग है। सारे संसारमें हिन्दुत्वकी दिव्य पताका फहरानेवाले भावी धर्म-वीरोंका उन्हींमेंसे निर्माण होगा।

दूसरे ही दिनसे उसने अपना कार्य-क्षेत्र बदल दिया। चबूतरेकी मण्डलीको सदाके लिए नमस्कारकर आगेसे वह घरके आँगन, चौक, बरामदे अथवा नारियलके कुंजोंमें शैतानी करते फिरनेवाले आर्य-कुमारोंमें अपने मतका प्रचार करने लगा।

उनके हृदयों तक हिन्दू-धर्मका दिव्य-सन्देश पहुँचानेके लिए उसने नये ज़ोर-शोरसे उनके सामने अपने व्याख्यान झाड़ना शुरू किये और शीघ्र ही उसे सफलताके चिन्ह भी दृष्टिगोचर हुए। फूलगाँवके बालकोंपर उन इतिहासकालीन और आधुनिक हिन्दू-शहीदोंके स्फूर्तिप्रद आदर्श चरित्रोंका प्रभाव पड़ते देर न लगी, जिनकी रोचक कथा सोनूने अपनी कल्पनाके सहारे मनचाही रीतिसे गढ़कर एक ओजपूर्ण भाषामें उनके सामने रखी थी।

दो ही तीन दिन बाद एक दोपहरको सोनू दस-बारह वर्षके अपने ममेरे भाई भिसू और बाबलू तथा पड़ोसके अन्य बाल-श्रोताओंको एकत्रितकर शिवाजीके बचपनकी वह कहानी सुना रहा था जब उन्होंने बीजापुर शहरके मुसलमान कसाइयोंके सिर उड़ा दिये थे। श्रोतागण तल्लीन होकर सुन रहे थे और उन्हें जोश चढ़ ही रहा था कि ऐन उसी वक्त उनका हम-उम्र पावलूका पोता सान्तान दौड़ता हुआ वहाँ आ पहुँचा। कमरमें एक छोटे-से जांघियेके सिवा, जो खिसककर उसके चूतड़ों पर आ गया था, उसके बदनपर और कोई कपड़ा न था।

उसके सिरके बाल कैंचीसे तराशकर इतने बारीक कर दिये गये थे कि दूरसे वह घुटा हुआ ही दिखाई पड़ता था। एक सोनेकी जंजीरके सहारे छातीपर लटका हुआ हाथी दाँतका सफेद 'क्रास' उसके गेहुएँ शरीर पर बेहद खुल रहा था। धागेसे बँधी एक तितली हाथमें लिये वह अपने ईसाई उच्चारणोंमें मशीनकी तरह लगातार न जाने क्या बड़बड़ा रहा था। उसके ऊपर दृष्टि पड़ते ही सोनूका पारा एकदम ऊँचा चढ़ गया। अपने भाषणको वहीं समाप्त कर उसने उसपर अपनी आँखें गड़ा दीं।

परन्तु सान्तान इतनेसे डरनेवाला जीव नहीं था। हर रोज़ दोपहरको सान्तु शणैके चौकमें आकर भिसू और बावलूके साथ खेलना-कूदना और शोर मचाना वह अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझता था। वहाँ आनेपर उसे केवल एक इसी नियमका पालन करना पड़ता था कि खेल-कूदमें वह भिसू और बाबलूको छुयेगा नहीं, ताकि उन्हें नहाना और कपड़े धोना न पड़े। इस नियम-पालनका वह इतना अधिक अभ्यस्त हो गया था कि यदि खेल-कूदमें हाथापाईके एकाध अवसरको छोड़ दिया जाय तो उसने कभी इस नियमका व्यतिक्रम नहीं होने दिया था।

आज सान्तु शणैके चौकमें अपने इतने सारे हमजोलियोंको जमा देख उसे अत्यन्त प्रसन्नता हुई। अपने हाथकी सफाई दिखलाकर उन लोगोंको अपनी ओर आकर्षित करनेके इरादेसे वह तितलीको घुमाने लगा और स्वयं भी मुँहसे बैण्ड-बाजा बजाते हुए नाचने लगा!

यह देखकर सोनूके क्रोधकी सीमा न रही! 'ज़रा इस किरण्टेके बच्चेकी क्रूरता तो देखो! अभी धरतीमेंसे तो निकला ही नहीं है और लगा जीवोंका प्राण लेने! बड़ा होकर यही गौमाताके गलेपर छुरी फेरेगा! देखो, उस तितली बेचारीको कैसा तङ्ग कर रहा है! न मालूम इन ईसाई लौंडोंको हमारे घरोंमें इतनी आज़ादी क्यों दी जाती है! निकाल बाहर करो इस चाण्डालको!' सोनूने आवेशमें कहा!

भिसू, बाबलू और उनके अन्य हमजोली सान्तानकी लाई हुई तितलीको वहाँ उपस्थित सब बालकोंकी सार्वजनिक सम्पत्ति ठहरानेका विचार कर रहे थे; क्योंकि तितलियोंको पकड़ना उनका भी एक अति प्रिय कौतुक था। परन्तु सोनूके शब्दोंने नकी मति ठीकठिकाने ला दी। उनकी नसोंका हिन्दू रक्त उबलने लगा। सान्तान-

को न छूनेकी सावधानी भर रख वे सबके सब उसपर टूट पड़े। अपने साथियोंके इस अनपेक्षित आक्रमणने सान्तानको बिलकुल ही घबरा दिया और वह अपनी जान लेकर भागा। इस भाग-दौड़में वह थोड़ा-सा ध्यान चूक गया और भिसूसे टकरा गया।

'सान्तानने छू लिया! भिसूको छू लिया!' सब लड़के एक साथ चिल्ला उठे।

'आज जिसने छू लिया है वह कल लाकर तुम्हारे मुँहमें माँस भी ठूँस देगा, बेवकूफो!' सन्तप्त सोनूने उन्हें धिक्कारा।

उसके इन शब्दोंका यथेष्ट परिणाम हुआ। भिसूने लपककर सान्तानके गालपर एक तमाचा जड़ दिया। दूसरे लड़कोंने भी उसपर नारियलकी जटा, करची, खोपड़ी, ईंट-पत्थर जो कुछ हाथमें पड़ गया उसीकी बौछार कर दी। वह गालियाँ देता हुआ बेतहाशा अपने घरकी ओर भागा। विजयके मदमें चूर भिसूने उसका पीछा किया। परन्तु अपने घरकी हदमें पहुँचते ही सान्तान उलट पड़ा और पासही पड़ी हुई एक हड्डी उठाकर भिसूपर फेंक मारी। वह अपना निशाना चूक गया; हड्डी भिसूको तो न लगी परन्तु पास ही के एक कुएँमें जा गिरी।

पावलूका बगीचा और सान्तु शणैकी चहारदिवारी एक दूसरेसे मिली हुई थीं। उनके सन्धि-स्थलपर ही यह कुआँ था और दोनों पड़ोसी पीढ़ियोंसे समान मिल्कियतके रूपमें इसका उपयोग करते आये थे।

यदि हड्डी भिसूको लग जाती तो उसे स्नान करना पड़ता और बस क़िस्सा वहीं ख़त्म हो जाता; परन्तु चूंकि अब वह कुएँ में जा गिरी थी मामला तूल पकड़ गया और ज़रासेमें बातका बतङ्गड़ बन गया।

'सान्तानने कुएँमें सूअरकी हड्डी गिरा दी है!' भिसूने लौट आकर जब यह समाचार अपनी टोलीको सुनाया तो उनमें बड़ी खलबलाहट मच गई।

'ये साले किरण्टे कुएँमें हड्डियाँ और जूठन डालकर तुम्हारा धर्म बिगाड़ते रहेंगे और तुम डरपोक हिन्दू यों ही सिरपर हाथ धरे रोते बैठे रहोगे!'

सोनूने आवेशसे हाथ नचाते और अपने अनुयायियोंकी ओर तिरस्कारपूर्ण दृष्टिसे देखते हुए ताना मारा।

किंचित् लजाकर परन्तु दूसरे ही क्षण क्रोधसे दाँत पीसते और ओंठ चबाते हुए भिसू, बाबलू और कम्पनीने उत्तर दिया—"हम उस सान्तानके बच्चेको भला

ऐसे ही छोड़ने वाले हैं ? ज़रा अपने घरकी हदसे बच्चूको बाहर तो निकलने दो ? फिर देखना, सालेकी कैसी मरम्मत करते हैं...!"

'नहीं-नहीं, इतनेसे तो काम नहीं बनेगा।' सोनू बोला—कुएँमेंसे हड्डी निकालकर बाहर फेंक दी जाय तो भी दो-तीन दिन तक हम उसका पानी अपने काममें नहीं ला सकते। पास-पड़ोसके सभी कुएँ सूख गये हैं और गर्मीके इन दिनों दूरके कुओंसे पानी लाते-लाते हम लोगोंके सिर ही गंजे हो जाएँगे! उधर पावलूके घरवाले इसी कुएँको लेकर चैनकी बंसी बजाएँगे। उन्हें हमेशासे ज्यादा पानी खर्च करनेको मिलेगा। जब कि पानीकी ऐसी तंगी हो ये खुदगर्ज ईसाई बीच-बीचमें इसी तरह कुओंमें हड्डी वगैरह डालकर अपना मतलब सीधा कर लिया करेंगे। उनके हिन्दू पड़ोसी भले ही भाड़में जायँ! ऐसा हर्गिज नहीं होने दिया जायगा। जैसे को तैसा! मैं एक ऐसी तरकीब बतलाता हूँ कि जिसके करनेसे पावलूके घरवालोंकी अक्ल भी घण्टेभर में ठिकाने लग जायेगी!

सोनूकी युक्ति इतनी मज़ेदार, अनोखी और लाजवाब थी कि उसके मुँहसे निकलते ही सारी वानर सेना जानवरोंके छप्परके नीचे जा पहुँची और गोबर इकट्ठा करने लगी। बातकी बातमें गोबर इकट्ठा हो गया। उसे एक बड़ेसे टोकरेमें भरकर वानर-सेनाने कुएँपर धावा बोल दिया। सोनूका रामबाण प्रयोग आजमाया गया। सारा टोकरा कुएँमें उँड़ेल दिया गया। कुएँमें मुश्किलसे दो-तीन घड़े पानी होगा, अतः उसके अन्दर गोबरका बढ़िया शीरा तैयार होगया!

सान्तान अपने घरकी खिड़कीमें बैठा शत्रु-पक्षकी सारी काररवाई देख रहा था। अकेली भिसूके तमाचेकी ही बात होती तो अबतक उसकी वेदना भूलकर वह भिसूके यहाँ जाकर पुनः उससे दोस्ती कर लेता; परन्तु इस मारपीटमें उसकी बड़ी मेहनतसे पकड़ी हुई तितली हाथसे छूट गई थी, और उसे इतनी आसानीसे भुलाना संभव नहीं था। अतः अपने विपक्षियोंकी सारी कार्रवाइयाँ नमक-मिर्च लगाकर घरके बड़े-बूढ़ोंको सुनाने दौड़े जाना उसके लिए बिलकुलही स्वाभाविक था।

संसारकी सभी जड़ और जंगम वस्तुओंको पवित्र करने वाले गोबरपर हिन्दुओंकी कितनीही श्रद्धा क्यों न हो, ईसाई तो उसे घृणाकीही दृष्टिसे देखते हैं। पावलूके घरके स्त्री-समुदायने पड़ोसके लड़कोंकी और किसी बातपर तो विशेष ध्यान नहीं दिया परन्तु गरमीके इन दिनों जब पानीकी इस बुरी तरह तंगी थी कुएँमें गोबर

डालकर सारा पानी खराब कर देनेकी उनकी हरकत उन्हें बहुत अखरी। उस समय तो सान्तु शणै और पावलू दोनों ही घर पर नहीं थे; इसलिए उन्होंने तै किया कि उन दोनोंके घर लौट आनेपर पावलूके द्वारा सान्तु शणैको लड़कोंकी शैतानीका हाल सुनाया जाय और उन्हें सजा दिलवाई जाय!

बात सान्तु शणै और पावलू तकही रहती तो भिसू, बाबलू और सान्तानको दो-चार चांटे पड़ जाते और फूलगाँवमें सोनूके आरंभ किये हुए धर्मयुद्धका उसी साँझको अन्त हो जाता। परन्तु उसे तो कुछ और ही रूप धारण करना था।

दुर्भाग्यसे यह बात उसी दिन, दोपहरके समय सान्तानके पिता कैतानके कानोंतक पहुँची। उसके लिए 'दोपहरका समय' किस प्रकारका था, यह फूलगाँवमें सभी जानते थे। और प्रत्येक ग्रामवासी इस बातकी पूरी सावधानी रखता था कि उस समय उससे किसी भी प्रकारका कोई सम्बन्ध न आने पाये। चालीस-पैंतालीस बरसका यों बड़ीही शान्त प्रकृति और सीधे स्वभावका आदमी; परन्तु दोपहरके समय तो जैसे उसके शरीरमें अगिया-बैतालही आ घुसता था! दोपहरको भोजनके बाद जी-भरकर काजूकी शराब चढ़ा घण्टे-दो-घण्टेके लिए लेटनेका नियम उसकी नाजुक प्रकृतिके लिए अत्यावश्यक था। पिछले कितनेही वर्षोंसे वह इसका बिला नागा पालन करता आ रहा था, उस समय एक ज़रा-सी बात भी उसका सिर फिरा देनेके लिए काफी होती थी। फिर आजकी घटनाका तो कहना ही क्या?

सान्तानके मुँहसे भिसू और बाबलूकी शिकायत सुनकर और उसके गालपर भिसूकी अँगुलियोंके उभरे हुए निशान देखकर वह पागल साँड़की तरह बौखला उठा।

सोनूकी ओरसे उसका हृदय पहले ही साफ़ न था; क्योंकि उसके भाषणोंका कच्चा चिट्ठा वह पहले ही सुन चुका था। आज सान्तानके मुँहसे सारी घटना सुनकर उसे विश्वास हो गया कि इसमें सोनूका हाथ अवश्य होना चाहिए। नशेसे लाल उसकी आँखें और चेहरा मारे क्रोधके अंगारा ही हो गये। वह फुर्तीसे खाटपरसे उठा और सान्तु शणैके घरकी ओर चल पड़ा।

'अच्छा! यहाँ तक नौबत आ पहुँची? पिछले आठ दिनोंसे लगातार लेक्चर झाड़-झाड़कर ज़हर उगल रहा है! अभी बतलाये देता हूं बेटाजीको कि तुम्हारी

शहरवाली यहाँ नहीं चलनेकी !' यों मन-ही-मन गुस्सेसे बड़बड़ाते हुए बाग़से गुजरते समय उसने अमरूदकी एक टहनी तोड़कर हाथमें लेली।

वह ठेठ सान्तु शर्णेके आँगनमें जा खड़ा हुआ और पुतलियाँ नचाकर दाँत पीसते हुए बोला—क्योंरे पाजी ! यह तूने क्या ऊधम मचा रखा है। कैतानके आगे कोई शरारत नहीं चलेगी ! कान उखाड़कर हाथमें ही दे दूँगा ! समझा ! कुएँमें गोबर डालनेके लिए तूने लड़कोंको क्यों उकसाया था रे ?

'पड़ोसी राम, सुनिये !' सोनूने शान्त भावसे बड़े-बूढ़ेकी तरह गंभीरतापूर्वक कहा—आपके सुपुत्रने कुएँमें हड्डी डालकर सारा पानी अपवित्र कर दिया था। आप यह तो जानते ही हैं कि हिन्दू-धर्मानुसार किसी भी अपवित्र वस्तुको शुद्ध करनेके लिए हम गोबरका उपयोग करते हैं। कुएँमें गोबर डालनेका कारण अब आपकी समझमें आगया होगा !

सोनूका यह अनुमान कि उसके इस तर्क-संगत उत्तरके आगे कैतान निरुत्तर हो जायगा, ग़लत साबित हुआ। वह तो और ज़ोरसे गला फाड़कर चिल्लाया—अभी कलका लौंडा आया है मुझे धर्म सिखाने ! कुएँमें गोबर डालकर उसे शुद्ध करेगा, हुँ ह् ! मैं कोई दूध-मुँहा बच्चा तो हूँ नहीं जो तेरी इन चालबाजियोंमें आ जाऊँगा ! गधा कहींका !'

'अजी महात्मन्, कुमारी मरियमके पेटसे ईसाके जन्म लेनेकी बातपर तो आप विश्वास कर लेते हैं और हमारे धर्मकी इस बातको झूठ समझते हैं ? अच्छा, अब कृपाकरके अपने घर जाइये और नशा उतरनेपर यहाँ तशरीफ लाइये। उस समय मैं आपको हिन्दू-धर्मशास्त्र अच्छी तरह समझा दूँगा। जाइये, तकलीफ होती होगी, पधारिये !'

मर्मपर चोट पहुँचानेके इरादेसे कहे हुए सोनूके इन शब्दोंके समाप्त होते-न-होते कैतानके हाथकी छड़ी उसकी पीठपर बरसने लगी ! सोनूने अपनी जबानसे आत्मरक्षा करनेका प्रयत्न किया, परन्तु व्यर्थ ! लगातार पाँच-छः मिनट तक कैतानका हाथ उसी गतिसे चलता रहा और अन्तमें उसने अपने घरका रास्ता लिया !

* * * *

पहले कारण और फिर कार्य ! यदि कार्यके वास्तविक स्वरूपको जानना हो, तो उसके कारणको समझना आवश्यक हो जाता है। परन्तु कई बार सामने दिखाई देनेवाला कार्य ही आदमीके मनको इतना अभिभूत कर लेता है कि उसके कारणपर निष्पक्षरूपसे विचार करनेके लिए जिस समतौलताकी आवश्यकता होती है उसका वहाँ नितान्त अभाव हो जाता है। मानव-जीवनमें अधिकांश दुर्घटनाओंकी जड़ यही ग़लती है।

उस दिन सान्तु शणै और पावलू-द-साके बारेमें भी ठीक यही हुआ। साँझके समय जैसे ही सान्तु शणैने घरमें पाँव रखा कि घरवालोंने नमक-मिर्च लगाकर कहना शुरू किया—'आज दुपहरको कैतानने शराबके नशेमें 'बिना किसी कारणके' सोनूको बड़ी बेरहमीसे पीटा' आदि। सुनतेही सान्तु शणैका हृदय सन्तप्त हो उठा। इकलौता नाती ! वर्षों बाद ननिहाल आये ! और उसकी यह दशा देखकर किस नानाका हृदय सन्तप्त न हो उठेगा ? अपनी ऐसी मनःस्थितिमें उसने कारण जाननेका जो प्रयत्न किया उसका पक्षपातपूर्ण और अधूरा होना स्वभाविक ही है। फिर घरवालोंको भी सारी घटना विस्तारपूर्वक और अपने असली रूपमें बतलानेकी सुध कहाँ रही होगी ?

'पिछली चार पीढ़ियोंसे हम दोनों परिवारोंके बीच जो घरोपा चला आ रहा है उसे पावलूके बाद यह शराबी कैतान बनाये रखेगा, ऐसा नहीं दिखाई देता। आज यह अनहोनी घटना हो ही गई ! अब समय रहते ही सावधान हो जाना चाहिये और आपसी सम्बन्धोंको समाप्त कर देना चाहिये ताकि भविष्यमें फिर कभी ऐसा कोई प्रसङ्ग न आने पावे।' सान्तु शणैने एक क्षुब्ध और थकी हुई आवाज़में कहा।

उधर पावलूको भी सारी घटनाका एकतर्फा हाल बताया गया कि किस तरह सोनूने गाँवके सब हिन्दू लड़कोंको बहकाकर सान्तानको पिटवाया, कुएँमें गोबर डलवाया, कैतानको शराबी कहकर गाली दी और भगवान् ईसा तथा कुमारी मरियमकी निन्दा की ! उसे भी आगबबूला होते देर न लगी ! वह सान्तु शणैको उसके नातीकी करतूतोंका कच्चा चिट्ठा बतलाने जब घरसे निकला तो दोनोंकी मनोदशा यकसाँ थी। दोनोही पागल हो रहे थे। इसलिए शान्तिसे बातें हो सकना असंभव था। जरा-सी देरमें विवाद बढ़ गया। एक ग़लतफहमीने दूसरी

ग़लतफ़हमी पैदा की और यों बातकी बातमें मामला तूल पकड़ गया। अन्तमें तो नौबत यहाँतक पहुँची कि 'मैं अब आगेसे कभी तेरे दर्वाज़ेपर थूकने भी नहीं आऊँगा।' कहकर पावलू गुस्सेमें भरा घर लौट आया।

आज कितनेही वर्षोंसे इन दोनों पड़ोसियोंमें एक गहरी आत्मीयता चली आ रही थी! खेती-बाड़ी और घर-गिरस्तीका कोई विकट प्रसंग आ पड़ता तो पावलू सान्तु शणैकी सलाहके बिना कुछ न करता था। और हाट-बाज़ार, कोर्ट-कचहरी या सरकारी-दरबारी मामला आते ही सान्तु शणै वह सब अपने पड़ोसी पावलूपर छोड़कर निश्चिन्त हो जाता था। दोनोंका आपसमें एक दूसरेपर इतना अधिक विश्वास था कि घरके स्त्री-बच्चोंको छोड़कर यदि पुरुषोंको कहीं दो-चार रातके लिए बाहर जाना पड़ता तो 'ज़रा, बाल-बच्चोंको देखते रहना' कहने-भरसेही वे आश्वस्त होकर घरसे जा सकते थे! सान्तु शणैके घरकी स्त्रियों और लड़कियोंका पावलूके यहाँ कुर्ता-टोपी सीने, कतरने-ब्योंतने, फूलोंकी वेणी गुँथने, बुनाई, कढ़ाई, कसीदा वग़ैरह सीखने; और पावलूके घरकी स्त्रियोंका सान्तु शणैके यहाँ अचार-मुरब्बे बनवाने, पापड़ बेलने, सेवय्याँ बनाने, घरकी बड़ी-बूढ़ीसे बच्चोंके लिए घुट्टियाँ पूछने, दवाई लाने आदि घर-गिरस्तीके बीसियों कामोंके लिए रोज ही आना-जाना लगा रहता था! साँझको बंसी लेकर नदीपर जाना और रातकी कढ़ीके लिए मछलियाँ पकड़ना कैतानका प्रतिदिनका काम था। परन्तु मछली पकड़कर लौटते समय जब वह सान्तु शणैके घरके आगे होकर गुजरता था तो भिसू और बाबलूको बुलाकर उनके हाथपर दो-चार मछलियाँ रख देना भी कभी नहीं भूलता था। हर दूसरे-तीसरे दिन पावलूके बग़ीचेसे चम्पा और सेवतीसे भरी डलिया तथा अमरूद, शरीफे या पपीते सान्तु शणैके घर पहुँच ही जाया करते थे। उसी तरह सान्तु शणैके घर त्यौहारोंके दिन बननेवाले मिष्टान्नों और पक्वान्नोंमें उसके ईसाई पड़ोसीका हिस्सा धरा-धराया था। दोनों घरोंके बालकोंकी मैत्रीका तो कहना ही क्या! एक दूसरेके यहाँ खेलती, आस-पासके वृक्षोंपर पक्षियोंके घोंसले ढूँढ़ती, समीपकी पहाड़ीपर काजू और करौंदेकी लूट-खसोट मचाती भिसू, बाबलू और सान्तानकी त्रिमूर्ति सदा साथ ही दिखाई देती थी!

परन्तु इतने दिनोंसे मिल-जुलकर प्रेमपूर्वक रहते आये इन दोनों पड़ोसियोंके आपसी सम्बन्ध अब बिलकुल ही बदल गये थे। एक ही दिनमें उन लोगोंका

बोलना-चालना, आना-जाना, लेना-देना सबका सब एकदम बन्द हो गया। भिसू, बाबलू और सान्तानमें अभीतक थोड़ा-सा पारस्परिक संबंध बाक़ी था; और वह अपने-अपने घरोंकी सीमासे एक दूसरेको अँगूठा दिखाने, जीभ निकालकर चिढ़ाने और गाली देनेतक ही सीमित था। इस साल गणेश-चतुर्थी और दूसरे भी दो-एक त्यौहार बीत गये परन्तु पावलूके यहाँसे प्रतिवर्षकी भाँति फूलोंकी भेंट न आई। उधर पावलूके यहाँ भी बड़े दिनका उत्सव हो गया परन्तु सन्त सैबाश्चियनकी मूर्तिके आगे जलानेको हर सालकी तरह सान्तु शणैके घरसे मोमबत्तियोंकी भेंट न आई। इतना ही नहीं अब आये दिन इन दोनों पड़ोसियोंमें ज़रा-ज़रासी बातको लेकर टंटे-बखेड़े भी होने लगे। आज दिनतक पावलूके घरके सूअर और मुर्गियाँ शायद ही कभी अपनी हद छोड़ते थे; परन्तु अब तो जैसे उन्होंने सान्तु शणैके बरामदेमें घुसकर उसके घरके बर्तन-भाँडे और कपड़े-लत्ते खराब करनेका बीड़ा ही उठा लिया था। और मानों इसका बदला ही चुकानेके लिए सान्तु शणैकी गाय-भैंसे अक्सर पावलूके बाग़में घुसकर केला आदि वृक्षोंको तहस-नहस कर आने लगीं। एक ओर सान्तु शणैके घरकी जूठी पत्तलें और कूड़ा-कर्कट पावलूके चबूतरेके सामने घूरेके रूपमें जमा होने लगा और परिणामस्वरूप दूसरी ओर पावलूके घरका उच्छिष्ट हड्डी, माँस ओर अंडेके छिलकेके रूपमें सान्तु शणैके घरके सामने दिखाई देने लगा। अन्तमें मामला यहाँ तक बढ़ गया कि एक दिन ऐसी ही किसी घटनासे खीझ कर सान्तु शणैने पावलू-द-सापर नालिश ठोक दी।

सान्तु बाबा और पावलू दोनों ही अपने-अपने समाजके प्रमुख नेता थे। उनके इस आपसी झगड़ेमें गाँवकी दोनों जातियोंके लोगोंने अपने-अपने नेताओंका ही पक्ष लिया और इसके परिणामस्वरूप सारा फूलगाँव हिन्दू और ईसाइयोंकी अलग-अलग ऐसी दो पार्टियोंमें बँट गया, जिसकी पहले कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था।

इस बीच सोनू भी ननिहालसे अपने घर जा चुका था। उसने गोवाके एक साप्ताहिकमें 'परशुराम-भूमिमें पुण्यपर्व' नामक जो लेखमाला लिखना शुरू की थी उसके पहले छः कॉलम भी ठीक इसी समय प्रकाशित हुए। समस्त भरतखण्डको परिचित करानेके इरादेसे इन कॉलमोंके द्वारा उसने आर्य-संस्कृतिके

उद्धारार्थ फूलगाँवके हिन्दुओंकी वीरतापूर्ण जाग्रतिके रोमांचकारी शुभ-सन्देशकी घोषणा की थी।

*   *   *   *

गोवामें उस साल स्थान-स्थान पर जो भयंकर बाढ़ आई थी उसे लोग अभी तक नहीं भूले। गोवाके किसी गाँवमें उसकी चर्चा चलते ही लोग-बाग ढह जानेवले घरों, बहकर चले जानेवाले जानवरों, नष्ट हुई खेती-बाड़ी और बाग-बगीचों, दुर्घटनाओंके शिकार होकर प्राण-गँवानेवाले मनुष्यों और सम्पत्तिके विनाशकी कभी न समाप्त होनेवाली दुःखदाई वार्ता सुनाने बैठ जाएँगे। परन्तु यह एक बड़ी ही अनोखी बात है कि यदि उसी बाढ़की चर्चा फूलगाँवके किसी निवासीके आगे चलाई जाय तो वह प्रफुल्लित होता हुआ एक बिलकुल ही निराले ढंगका क़िस्सा सुनाएगा।

अन्य गाँवोंकी भाँति फूलगाँवको भी उस बाढ़से काफ़ी हानि उठाना पड़ी; परन्तु फिर भी वहाँवाले उसे एक ईश्वरीय वरदानके रूपमें ही मानते हैं, क्योंकि उसमें उनकी कभी न टल सकनेवाली एक महान् विपत्ति बड़ी ही आसानीसे टल गई।

फूलगाँव जैसे नदी-किनारे बसे हुए गाँवके लिए हर दूसरे-तीसरे साल बाढ़का आजाना और गाँवके एक हिस्सेको जलमग्न कर देना कोई नई बात नहीं थी। उस साल मृग नक्षत्र लगते ही जब पूरे चार दिन तक पानीकी झड़ी लग गई तो गाँववालोंको बिलकुल ही चिन्ता न हुई। परन्तु पाँचवें दिन बाढ़का भयंकर रूप देखकर उनके होश-हवास ही गुम हो गये।

निश्चिन्त होकर सोया हुआ सारा गाँव आधी रातको हड़बड़ाकर उठ बैठा। बाढ़में बहकर चले जानेवाले सूअरों, गाय-बैलों, मुर्गियों आदि पालतू पशुओंका करुण-क्रन्दन सुनाई दे रहा था! बीच-बीचमें धमाकेसे कोई घर भी गिर पड़ता था। बाढ़ और उसमें बहकर चली आनेवाली असंख्य छोटी-बड़ी चीज़ोंका भीषण नाद प्रतिक्षण बढ़ रहा था। आत्म-रक्षाके लिए लोगोंकी दौड़-धूप शुरू हुई। कई लोग जानपर खेलकर अपनी मूल्यवान् सम्पत्ति बचाने लगे। कइयोंको प्राण-रक्षाके लिए अपना घर-द्वार छोड़कर दूसरोंके मज़बूत घरों और वृक्षों तकका सहारा लेना पड़ा!

इस भयङ्कर मुसीबतके समय अन्य ग्रामवासियोंको पावलू-द-सा और शान्तु शणैसे ईर्ष्या होने लगी। उन दोनों पड़ोसियोंके मकान गाँवके किनारे एक ऊँचे

टीलेपर थे। लोगोंका विश्वास था कि बाढ़का पानी वहाँ तक पहुँच नहीं सकता! चालीस वर्ष पहले जो भयंकर बाढ़ आई थी उसने लोगोंके इस विश्वासकी पुष्टि कर दी थी।

पावलू-द-सा और सान्तु शणैको भी पूर्ण विश्वास था कि बाढ़का पानी उनके मकानोंको किसी तरहकी हानि नहीं पहुँचा सकता। और वे पूर्ण रूपेण सुरक्षित हैं। परन्तु शीघ्र ही उनका यह विश्वास डिग गया। यह बाढ़ चालीस वर्ष पूर्वकी अपनी पूर्ववर्ती बाढ़से कहीं अधिक भयंकर थी! पौ फटते-फटते इन दोनोंके घरोंमें भी पानी चढ़ने लगा। पावलूके खास घरसे थोड़ी ही दूर नीचेकी ओर जो गोड़ा था वह तो पहले ही बह गया था और उन्हें सवेरा होने तक इसका पता न लगा! बढ़ते हुए पानीके साथ ही दोनों घरोंके लोगोंकी चिन्ता भी बढ़ने लगी! देखते-ही-देखते दोनों घरोंके नीचेका हिस्सा जलमग्न होगया और परिवारके लोगोंको ऊपरकी मंज़िलका आश्रय लेना पड़ा! सान्तु बाबाने महामृत्युंजयकी मनौती मानी और पावलूने भी सन्त फ्रान्सिस कॉन्वेण्टमें एक प्रार्थनोत्सव करनेकी मनौती ली!

सौभाग्यसे पानीका बढ़ना तो बन्द होगया, परन्तु उसके उतरनेका कोई चिन्ह दिखाई नहीं देता था! सान्तु शणैके घरवालोंको तो कोई चिन्ता नहीं थी क्योंकि खाने-पीनेका सभी सामान उन लोगोंके पास था; परन्तु यदि पानी जल्दी ही न उतर जाय तो पावलू-द-साके घरवालोंकी पूरी मुसीबत थी! गोड़ा न केवल उनका रसोई-घर अपितु भाण्डार-गृह भी था। वे अपने खाने-पीनेकी सब वस्तुएँ वहीं रखते थे। जब वही बह गया तो सिवा भूखों मरनेके उनके सामने और कोई चारा नहीं था। इस समय यदि वह चाहते तो सान्तु शणैके वहाँसे अपनी अन्न-सम्बन्धी आवश्यकता पूरी कर सकते थे; परन्तु न तो पावलूका अभिमान उसे अपने पड़ोसीके यहाँ हाथ पसारनेकी इजाजत देता था और न सान्तु शणैमें ही इतनी उदारता थी कि वह स्वयं होकर अपने आपद्ग्रस्त पड़ोसीकी सहायता करता! दोनों ही बातें इसलिए असंभव थीं कि अभी दो ही दिन पूर्व गवाहोंके बयानोंके बाद मौक़ा देखनेके लिए दिन मुक़र्रर होने तक उनका मुक़दमा बढ़ आया था!

फिर जबतक बाढ़का पानी उतर न जाता गाँववालोंसे भी खाद्य-सामग्री प्राप्त करना असंभव ही था। क्योंकि गाँवके बीचमें होकर बहनेवाली उस नदीमें एक मोड़ था। केवल सान्तु शणै और पावलू-द-साके मकान मोड़के इस ओर थे और सारा

गाँव मोड़के उस ओर था। यह मोड़ ऐसी बेतुकी जगह था कि नदीका पानी ज़रा-सा बढ़ते ही मोड़की जगह भँवर नज़र आने लगते थे। फिर इस समय तो नदीमें भयंकर बाढ़ आई हुई थी! भँवरकी परिधि और वेगका पूछना ही क्या? पहलेकी बाढ़ोंमें कई आदमी इस भँवरमें फँसकर अपने प्राण गँवा चुके थे; इसलिए गाँववालोंका ऐसा विश्वास हो चला था कि भँवरमें अवश्य ही किसी प्रेतका निवास है। इसी अन्धविश्वासके कारण गाँवके मछुए वहाँ प्रति वर्ष मुर्गोंकी बलि चढ़ाया करते थे। ऐसी परिस्थितिमें न तो पावलू या उसका लड़का कैतान ही भँवरको पारकर उस ओर जा सकता था और न उधरसे ही कोई आ सकता था। भँवरको तैरकर या नावसे पार करनेकी हिम्मत करना किसीके भी मन खतरेसे खाली नहीं था!

पावलू-परिवारके लिए अब केवल इसी आशाका सहारा शेष था कि बाढ़का पानी उतर जानेके बाद शीघ्र ही अन्य लोगोंसे सम्पर्क स्थापित किया जा सकेगा और इस विपत्तिसे उनका छुटकारा हो जायगा।

वह सारा दिन और पूरा दूसरा दिन भी बीत गया! परन्तु पानी इञ्चभर भी कम न हुआ! उलटे बीच-बीचमें मूसलाधार वर्षा होने लगती और पानी कुछ बढ़ता हुआ ही दिखाई देता था! दो दिनके लगातार उपवासोंने जब पावलू-परिवारके बड़े आदमियोंके ही प्राण व्याकुल कर दिये थे तो सान्तान आदि छोटे बच्चोंका तो कहना ही क्या? वे अबोध बालक भूखकी असह्य वेदनाके मारे विवश होकर इतने जोर-शोरसे चिल्लाने लगे कि उनकी चीख़-पुकारकी आवाज़ सान्तु शणैके घरतक सुनाई देने लगी!

दूसरा दिन बीत गया और रात आ लगी। भोजनके लिए बच्चोंकी चीख़-पुकार उसी प्रकार जारी थी। उनकी ऐसी दशा देखकर बड़ोंकी छातियाँ भी फटने लगीं।

कैतानकी बूढ़ी माँ बेचारी खिड़कीके पास बैठी बाहरके पानीको टक लगाये देख रही थी! उसकी आँखोंसे आँसू बह रहे थे। वह बिना रुके 'हे पिता ईसा! हे माता मरियम!' का जप कर रही थी और रह-रहकर अपने शरीरपर भक्तिपूर्वक क्रॉस भी बनाती जाती थी।

कि अचानक उसे आशा की एक क्षीण किरण दिखाई दी। कैतानको पुकारकर वह आशा भरे स्वरमें कहने लगी—वह देखो! सान्तु शणैके घरके पिछवाड़ेवाले

कटहलमें सफेद रंगकी कोई चीज़ अटकी हुई दिखाई देती है। बहुत करके वह हमारे रसोई घरका बेंतका पिटारा होगा। यदि वही हो तो समझना चाहिये कि पिता ईसाने हमारी पुकार सुन ली। परसों रातको मैंने उसमें अगले दिन सूअरोंको खिलानेके लिए कुछ बासी पावरोटियाँ रख दी थीं। पानीमें भीगी और बासी होनेपर भी यदि वे पावरोटियाँ हमारे हाथ लग जायँ तो किसी तरह पेटकी आग तो बुझे ! !

उसके मुँहसे बात निकलनेकी देर थी कि कैतान पानीमें कूद पड़ा और तीरकी तरह उस वृक्षकी ओर तैरता हुआ बढ़ा। सब लोग उस ओर आँख गड़ाये देखने लगे कि देखें, वह क्या लेकर आता है।

परन्तु आखिर निराशा ही उनके हिस्से पड़ी। जल्दी-जल्दी पानीको चीरता हुआ कैतान खाली हाथ ही लौट आया। बिना दम लिये हाँफते-हाँफते ही वह बोला—मैं उस पिटारे तक गया ही नहीं !

उसकी माने अधीर होकर पूछा—क्यों ?

'यह क्या दादा ! हमें कितनी ज़ोरकी भूख लग रही है ! जल्दीसे वह पिटारा ले आओ न !' सान्तानने भी रोते-रोते कहा।

'हमसे भी ज्यादा संकट सान्तु शणैके घरवालोंपर आ पड़ा है ! उस पिटारेकी ओर जाते हुए मैंने उनकी पिछली दिवालके बाहरी हिस्सेको गलकर पानीमें गिरते हुए दो-एक बार सुना। अन्धेरेके कारण साफ दिखलाई नहीं दिया, इसलिए मैं ज़रा दिवालके पास तक गया। क्या देखता हूँ कि सारी दिवाल फूल गई है और उसके बीचोबीच एक बड़ा-सा सूराख हो गया है। कौन जाने कब वह दिवाल छप्पर सहित बैठ जाय, और उन बेचारोंको तो इसकी कल्पना तक न होगी ! उन्हें इस तरहकी प्राणान्तक विपत्तिमें फँसे देख मैंने पिटारे तक जाकर समय गँवाना उचित न समझा और मैं तुरन्त लौट आया। अब मेरी समझसे तो उन्हें शीघ्रतापूर्वक इस आफतकी सूचना देना चाहिये और उन सब लोगोंको हमारे यहाँ आकर रहनेके लिए भी कहना चाहिये।

'अवश्य ! ऐसे मौकेपर हमें अपना पिछला वैर-भाव बिलकुल ही भूल जाना चाहिये !' उसकी माने अनुकम्पाभरे स्वरमें कहा।

पावलूने भी आपनी पत्नीके कथनका ही समर्थन किया।

तुरन्त दोनों बाप-बेटोंने मिलकर कुछ लकड़ियों और तख्तोंको जोड़जाड़कर एक बेड़ा तैयार किया और कैतान उसे खेता हुआ सान्तु शणैके घरकी ओर ले चला।

उधर ठीक उसी समय अपने बेटे-पोतोंको भोजन परोसते हुए सान्तु शणैसे उसकी पत्नी कह रही थी—सुनते हो? राम जाने, बेचारे पावलूके बेटे-पोतोंके भूखके मारे क्या भोग हुए होंगे! ऐसी मुसीबत दुष्मनपर भी न पड़े। और ऐसी बखत आपसी लड़ाई-झगड़ोंपर भी क्या ध्यान देना? अगर ऐसे मौकेपर भी हम पड़ोसी-धर्मका पालन नहीं करेंगे तो भगवान्के सामने कौन मुँह लेकर जाएँगे?

'उनकी सहायता करनेसे मैं इन्कार ही कब करता हूँ? कलसे ही रह-रहकर मेरे मनमें आ रहा है कि एक टोकरीमें उन सबके लिए खाने-पीनेका सामान भरकर उनके यहाँ पहुँचा आऊँ। परन्तु वह पावलू भी गजबका गुस्सैल है। डरता हूँ कहीं ऐसे वक्त भी कुछ अनापशनाप बककर मुझे झिड़क न दे!' सान्तु शणैने अपराधीकी तरह कहा।

'वह कैसा ही क्यों न हो! परन्तु यह टोकरी तो उनके यहाँ अभी पहुँचाना ही होगी।' दाल-भातसे भरी दो हँड़ियाँ एक टोकरीमें रखकर उसे सान्तु शणैको देते हुए उसकी पत्नीने कहा।

अपनी धोतीका काछा मारकर, एक हाथमें टोकरी पकड़े सान्तु शणै तुरन्त पानीमें उतर गया।

दो मिनट बाद दोनों घरोंके बीचमें सान्तु शणै और कैतान जब एक दूसरेसे मिले तो उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ।

'किधर चले?' कैतानने पूछा।

'तुम्हारी ही तरफ़। बच्चोंके लिए थोड़ा दाल-भात लाया हूँ। तुम लोग भी अजीब हो! दो दिनसे लड़कोंको भूखों मार डाला, परन्तु हमारे यहाँसे खाने-पीनेको कुछ न मँगाया! इतने पराये हो गये हम?'

'अच्छा, छोड़ो इन बातोंको तो' किंचित शरमाकर परन्तु कृतज्ञताभरे स्वरमें कैतानने कहा—और सबसे पहले अपने घरवालोंको इस बेड़ेके द्वारा हमारे यहाँ पहुँचाओ! एक मिनटकी भी देर खतरनाक है। तुम्हारे घरकी पिछली दीवाल पूरी

फूल गई है और किसी भी क्षण बैठ जा सकती है। शायद तुम्हें इसका पता ही नहीं !

सान्तु शणै तेज़ीसे उस ओर मुड़ा, फुर्तीसे पानी चीरता हुआ वह दीवालके पास पहुँचा और अपनी आँखों दीवालकी दशा देखी। कैतानकी बात सोलह आने सच थी। सान्तु शणैकी छाती धड़कने लगी। विष्णु-सहस्र-नामका पाठ करता हुआ वह कछुएकी तेज़ीसे अपने घर पहुँचा।

पाँच मिनट बाद जब कैतानकी सहायतासे बेड़े द्वारा वह अपने घरके सब लोगोंको पावलूके यहाँ सुरक्षित पहुँचा चुका, तब कहीं उसके जीमें जी आया।

बेड़ेके अन्तिम चक्करमें सान्तु शणैके घरकी सारी खाद्य-सामग्री भी पावलूके यहाँ पहुँचा दी गई।

इसके कोई पाँच-छः मिनट बाद एक ज़ोरका धड़ाका सुनाई दिया। और सान्तु शणैके घरकी दीवाल छप्पर सहित नीचे बैठ गई !

उस समय पावलूके घरके बच्चे लपक-लपककर दाल-भातपर हाथ मार रहे थे और सान्तु शणैकी पत्नी पावलूके घरके आदमियोंको भोजन परोसनेमें व्यस्त थी।

पानीमें तैरते हुए अपने घरके छप्परकी ओर साश्रु नयन देखते हुए सान्तु शणैने कृतज्ञतापूर्वक कहा—और सब बातोंसे पड़ोसी-धर्म ही श्रेष्ठ रहा, क्यों पावलू ?

'हाँ, बिरादर ! Ama a teu pro'ximo como a ti mesmo ! (अपने ही इतना अपने पड़ोसीको प्रेम कर!) प्रभु ईसाकी भी यही आज्ञा है !' पावलूने भी भरे हुए गलेसे कहा !

पिछले दो-तीन महीनोंसे इन दोनों पड़ोसियोंके दिलोंपर ईर्ष्याकी जो कालिमा छा गई थी उसे इस बाढ़ने धो बहाया था ! साथ ही फूलगाँवमें बसनेवाले हिन्दू और ईसाइयोंके बीच जो द्वेषाग्नि भड़क उठी थी उसे भी इस बाढ़ने सदाके लिए बुझा दिया।

फूलगाँवकी स्थितिके परिवर्तनका यह समाचार जब सोनूके कानों तक पहुँचा तो समाचार पत्रोंमें प्रकाशित हो रही उसकी लेखमाला भी फल्गुमें गुप्त हो जाने-वाली गंगाकी धाराकी तरह अचानक लुप्त हो गई !

ताम्रपत्र

ताम्रपत्र

लगभग आधा-पौन घण्टा तेज़ीसे चलनेके बाद चढ़ाई समाप्त हो गई और मंगेशराव ठीक पहाड़ीकी चोटीपर पहुँच गये। अब सामने उतार था। उसे देखते ही उनके जीमें जी आया! पहर दिन चढ़ा होगा। सूरजकी किरणें अभी स्निग्ध ही थीं। परन्तु दो-ढाई घण्टेकी कठिन चढ़ाईके कारण पसीनेसे तर मंगेशरावके शरीरको वे किरणें बहुत ही तेज़ लग रही थीं। रास्तेके किनारे-किनारे लाल-पीले फलोंसे लदी काजूकी हरित-पल्लवित वृक्षराजि खड़ी थी। उनकी शीतल छायाके नीचे बैठ रूमालसे पसीना पोंछते हुए उन्होंने सामनेकी घाटीकी ओर अपनी दृष्टि डाली। घनी झाड़ियों तथा नारियल और सुपारीके बग़ीचोंमें छिप जानेके कारण घाटीके बीचमें बसा हुआ गाँव तो वहाँसे दिखाई नहीं पड़ता था; परन्तु गाँवके देवमन्दिरका ऊँचा कलश और उससे भी ऊँचे दीपस्तम्भका एक अंश किसी [illegible] भी वहाँ गाँव होनेका आभास देते खड़े थे। इसलिए वह कलश और दीपस्तंभ दीखते ही मंगेशरावने आश्वस्त होकर अपने आपसे कहा—यही है बाबासाहब देशपाण्डेका गाँव! फिर मंज़िल तै करनेके इरादेसे उठे और एक ओरको झुक आये अपने फेंटेको ठीकसे सँवारा। उसके बाद हाथकी छड़ीसे काजूकी एक डाली झुकाकर चार-पाँच फल तोड़े और उनका रस पीकर सन्तोषकी एक साँस ली; और तब घाटीसे उतरना शुरू किया।

दस-पन्द्रह मिनटमें उतार समाप्तकर वह गाँवके किनारे आ लगे। वहाँसे एक विस्तृत तालाबके चारों ओर नारियल, सुपारी और केलेके कुंजोंमें छिपे हुए छोटे-छोटे घरोंवाला गाँव बिलकुलही साफ दिखाई देता था। गाँवकी दक्षिण

सीमापर स्थित ऊँची पहाड़ियोंसे गिरकर गाँवके तालाबमें मिलनेवाला झरना और उत्तरकी ओर प्रचण्ड गर्जना करती हुई बही जाती खारे पानीकी नदी और गाँवका अन्य मनोरम प्राकृतिक दृश्य देखकर मंगेशरावके नेत्र वहीं स्थिर हो गये।

उस छोटेसे गाँवके प्राकृतिक सौंदर्यने उनके अन्तःकरणको प्रफुल्लित कर दिया! वह क्षणभरके लिए वहीं ठिठककर उसे निहारने लगे कि उसी समय उनके कानोंमें एक देहाती स्वर सुनाई दिया—कितेसे आवुत हो?

उन्होंने आगे झुककर इधर-उधर देखा, पर कहीं कोई नहीं दिखाई दिया! थोड़ी देर बाद फिर उसी स्वरमें सुनाई दिया—गाँवकी ओर इतने ग़ौरसे क्या देखते हो? पाँच सालसे उजड़ा पड़ा है यह!

आवाज़का अनुसरणकर उन्होंने जो दृष्टि बाईं ओरको उठाई तो एक पीपलके वृक्षपर जाकर रूक गई! उसकी शाखापर एक बूढ़ा कुनबी बैठा था और पीपलकी कोमल टहनियाँ तोड़कर वृक्षकी जड़के पास बैठी हुई एक अस्थिशेष (हड़ैली) गायके आगे डाल रहा था।

कुतूहलसे उसकी ओर देखते हुए मंगेशराव सोचने लगे कि इसकी बातका अर्थ क्या हो सकता है! पर उनकी समझमें कुछ न आया। अन्तमें उन्होंने यह कहकर अपने मनका तो समाधान कर लिया कि होगा कोई पागल! बर्रा गया होगा कुछ! परन्तु साथही उसे उत्तर देनेके इरादेसे बोले—

'वाह जी, वाह! यह क्या अण्ट-शण्ट चिल्लाते हो तुम! कितना सुन्दर है तुम्हारा गाँव! इसे देखते ही मेरी तो भूख-प्यास हवा हो गई! और इतना सुन्दर और विशाल यह तालाब!"

'अरे शैतान, तालाब देखकर ही तेरी भूख-प्यास हवा हो गई है? होना ही चाहिये! जिस तालाबकी वजहसे हम मारे भूखके तिलमिलाते हों उसे देखकर, दूसरोंके दुःखसे सुखी होनेवाले तुम लोग आनन्दित क्यों न होंगे? तुझ जैसे शनीचरकी नज़र लग जानेसे ही तो हमारा यह हरा-भरा गाँव मिट्टीमें मिल गया! और ऐसी बातें कहकर जलेपर नमक छिड़कता है! भगवान् कभी तुझे माफ़ नहीं करेंगे! ऊपरसे कहता है, कितना सुन्दर तालाब!' अत्यन्त क्रुद्ध होकर घृणाव्यंजित स्वरमें बूढ़ेने भौंहें सिकोड़कर कहा। उसकी गर्दन काँप

रही थी ! वह एक हाथसे टहनी पकड़े था और दूसरा हाथ आवेशमें आकर नचाने लगा था ।

मंगेशराव इस अनपेक्षित वाक्प्रहारके आगे क्षणभरके लिए तो स्तब्ध ही रह गये ! फिर कुछ सोचकर स्निग्ध स्वरमें बोले—भले आदमी, मुझपर व्यर्थ ही गुस्सा क्यों होता है ? मैं तो बीस वर्षोंके बाद आज बम्बईसे गोवा आया हूँ । और तेरे इस गाँवमें तो अपनी सारी जिन्दगीमें यह पहली मर्तबा ही आ रहा हूँ ! फिर भला मुझे क्या मालूम कि इस तालावका क्या झगड़ा है ? अनजाने ही मेरे शब्दोंसे तुझे चोट पहुँची हो तो माफ़ करना ! मेरा इरादा तुझे दुःख पहुँचानेका तो कभी था ही नहीं !

बूढ़ेको जितनी तेज़ीसे गुस्सा आया था उतनी ही तेज़ीसे, यह सुनकर उतर भी गया !

'सचमुच तुम्हें नहीं मालूम ? तब तो मैंने नाहक ही आपको बुरे शब्द कहे । माफ़ करना साहब ! हम ठहरे गँवार आदमी ! और तिसपर इधर परेशानियोंकी मारने तो मति ही हर ली। गुस्सेमें कुछ सुध ही नहीं रही । और मुँहसे कुछका कुछ निकल गया ! आइये, आपको सारा किस्सा सुनाता हूँ ।' वह पीपलसे नीचे उतर आया और मंगेशरावसे थोड़ा ही दूरपर विनयपूर्वक खड़े होकर दीन-स्वरमें कहने लगा—

'मेरी उमर चार-बीसीके क़रीब होने आई । पाँच बरस कम होंगे या ज्यादा । परन्तु अपनी सारी उमरमें मैंने ऐसे बुरे दिन नहीं देखे । इस गाँवके हम सब कुनबी लोग चैनसे रहते आये । यों आजसे कोई दो बीसी बरस पहले एक बार टिड्डियोंका हमला भी हुआ था । वह ऐसा ज़बर्दस्त हमला था कि सारा आसमान उनसे काला हो गया था । ऐसा लगता था मानो एक काला बादल ही उड़ा चला जा रहा हो ! उस साल टिड्डियोंने गाँवमें एक भी हरा पत्ता न छोड़ा ! हमारी सालभरकी मेहनत चौपट हो गई ! खानेको एक निवाला धान भी न बचा ! तो भी हमें आजके जितनी मुसीबत न उठाना पड़ी । वह साल किसी तरह रो-पीटकर निकाला और दूसरे साल भगवान्‌की दया हुई और फिर वही अन्नकी जगह अन्न और धनकी जगह धन ! और फिर वह तो ईश्वरी कोप था, परन्तु यह मुसीबत तो हम आदमियोंने अपने ही हाथों रहकर अपने ऊपर बुलाई । आज

पाँच साल हो गये, इस गाँवके हम सौ कुटुम्ब पेटमें पट्टियाँ बाँधे दिन गुजार रहे हैं। हमारे साथ हमारे दो-ढाई सौ जानवरोंके भी यही हाल हैं। वे भी बिना चारे-दानेके तड़प रहे हैं। और इस सारी मुसीबतका कारण है वह सामने दिखनेवाला तालाब!'

'तालाब!' अत्यन्त सहानुभूतिपूर्वक बूढ़ेकी बात सुन रहे मंगेशरावने आश्चर्य-चकित होकर कहा।

'हाँ, यही तालाब!' बूढ़ेने ज़ोर देकर कहा—आज जहाँ तालाब दीख रहा है वहीं पाँच साल पहले गाँवके इस छोरसे उस छोर तक फैला हुआ सालमें रबी और खरीफ़ की दो फसलें देनेवाला एक विस्तृत खाजन* था! बारहों महीने हरे खेत लहलहाया करते थे। इस गाँवमें बसनेवाले हम किसान पीढ़ी-दर-पीढ़ीसे उस खाजनपर खेती करते, कड़ी मेहनतकी रुखी-सूखी रोटी खाते और मालिकोंकी बढ़ती मनाते आये थे! खाजनने भी कई जमाने बदलते देखे। एकके बाद दूसरे कई मालिकोंके अधिकारमें रहा। पिछली चार पीढ़ियोंसे देशपाण्डे साहबके घरानेके अधिकारमें होनेसे पहले एक हिस्सा किसी बनियेके और बाक़ीका शेष

*खारे पानीके किनारे खेतीके उपयोगमें आनेवाली जमीन गोवा प्रान्तमें खाजन कहलाती है। कुलाबा और रत्नागिरी जिलेमें यही शब्द खारे पानीके कारण बेकार हो गई जमीनके लिए काममें लाया जाता है जब कि गोवामें इस शब्दसे उस जमीनका बोध होता है जो अधिक उपजाऊ होती है। खाजनपर काश्त करनेका उधर एक नया ही तरीक़ा काममें लाया जाता है। खाजन एक तलहटीके क़िस्मकी नीची जमीन होती है। नदीका खारा पानी एक नहरके द्वारा उस तक लाया जाता है और खाजनके मुँहपर मुहानेकी क़िस्मका एक दस-बारह वर्ग फुटका लकड़ीका दर्वाज़ा बनाकर उसके द्वारा पानी खाजनमें पहुँचाया जाता है। इस दर्वाज़ेको 'मानस' कहते हैं और इसकी यह विशेषता होती है कि ज्वारके समय दर्वाज़ा अपने आप बन्द हो जाता है ताकि आवश्यकतासे अधिक पानी खेतोंमें न आने पाये और भाटेके समय दर्वाज़ा अपने आप खुल जाता है और बेकार पानी बहकर चला जाता है। पानीके इस आवागमनके कारण खेतोंको आवश्यक क्षार खादके रूपमें मिला करता है।

नारियलके किसी ठेकेदारके अधिकारमें था। मैंने अपने दादाके मुँहसे सुना है कि बनिये और ठेकेदारने यह खाजन एक माँझीसे खरीदा था। इसके मालिकोंमें तो कितना ही परिवर्तन हुआ पर पीढ़ियोंसे इसपर खेती करनेवाले हम किसान वहीके वही हैं। हममें कोई बदलाबदली नहीं हुई। हमारे और हमारे बापदादाओंके हलोंके सिवाय किसी अन्य खेतीहरके हल इस जमीनपर नहीं चले और आज तक हमारे सिवा किसी अन्यके खून-पसीनेसे यह धरती सींची भी नहीं गई। हमीं इस गाँवके आदिम निवासी हैं! और इसीलिए दशहरेके दिन देवीके आगे पहला नारियल फोड़नेका अधिकार हम कुनबियोंका ही है। और वह आज भी बना हुआ है। जब तक हम नारियल न फोड़ें देवीकी छड़ी उठ ही नहीं सकती!

देवी और छड़ीका उल्लेख करते समय बूढ़ेने सामने दिखाई पड़नेवाले मन्दिरकी ओर हाथका इशारा किया। उस समय उसके हृदयमें श्रद्धाकी जो लहर उठी उसने उसके कण्ठ-स्वरको क्षण-भरके लिए कम्पित और उसकी निस्तेज आँखोंको तेजसे भर दिया।

'सच?' मुस्कराते हुए मंगेशरावने कुतूहलसे यह एक ही शब्द इस तरह कहा मानों देव मन्दिरसे प्राप्त होनेवाले इस सम्मानके लिए उसका अभिनन्दन कर रहे हों।

बूढ़ा भी खुश हो गया! थोड़ी देर चुप रहनेके बाद वह फिर बोला—परन्तु यह सम्मान तो सालमें एक दिनका है! बाक़ीके तीन सौ उनसाठ दिन तो कोई हमें कौड़ीके मोल भी नहीं पूछता! तभी न हमारी यह दुर्दशा हो गई! आज पाँच साल होने आये। खाजनका नदीकी ओरका बाँध फूट गया। खारा पानी उसमें भरने लगा और खाजनके बदले यह तालाब बन गया! शुरूमें बाँधमें एक छोटा-सा सुराख हुआ था यदि उसे उसी समय बन्द कर दिया जाता तो आज यह सर्वनाश तो न होता। परन्तु बड़े घरकी बड़ी बातें! उसी समय बड़ी पट्टीके बाबासाहब और छोटी पट्टीके रावसाहबमें झगड़ा हो गया! और खाजन दोनों पट्टीदारोंकी समान मिल्कियत था! इससे पहले दोनों पट्टीदार एक ही घरमें मिल-जुलकर रहते थे। परन्तु झगड़ा होनेके बादसे एक पट्टीदार अलग होकर सोतेके उस पार नये मकानमें जाकर रहने लगे। तभीसे दोनों एक दूसरेके दुश्मन हो गये! इनके दादाके जमाने तक खाजनका बहुत ही बढ़िया इन्तज़ाम था। वह

जो झरना दिखाई दे रहा है?—बूढ़ेने दक्षिण ओरकी पहाड़ियोंको लक्ष्य कर कहा—उसका पानी साल-भर खाजनकी जमीनको सींचता रहता था ! सिंचाईके बाद जो फालतू पानी बचता था वह भाटेके समय नदीकी ओरके बाँधमेंसे खिड़कीके द्वारा बाहर निकल जाता था। पाँच साल पहले बाँध इतना मजबूत था कि खिड़की बन्द कर देनेपर अमावस्या और पूर्णिमाको भी जब ज्वार अपने पूरे जोरपर रहता है खारे पानीकी एक भी बूँद अन्दर नहीं आ सकती थी ! आज उसी खाजनकी क्या दुर्गत हो गई ! बाँध जगह-जगहसे फूट गया और ज्वारके समय सारा खाजन खारे पानीसे भरने लगा। खारे पानी का यह तालाब तुम्हें खूबसूरत दिखाई दिया; परन्तु पाँच साल पहले ठीक इसी जगह इस तालाबसे भी सैकड़ों गुना अधिक सुन्दर दृश्य तुमने देखा होता ! जहाँ सालमें दो बार, देखनेवाला देखता ही रह जाय ऐसे हरे-भरे मीलों लम्बे खेत दिखाई देते थे वहाँ आज खारे पानीपर जीनेवाली इंपली और चिपीकी कँटीली झाड़ियाँ नज़र आती हैं ! पहले मीठे पानीकी सिंचाईके कारण खाजनकी बची हुई ज़मीन और बाँधपर बारहों महीने हरी घास होती थी और हमारे ढोर-डाँगर झुण्डके झुण्ड घण्टों गर्दन झुकाये चरा करते थे। परन्तु आज उन्हीं भूखसे तड़पते हुए मूक पशुओंको हम इन कँटीली झाड़ियोंका रूखा-सूखा पाला डालकर किसी तरह जिलाये जा रहे हैं ! उन दिनों तीस-चालीस जोड़ी बैलों और काम करनेवाले सैकड़ों स्त्री-पुरुषों और बालकोंके कारण यह खाजन भरा-पूरा दीखता था। सालके बारहों महीने निराई, कटाई, जुताई, बुवाई आदि खेतीके कामोंकी यहाँ धूम मची रहती थी !

बूढ़ा दुःखित होकर यह सब सुना रहा था। अब साँस भर आनेसे वह चुप हो गया। उसके मुँहसे यह सारी हकीकत सुनकर मंगेशरावका अन्तःकरण भी विव्हल हो उठा।

'तुम गरीब लोगोंपर तो आफ़तका पहाड़ ही टूट पड़ा !' मंगेशरावने समवेदना भरी वाणीमें कहा।

'परन्तु किसानोंके साथ ही साथ ज़मींदारोंका भी तो नुकसान होता होगा? फिर क्यों नहीं वे एक बार बाँधकी मरम्मत और खाजनको ख़ाली करा देते? या अब बाँधकी मरम्मत हो ही नहीं सकती?'

बूढ़ा इस तरहके प्रश्नकी प्रतीक्षा ही कर रहा था। भौंहें सिकोड़कर बोला—

हो क्यों नहीं सकती ? खाजनके लिए मुकदमा लड़नेमें दोनों पक्षोंने जितना पैसा खर्च किया है उसका दसवाँ हिस्सा तो ठीक यदि बीसवाँ हिस्सा भी वे इस काममें लगानेको तैयार होते तो आठ ही दिनमें एक नया बाँध बंधकर तैयार हो जाता ! परन्तु दोनोंमेंसे कोई अपने अहंकारसे समझौताकर आपसी कलह मिटानेको तैयार तो हो ? हम गरीब कुनबियोंके लिए तो यह खाजन ही कुबेरका भण्डार था; परन्तु उन्हें इसकी क्या पर्वाह ? एक खाजन डूबा तो डूबा ! उनकी आमदनीके अड़ोस-पड़ोसके गाँवोंमें और बीसियों जरिये जो हैं ! परन्तु सुनते हैं कि अब वे भी एकके बाद एक मुकदमेबाज़ीमें गिरौं रखे जा रहे हैं। आपसी ईर्ष्या-द्वेषके फेरमें पड़कर उन्होंने खाजनकी तीस-चालीस हज़ारकी वार्षिक आमदनी पर तो पानी फेर ही दिया । साथ ही खाजनके इर्द-गिर्द उनके नारियलके कुंजोंको भी खारे पानीके असरके कारण कुछ कम नुकसान नहीं हुआ ! जहाँ पहले हर साल बीस-पच्चीस हज़ार नारियल उतरते थे वहाँ अब पन्द्रह-सोलह हज़ार भी मुश्किलसे उतरते हैं ! परन्तु उन लोगोंने तो घर फूँककर भी मुक़दमेबाज़ीका हौसला बाँध रखा है ! हाँ, हमारी हालत ज़रूर 'दो साँड़ोंकी लड़ाईमें बाड़ बेचारीकी मुसीबत' जैसी हो गई है !

इसी समय पासके नारियलके बग़ीचेमेंसे लोगोंके गाने-बजाने और शोर-गुलकी आवाज़ सुनाई दी। बूढ़ेने सतर्क होकर इधर-उधर देखा और फिर गुस्सेसे उबलते हुए बोला—हम तो भूखों मर रहे हैं और ये परदेशी भैंसे हरामका खाखाकर डकार रहे हैं ! ज़रा देखो न, कच्चे नारियलोंकी कैसी कचूमर उड़ा रहे हैं ? दूसरोंके बाग़में ये होते कौन हैं ? परन्तु इसकी यहाँ पर्वाह ही किसे है ? पहले देखें हमारे सामने कोई मालिकोंके बग़ीचेकी एक पत्तीको भी हाथ तो लगा लेता ! परन्तु अब तो पादरी पड़े बवालमें और चर्च सारी लुट गई !

'परन्तु इस छोटे-से गाँवमें ये इतने सारे पूरबिये कहाँसे आ गये ?' मंगेशरावने बगीचेकी ओर देखते हुए उत्सुकतापूर्वक पूछा !

'वही तो बतला रहा हूँ, साहब ! इधर कुछ दिनोंसे दोनों पक्षोंमें इस या उस बहानेको लेकर सिर-फुड़ौव्वल होने लगी है। शुरू-शुरूमें तो दोनों घरोंके चाकर ही मार-पीट किया करते थे; परन्तु दो-एक महीने हुए बड़े मालिकने छोटे मालिकको नीचा दिखानेके इरादेसे बम्बईसे इन किरायेके मवालियोंको बुलाया है। जो टुकड़ा

रोटी डाल दे उसीके इशारेपर ये कुत्ते किसीको भी चीर-फाड़ देनेके लिए हमेशा तैयार रहते हैं! जी भरकर घी-मलीदा उड़ाना, पूरियोंपर हाथ साफ़ करना और टाँगें फैलाकर पड़े रहना! और कामके नामपर महीना-पन्द्रह दिनमें आस्तीनें चढ़ाकर अपने विरुद्ध पक्षपर लाठियाँ बजा आना, बस! परन्तु अब इनके भी दिन आ लगे हैं! आठ ही दिन हुए छोटे मालिकने बड़ोंके मुँहपर थप्पड़ जड़नेके इरादेसे अपनी ओर पठान बुलवाये हैं! और उन लोगोंका पेट रोज़का एक पूरा बकरा और पन्द्रह-बीस मुर्गियाँ खाकर भी नहीं भरता!'

'अरेरे, मामला यहाँ तक बढ़ गया? बड़ी शर्मकी बात है! इतने प्रतिष्ठित घरानेके इन लोगोंको यह तो बिलकुल ही शोभा नहीं देता! कमसे कम तुम किसानोंका यह हाल देखकर तो इन्हें अपना आपसी झगड़ा भूल जाना चाहिये था! पूरे पाँच सालसे खाजनकी यह बर्बादी और गाँवके सैकड़ों प्राणियोंका यों भूखसे तड़पना फूटी आँखों देखनेवाले तुम्हारे इन मालिकोंमें क्या जरा भी मनुष्यता नहीं है?'

असहाय देहातियोंकी ऐसी करुणोत्पादक स्थिति सुनकर मंगेशरावने सहानुभूति पूर्ण स्वरमें जो यह उपर्युक्त शब्द कहे इन्हें सुनकर बूढ़ेपर दुहेरी प्रतिक्रिया हुई। मंगेशरावके सहानुभूतिपूर्ण शब्दोंसे जहाँ उसके दुःखी मनको आश्वासन मिला वहीं एक तीसरे आदमीके मुँहसे अपने मालिकोंकी निन्दा सुनकर उसे बुरा भी लगा! उसके रोम-रोममें भिदे हुए निःस्वार्थ स्वामि-भक्तिके परम्परागत भावोंने जोर मारा और उसने अप्रसन्न होकर कहा—आप ऐसा क्यों कहते हैं जनाब? मालिक लोग क्या यह चाहते हैं कि हम भूखों मरें? परन्तु वे करें भी तो क्या? खुद भी लाचार हैं! क्योंकि यह उनके आपसी अधिकारों और इज्जतका सवाल है। हम गरीब किसानोंको तो खाली अपना पेट भरनेसे मतलब है। उससे आगेकी बात हमें नहीं दीखती! परन्तु उन्हें तो अपने दादा-परदादाके जमानेसे चले आते हक़ और अपनी इज्ज़तको किसी तरह बनाये रखना पड़ेगा न? उसके लिए लड़ना भी पड़ेगा। खून भी बहाना पड़ेगा! फिर ऐसी बातोंका निपटारा करनेके लिए सरकारकी ओरसे भी तो बहुतेरे अड़ङ्गे लगाये जाते होंगे। हम अपढ़ कुनबियोंके तो खयालमें भी वे सब बातें नहीं आ सकतीं।

अभी थोड़ी देर पहले जो बूढ़ा जल-भुनकर अपनी विपत्ति की दुखिया-पुराण सुना रहा था जब उसीने उस विपत्तिके मूल कारण अपने मालिकोंके कुकृत्योंका इस तरह समर्थन किया तो मंगेशरावको आश्चर्य तो हुआ परन्तु साथ ही मजा भी आ गया। उनके चेहरेपर एक मुस्कराहट छा गई।

बूढ़ेकी बातोंमें उन्हें ध्यान ही न रहा और समय काफी बीत गया! इस ओर लक्ष्य जाते ही वह रास्तेकी ओर मुड़े और बूढ़ेसे विदा लेते हुए बोले—अच्छा बाबा! तुम्हारी बात ही सच रही! तुम्हारे मालिकोंका दोष हो या न हो परन्तु अब भगवान् करें और किसी तरह उनका आपसी झगड़ा मिट जाय और तुम लोगोंकी भी यह विपत्ति टले!

'आपके मुँहमें घी-शक्कर!' बूढ़ेने कृतज्ञ होकर दीन स्वरमें कहा।

'मुझे तुम्हारे मालिक बाबा साहबके यहाँ जाना है। उनका मकान इसी ओर तो है?' मंगेशरावने चलते-चलते सहज भावसे पूछा। यह सुनते ही उनके प्रति बूढ़ेका सम्मान दस गुना बढ़ गया! अच्छा, आप हमारे मालिकके मेहमान हैं? पहलेसे क्यों नहीं बतलाया? चलिये, मैं आपको उनके घर तक पहुँचा दूँ।' यह कहकर बूढ़ा उनके आगे-आगे हो लिया।

थोड़ी देर चलनेके बाद एक आलीशान इमारतके आगे आकर बूढ़ेने काफी अपनेपनसे और अभिमानपूर्वक कहा—यही है हमारे राजा-मालिककी कोठी! और चहार दिवारीमें लगा लकड़ीका फाटक खोलकर एक ओरको किया। जब मंगेशराव फाटकके अन्दर दाखिल हुए तो बूढ़ेने झुककर उन्हें सलाम किया और लौट गया।

फाटकमें घुसते ही एक बड़ासा अहाता पड़ता था। अहातेकी बाईं ओर फूससे छाई हुई एक अस्तबल और गौशाला थी। गौशालामें खूँटे तो पचीसेक थे परन्तु उसे देखनेसे पता चलता था कि वहाँ गायें दो-तीन ही बँधती हैं! और अस्तबल तो साफ पुकारकर कहती थी कि यहाँ वर्षोंसे घोड़ा नहीं बँधा। एक जंग लगी शिकरम, टूटी हुई धूलि धूसरित पालकी, ईंधन और नारियल के छिलकोंका ढेर उसके अधिकाँश भागको आबाद कर रहे थे। हातेके दाहिने छोरपर आम, कटहल और अमरूदके चार-पाँच वृक्ष, एक बेलका वृक्ष और हर-सिंगार, बेला, चमेली, चम्पा आदि फूलोंके कुछ पौधे थे। उनके पासकी थोड़ीसी

ज़मीन बाँसकी फच्चियोंसे घेरकर उसमें अंग्रेजी ढंगका बाग लगानेका प्रयत्न किया गया था। परन्तु वहाँपर भी जो गमले रखे हुए थे उनमेंसे कुछ तो फूट गये थे और शेष गमलोंमें लगाये हुए नये ढंगके पौधे सूख गये थे। इस बगीचेके आसपास नारियलके रेशे, पत्तियाँ, छाल आदिका ढेरों कचरा जमा हो रहा था!

अहातेमेंसे ही सामने दुमंजिला मकान दिखाई पड़ता था। मकानका एक ओरका हिस्सा नया छज्जा बनानेके लिए तोड़ा गया था और बहुत दिनोंसे आधा बना हुआ छज्जा वैसे ही पड़ा था।

देशपाण्डेकी इमारतका यह बाहरी हिस्सा कुतूहलपूर्वक देखते हुए मंगेशराव अहाता पारकर घरके चबूतरेपर आ पहुँचे। उनकी आहट पाकर चबूतरेके एक कोनेमें पड़ा-पड़ा झपकियाँ लेनेवाला एक बूढ़ा कुत्ता गर्दन उठाकर गुर्राने लगा। उसका गुर्राना सुनकर एक नौकर बाहर आया और मंगेशरावसे पूछताछकर उन्हें दीवानखानेमें ले गया। और फिर राजा-मालिकको खबर देने अन्दर चला गया।

दीवानखानेके दर्वाजेके ठीक सामने ही नारियलकी नई फसलका एक बड़ा-सा ढेर लग रहा था और उस ढेरके एक कोनेमें हालकी जनी हुई बिल्ली आरामसे लेटी जीभ निकालकर अपने पिल्लोंको चाट रही थी। इस ढेरको सतर्कतासे पारकर मंगेशराव सामनेकी कुर्सियोंमेंसे एकपर जा बैठे। दीवानखाना काफी लम्बा-चौड़ा था और कई झाड़-फानूसों तथा आदमकद आइनोंसे सजाया गया था। फानूसोंके कई लटकन टूटे हुए थे और आइनोंमें जगह-जगह चकत्ते पड़ गये थे। दीवालपर इधर-उधर चित्र और फोटू टंगे हुए थे। चित्र सबके सब देवी-देवताओंके और काँचपर बने हुए थे तथा कोई सौ-सवा सौ साल पुराने लगते थे। फोटू अवश्य बीस-पच्चीस सालसे अधिक पुराने नहीं थे। उनमें दों कार्लुश्, दों मानुयेल आदि पुर्तगाली राज-वंशियों तथा उन्हींके भाई बंधु आत्मैद, मानुयेल-द-ओरयाग प्रभृति गोवाके कतिपय गवर्नर तथा जज आदि शासकोंके फोटू प्रमुख स्थानोंपर लगाये गये थे। तलवार, भाले, बन्दूक आदि कुछ जंग लगे पुराने हथियार भी दीवालपर सजाये गये थे।

मंगेशराव दीवानखानेकी यह सज्जा अभी देख ही रहे थे कि बाबासाहबने प्रवेश किया। मंगेशरावने उठकर उन्हें नमस्कार किया और उन्हें अपना नाम-पता

बतलाकर परिचय देने लगे। उसी समय एक नौकर हुक्का लेकर आया और आदरपूर्वक मंगेशरावके आगे निगाली कर दी। उनके यह कहनेपर कि उन्हें हुक्के की आदत नहीं है बाबासाहबने दो-चार कश लिये और नौकरको आदेश दिया—जा, भीतर जाकर मेहमानके लिए चाय बनाकर भेजनेको कह और जबतक चाय आती है तू दो-एक कच्चे नारियल ले आ!

अपना परिचय देनेमें आगे चलकर मंगेशरावने उन्हें यह भी बतलाया कि उनके दादा और बाबासाहबके चाचामें जुएके व्यसनके कारण बड़ी ही दाँत-काटी रोटी थी। यह सुनकर बाबासाहबका हृदय मंगेशरावके प्रति आत्मीयतासे भर आया और उन्होंने स्नेहपूर्वक उनके कन्धेपर हाथ रखते हुए कहा—अच्छा, आप भवानी बाबाके पोते हैं? तो बस, इतना परिचय काफ़ी है। भवानी बाबा कोई ग़ैर थोड़े ही थे? वह तो हमारे परिवारके ही एक व्यक्ति हो गये थे! दशहरेपर हमारे यहाँ आते और दो-तीन महीने ठहरते, फिर चाचाजीके साथ इधरकी सभी जात्राएँ करते और जो छटीके मेलेमें जाते तो वह और चाचाजी दोनों उधर ही तीन-चार महीनोंके लिए गुम हो जाते थे! चाचाजीको भी उनपर बड़ा भरोसा था। भवानी बाबाके साथ रहनेपर वह कैसे भी काइयाँ जुआरीसे दाँव लड़ानेमें हिचकते नहीं थे। और उनका हौसला इतना बढ़ जाता था कि अपने प्रतिपक्षीके कपड़े-लत्ते तक नीलाम कराने को खम ठोकते थे।

अपने चाचा और भवानी बाबाकी जुएबाजीके पराक्रम सुनानेमें, जुएके किस अड्डेपर उन दोनोंने किस प्रख्यात जुआरीको कैसे मात दी आदि घटनाओंका वर्णन करनेमें बाबासाहब इतने अधिक तल्लीन हो गये कि कब नौकर कच्चे नारियल लाया और कब चाय आई उन्हें सुध ही न रही। फिर अतिथिको आग्रहपूर्वक चाय पिलाते हुए और चायपानके बाद भी कोई घण्टे-डेढ़ घण्टे तक उनकी जुआ-पुराण चलती रही!

अपने आगमनका हेतु बतलाकर झटपट अपना काम निपटानेके इरादेसे मंगेशरावने अधीर होकर विषय-परिवर्तनके लिए जो दो-एक बार प्रयत्न किया वह बाबासाहबके वाक्प्रवाह, उनकी हास्य-लहरियों और हाथकी हिलोरोंमें न जाने कहाँ डूबकर रह गया।

अन्तमें एक नौकरने आकर उन्हें इस विकट परिस्थितिमेंसे उबारा! गरीके तेलकी एक प्याली अपने स्वामीके आगे रखते हुए उसने 'छोटी हाजरी' की सूचना दी! अब बाबासाहबको होश आया। उन्होंने तेलकी प्याली अतिथिकी ओर बढ़ाई और स्वयं भी उसमेंसे तेल लेकर सिर और बदनपर मलने लगे। मंगेशरावने तो चटपट ही तेल-मालिशकी क्रिया समाप्त कर दी; परन्तु बाबासाहबने उसमें भी पन्द्रह-बीस मिनटका समय लगाया। फिर दोनों आदमी नहा-धोकर 'छोटी हाजरी' † पर बैठे। मंगेशरावकी यह आशा कि कमसे कम 'छोटी हाजरी'के समय तो बाबासाहबका 'लाउड स्पीकर' बन्द होगा और उन्हें अपनी बात कहनेका अवसर मिलेगा, शीघ्र ही निराशामें परिवर्तित हो गई। 'छोटी हाजरी'के लिए काँजी, चौलाईकी मसालेदार साग और गरम खस्ता चीले बनाये गये थे। बाबासाहब चौलाईकी साग खाते, एक चीलेके दो निवाले करते और फिर प्याला उठाकर गरमागरम काँजी सुड़कते जाते थे। उनके ये तीनों काम क्रमशः चलते जाते थे और साथ ही उनकी जबान यह कहकर मेहमानकी खबर भी लेती जा रही थी कि किस तरह बम्बईका वह नाजुक आदमी डर-डरकर चीले छूता है, सागको हाथ लगाता है और नजाकतके साथ काँजीका एक ज़रा-सा घूँट लेता है! मंगेशराव उनकी जबानको इस तरह विभिन्न मोर्चोंपर एक साथ आक्रमण करते देख आश्चर्यचकित ही रह गये!

यों छोटी हाजरीमें आधा-पौन घंटा लग गया और बाबासाहब मेहमानको लेकर पुनः दिवानखानेमें लौट आये। रसोईघर छोड़ते-छोड़ते उन्होंने अपने रसोइयेको अच्छी तरह ठोक-बजाकर यह विशेष सूचना दी कि दुपहरके खानेके लिए नदीके उस किनारेसे रोहू मछली और पासवाले गाँवके खारे तालाबसे झींगे ज़रूर-ज़रूर मँगवाले। उसके बाद उन्होंने मंगेशरावको उस खास रोहू मछली और खारे तालाबके झींगोंकी तारीफ सुनाना आरम्भ कर दी। ये दोनों

---

† मूल लेखकने 'पेज' शब्द इस्तेमाल किया है। 'पेज' आटेसे बनाया जानेवाला एक पेय पदार्थ होता है जिसके लिए हिन्दीमें 'काँजी' शब्द है। परन्तु 'काँजी पीना' जेलमें और उसके बाहर सजाके अर्थमें रूढ़ होनेके कारण अनुवादमें 'छोटी हाजरी' याने भोजन और नाश्तेके बीचके हलके भोजन शब्दसे सहायता ली गई है।—अनुवादक

चीज़ें सारे अड़ोस-पडोसमें कितनी मशहूर हैं और कैसे और कहीं नहीं मिलती हैं और कैसे उनके पिताके परिचित एक जज साहब खारे तालाबके इन झींगोंपर इतना लुब्ध होगये थे कि पेन्शन लेकर पुर्तगाल जानेके बाद भी इन्हें नहीं भूले, और अकसर अपने पत्रोंमें इन झींगोंका उल्लेख करते रहे और कैसे आज भी स्वयं उनके कतिपय परिचित यूरोपियन एवं ईसाई आफ़िसर इन रोहू झींगोंकी सौगात पाकर खुश हो जाते हैं आदि प्रत्येक छोटी-बड़ी बातें वह विस्तारपूर्वक सुनाने लगे।

बाबासाहबकी यह मत्स्यपुराण द्रौपदीके चीरकी तरह न जाने कितनी लम्बी थी! परन्तु मंगेशरावके सौभाग्यसे बाबासाहबको 'छोटी हाजरी'के बाद रोज़ थोड़ी देर लेटनेकी आदत थी, इसलिए उनकी आँखें झपने लगीं और उन्हें विवश होकर यह बातचीत समाप्त करना ही पड़ी!

ऐसे ही अवसरकी ताकमें बैठे हुए मंगेशरावने इस बार हिम्मत करके कहा—अब मैं जिस कामके लिए आया हूँ वह काम...

परन्तु बाबासाहब उन्हें बोलनेकी इजाजत ही कब देनेवाले थे? उन्होंने उन्हें अपनी बात भी पूरी नहीं करने दी!

'उसकी आप ज़रा भी फिक्र मत कीजिये! एक तो आपका-हमारा पुराना स्नेह-सम्बन्ध और तिसपर आप स्वयं हमारे यहाँ आयें, फिर भला आपका काम क्यों न होगा? बस, आपके मुँहसे कहने भरकी देर है और समझ लीजिये कि वह पूरा हो चुका! परन्तु अभी थोड़ा विश्राम कीजिये, फिर फ़ुर्सतसे उसके बारेमें बातें होंगी' यह कहकर वे सवेरे चलकर आनेके कारण थके हुए अतिथिको कमर सीधी करनेका बारम्बार आग्रह करने लगे। मंगेशरावने पीछा छुड़ानेकी बहुत कोशिश की, हर तरहसे समझाया कि उन्हें दिनमें सोनेकी ज़रा भी आदत नहीं परन्तु बाबासाहब कब माननेवाले थे? कहार पहलेसे ही दो बिस्तरे पास-पास बिछा गया था। बाबासाहबने जब एकपर हाथ-पाँव पसारे तो शिष्टाचारकी खातिर उन्हें भी दूसरे बिस्तरेकी शरण लेना पड़ी! दो मिनट बाद ही बाबासाहबकी तो नाक बजने लगी और मंगेशराव इस सोच-विचारमें तल्लीन हो गये कि उनके उठते ही कैसे सर्व प्रथम उन्हें अपने आगमनका कारण बतलाया जाय?

छोटी हाजरीके बाद बाबासाहब कमसे कम तीन घंटे तो रोज ही लेटा करते थे। फिर आज तो मेहमानके साथ बातचीत करनेमें उन्हें ध्यान ही न रहा और वह मामूलसे कुछ अधिक खागये इसलिए रोजकी अपेक्षा एक घण्टा देरसे उठे। मंगेशराव बेचारे दम साधे उनके उठनेकी प्रतीक्षा करते रहे।

उठकर जमुहाई लेते हुए बाबासाहबने अपने अतिथिकी ओर देखा और खेद प्रदर्शित करते हुए बोले—माफ़ कीजिये साहब, ज़रा आँख लग गई और देर होगई! खानेका वक्त ही निकल गया। आपको भूख लगी होगी। बम्बईवालोंकी आदत तो सब काम समयपर करनेकी होती है।

'छिः-छिः, हम नौकरीपेशा लोगोंकी यह समयकी पाबन्दी तो गुलामीका जूआ ही है। अब यही देखिये न कि परसों मेरी छुट्टी खतम होती है। यानी कल सबेरे जहाज़ पकड़कर परसों मुझे बम्बई पहुँच ही जाना चाहिये। इसके अलावा और कोई चारा नहीं! कहीं एक दिनकी भी देर हुई तो साहब फाड़कर ही खा जाएगा। इसलिए मुझे इस गाँवका जो दर्शनीय स्थान देखना है वह आज ही सायंकालसे पहले देख-दिखाकर यहाँसे बिदा हो जाना चाहिये। वह स्थान यहाँसे पास ही...'

अन्तमें बड़ी ही सफाईसे अपने मेजबानके आगे वह अपने आगमनका कारण बतलानेमें सफल हुए और इस खयालने मंगेशरावको आनन्दित कर दिया। परन्तु बाबासाहबके मुँहसे हँसीके एक फव्वारेने छूटकर उनका अन्तिम वाक्य पूरा ही नहीं होने दिया!

'वाह! खूब काम है आपका! मैंने तो सोचा था कि जमीन-जायदाद सम्बन्धी किसी मामलेमें आप अधिकारी वर्गमें मेरी लाग-डाँट और प्रभावका उपयोग करना चाहेंगे, या सस्ते दामों कोई खेत-पात खरीदनेमें मेरे सलाह-मशविरेकी आवश्यकता होगी या और ऐसा ही कोई अन्य महत्त्वपूर्ण काम होगा! परन्तु यहाँका दर्शनीय स्थान देखनेकी तो आपने एक ही कही! जिसने बम्बईमें मिलें, कारखाने, ट्रामें, अजायबघर, चौपाटी आदि एकसे एक बढ़कर दर्शनीय स्थान देख रखे हों उसके लिए यहाँ इस गाँवमें दर्शनीय हो ही क्या सकता है! हाँ, क़सम खानेके लिए दो चीज़ें ज़रूर हैं, जिसे यहाँ आनेवाले देहाती देख जाया करते हैं! एक तो गाँवका मन्दिर और दूसरे हमारी यह कोठी। कोठी तो आपने देख ही ली है मन्दिर भी दो-एक दिनमें फ़ुर्सतसे दिखला दिया जायेगा! आये हैं तो दो

दिन रुकिये भी ! साहब सालेकी ऐसी-तैसी ! झख मारने दीजिये उसे ! वह ससुरा भी तो छुट्टी जानेपर समयसे दो-चार दिन पिछड़कर ही आता होगा ! '

बाबासाहबके ये शब्द सुनकर मंगेशराव तो बेचारे घबरा ही गये। योग्य उत्तरकी तलाश करते हुए उन्होंने उनके साथ भोजनगृहमें प्रवेश किया।

बगलके रसोईघरसे आनेवाले सुस्वादु व्यंजनोंकी महकके कारण बाबा साहबका खिला हुआ चेहरा देखकर मंगेशराव समझ गये कि अब फिरसे रोहू-झिंगाकी चर्चा शुरू हुआ ही चाहती है। उसे टालनेके इरादेसे उन्होंने शीघ्रतापूर्वक कहा—आपकी कोठी तो दर्शनीय है ही, इसमें क्या शक ! मन्दिर भी देखना चाहिये। परन्तु मैं खास तौरसे यहाँ भूतहे पहाड़की गुफा देखने आया हूँ ! मुझे पुरातत्त्व-विद्यासे प्रेम है और इसीलिए मैं यह गुफा स्वयं जाकर देखना चाहता हूँ !

मंगेशरावके मुँहसे इन शब्दोंको सुनकर बाबासाहबके आश्चर्यका ठिकाना न रहा और उन्हें अपने अचरजपर विजय पानेमें काफ़ी समय लग गया !

' उस गुफामें ऐसा दर्शनीय है ही क्या ? यदि कुछ होता तो हम देखते ही ! परन्तु मैं अपनी सारी उम्रमें वहाँ एक बार भी नहीं गया। उसके बारेमें मैं केवल इतना जानता हूँ कि ढोर चरानेवाले वहाँ बैठकर अपनी दुपहरकी रोटी खाते हैं। और फिर कहाँ पुरातत्त्व और कहाँ एक छोटेसे गाँवके कोनेमें पड़ी हुई ज़रा-सी गुफा ! दोनोंका संबंध ही क्या ? हमारे चाचा भी एक बड़े भारी पुरातत्त्ववेत्ता और इतिहासज्ञ थे। जुएमें जब कभी उन्हें अच्छी-खासी चपत पड़ती वह सब कुछ छोड़-छाड़कर पुरातत्त्व और इतिहासके पोथोंमें गड़ जाते थे। आपने उनका लिखा ' श्री म्हालसा देवस्थानके आदि स्वामियोंका अधिकार विवरण ' नामक ग्रन्थ तो अवश्य ही पढ़ा होगा ! उन्होंने उस ग्रन्थमें प्रमाणोंसहित यह सिद्ध किया है कि उक्त देवस्थानके केवल तीन ही आद्य स्वामी हैं। उन तीनोंमें एक हम भी हैं—और शेष सब झूठ हैं ! इसके अलावा उन्होंने एक और भी अन्य महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ लिखना आरम्भ किया था, जिसमें वह ऐतिहासिक प्रमाणोंसे यह सिद्ध करनेवाले थे कि गौड़ सारस्वत ब्राह्मणोंकी वर्त्तमान उपजातियाँ बिलकुल ही स्वतन्त्र जातियाँ हैं और उनका आपसमें एक दूसरेसे कुछ भी सबन्ध नहीं ! ऐसे महान् इतिहासज्ञ और पुरातत्ववेत्ता थे हमारे चाचा। परन्तु वह कभी गुफा देखने गये हों ऐसा तो मुझे बिलकुल ही याद नहीं पड़ता ! परन्तु

आपकी यह रीति-भाँति तो तीन लोकसे न्यारी ही दीखती है! अन्तिम वाक्य उन्होंने मजाकमें कहा और फिर ज़ोरोंसे हँसने लगे!

इसी समय रसोइयेने आकर पत्तलपर खाना परोसना शुरू किया। अभी वह परोस ही रहा था कि पत्तल परसे एक झींगा उठाकर मुँहमें डालते हुए बाबासाहबने पूछा—कहिये, बम्बईमें भी झींगे मिलते हैं या नहीं? और पुरातत्त्व और इतिहासको अधरमें ही छोड़ वह फिर रोहू-झींगापर, उनकी विभिन्न जातियों, उनकी रुचियों उनके पाचक और शक्तिवर्धक गुणोंपर लेक्चर बघारने लगे। साथ ही झींगा-रोहूके इन शास्त्रसम्मत गुणोंके आधारपर वह मंगेशरावसे आग्रह भी करते जाते थे कि वे इन न्यामतोंपर बढ़-बढ़कर हाथ मारें!

भोजनमें काफी समय लगा, परन्तु आखिर वह समाप्त हो ही गया और मंगेशरावकी जानमें जान आई कि चलो, बाबासाहबके आग्रहसे गला तो छूटा! भोजन-गृहसे बाहर निकले तो एक नौकर तश्तरीमें नारियलकी खुरचन, काजूके टुकड़े, इलायची, सौंफ आदि मुख-शुद्धिकी सामग्री लिये खड़ा था।

बाबासाहबने उनसे अपना मुँह भरते हुए एक नौकरको पुकारा—क्यों रे, शिकारको गये हुए लोग लौट आये या नहीं?

'जी हुज़ूर! सबेरे ही आगये।' नौकरने जवाब दिया।

सुनकर बाबासाहब आश्वस्त हो गये और मंगेशरावकी ओर मुड़कर कहने लगे—तब तो आज रातके भोजनमें हम आपको गोश्तकी दावत देंगे! गाववालोंके शिकारमें जंगली सूअरकी रानका हमारा हिस्सा बँधा-बँधाया है। भाई मंगेशराव! आप कुछ भी कहें और लोग-बाग सूअरके गोश्तको कितना ही गरिष्ठ क्यों न बतलावें; पर एक बात तो मानना ही पड़ेगी कि सूअरकी रानके गोश्तके मुक़ाबले मिठासमें दुनियाका और कोई गोश्त नहीं ठहरता! मानता हूँ कि खरगोश का माँस पाचक है; परन्तु स्वादके मामलेमें तो बिलकुल ही थर्ड क्लास। हाँ, परिन्दोंके माँसकी लज्जत भी लाजवाब है परन्तु क्या पिद्दी, क्या पिद्दीका शोरबा? परिन्देमें माँस ही कितना? एक परिन्दा मारकर सत्रह आदमियोंकी पत्तलपर उसकी चटनी परोसना तो आप शहरवासियोंको ही शोभा दे सकता है! हमारे इधर ऐसा भिखारीपन नहीं चल सकता! कोई दावतमें बुलाकर मेरे साथ ऐसा करे तो अपने राम तो पत्तल छोड़कर उठ ही खड़े हों।

'जी हाँ ! आपका फर्माना वाजिब है ! माँस खाना तो आपके इधरका ही !' मंगेशराव बीचमें ही बोल उठे—परन्तु माफ़ कीजिये बाबासाहब, मैं किसी भी हालतमें रुक नहीं सकता । कल सवेरे जहाज़ पकड़नेके लिए मुझे आज हर हालतमें अगले मुकाम तक पहुँच ही जाना चाहिये ! विवश हूँ । कृपा करके अपने दो-एक नौकर मेरे साथ कर दीजिये ताकि मैं जाकर वह गुफा देख आऊँ । उस गुफामें एक प्राचीन शिलालेख होनेकी बात मैंने सुनी है । यदि मैं एक कागज़ पर उसका छापा ले सका तो समझिये मेरा बड़ा काम हो जायगा ! इसलिए मैंने यह कार्यक्रम बनाया है कि यहाँसे झटपट गुफाको पहुँच जाऊँ और वहाँका काम निपटाकर उधरसे ही सीधे अगले मुकामको चल पड़ूँ । तो अब कृपया आज्ञा दीजिये !

बाबासाहबने मंगेशरावको रोकनेकी बहुत चेष्टा की ! हर तरहसे समझाया कि गुफा देखने जाकर निराशा ही उनके हाथ रहेगी, कि यह केवल घंटे-पौन घंटेकी पाँव-तुड़ाईके सिवा और कुछ नहीं है; परन्तु मंगेशराव टससे मस न हुए । अन्तमें जब दो-तीन दिनका आतीथ्य ग्रहण करने या कमसे कम उस रातकी दावतके लिए भी बाबासाहब उन्हें रोक न सके तो विवश होकर उन्हें अपनी स्वीकृति देना ही पड़ी ! एक नौकरको बुलाकर उन्होंने अतिथिकी विदाके उपलक्षमें शानदार चाय बना लानेकी आज्ञा दी ।

परन्तु चायके आनेमें इतनी देर होने लगी कि नारियलके वृक्षोंकी जड़ोंमें लेटी हुई धूप धीरे-धीरे उनकी फुनगियोंपर जा बैठी ! मंगेशरावका जी घबड़ाने लगा । चायकी प्रतीक्षामें दिन डूब गया तो गुफा देखनेका काम धरा ही रह जायगा ! उन्होंने अनेकों बार अधीरतापूर्वक बाबासाहबसे प्रार्थना की कि उन्हें चायकी ज़रा भी आवश्यकता नहीं है और वह महरबानी करके उन्हें जाने दें, परन्तु मंगेशरावकी एक भी न चली !

आखिर अपना पूरा समय लेकर चाय और उसके साथ नाश्तेकी भी चार-पाँच चीज़ें बाहर आईं । उन सबको उदरस्थ कर लेनेके बाद ही मंगेशरावको अपने मेजबानसे विदा मिल सकी । बाबासाहबकी आज्ञानुसार उनके चार-पाँच नौकर हाथमें कंदील, नारियलके पत्तोंकी मशाल और लाठियोंसे सज्ज मंगेशरावके साथ जानेको तैयार खड़े थे ! 'पधारना साहब !' 'भूल मत जाइयेगा !' 'आपको

तकलीफ़ दी ! ' ' अरे, इसमें तकलीफ काहेकी ? ' आदि जी उकतादेनेवाले शिष्टाचारसे निपटकर मंगेशरावने कोठीसे पाँव बाहर निकाला ही था कि फिर एक विघ्न आ उपस्थित हुआ !

अचानक पच्चीस-तीस आदमियोंका एक झुण्ड अहातेमें घुस आया और शोरगुल मचाने लगा। शोरगुलकी आवाज़ सुनकर बाबासाहब जल्दीसे बाहर निकल आये। वह झुण्ड उनके चाकरों और पुरबियोंका था । उनमेंसे कुछेकके सिर फूट गये थे और रक्त बह रहा था और दो-एक बेहोश भी होगये थे और लोग-बाग उन्हें उठाकर लाये थे। यह देखकर बाबासाहबका चेहरा मारे गुस्सेके टमाटरकी तरह लाल हो गया और आँखोंसे चिनगारियाँ-सी निकलने लगीं। झुण्डमेंसे कुछ चाकर विपक्षियोंको गालियाँ और शाप देते हुए अपने मालिकको अभी हाल ही जो मार-पीट हुई उसका हाल सुनाने लगे।

उन्होंने जो कुछ सुनाया उसका सारांश यह था कि बाबासाहबकी आज्ञासे वे उनके नारियलके एक बगीचेमें जो नया कुआँ खोद रहे थे वहाँ आज छोटे घरवाले अपने पठानोंको लेकर चढ़ आये और झगड़ा मचाने लगे। मार-पीटकी नौबत आ गई और उसमें बाबासाहबके चाकर और पुरबिये बुरी तरह जख्मी हुए।

सारा क़िस्सा सुना चुकनेके बाद एक चाकर बाबासाहबको किसी धातुका खूनसे सना हुआ, एक बालीश्त-डेढ़ बालीश्त लम्बा-चौड़ा टुकड़ा दिखलाते हुए आवेशपूर्वक बोला—हुजूर, खूनसे सना हुआ यह टुकड़ा इस बातकी गवाही है कि आजकी मार-पीटकी शुरुआत उन लोगोंने की। जमीन खोदते समय यह टुकड़ा मिट्टीके अन्दरसे मिला और हमने इसे एक किनारे रख दिया ! उनमेंसे एक पठानने इसे उठा लिया और हम लोगों पर वार करने लगा और हम संभलें इससे पहले ही कइयोंके सिर रंग दिये। इस तरह मार-पीटकी शुरुआत हुई !

अभी तक मंगेशराव एक ओर चुपचाप खड़े आश्चर्यसे यह सब देख-सुन रहे थे। परन्तु अब धातुके उस टुकड़ेकी ओर निगाह जाते ही उन्होंने झुण्डमें प्रवेश किया और वह टुकड़ा अपने हाथमें लेकर उसे गौरसे देखने लगे।

बाबासाहबने यह समझकर कि वह इस वारदातका पता लगानेकी उत्सुकताके कारण ही ऐसा कर रहे हैं उनकी ओर मुड़कर कहा—देखे हमारे उन नालायक पट्टी-दारोंके ये खूनी कारनामे ! फिर गुस्सेसे उछल-कूदकर, दाँत किटकिटाते हुए

उन्होंने अपने नालायक पट्टीदारोंके आजतकके सभी अक्षम्य अपराधोंका वर्णन किया और अन्तमें बोले—अब इन नालायकोंकी एक भी हरकत बर्दाश्त नहीं करने का। इन आये दिनके झगड़ोंका सदाके लिए निपटारा ही कर देना चाहिये। धातुका यह टुकड़ा और अन्य गवाह-पुरावे कल ही अदालतमें पेश करता हूँ और फौजदारी मुक़दमा दायर करता हूँ।

प्रकटमें मंगेशराव उनकी बात सुननेका अभिनय करते रहे; परन्तु वास्तवमें उनका मन धातुके उस टुकड़ेकी ओर लग रहा था। काफी गौरसे देख लेनेके बाद उन्होंने उसे लौटा दिया।

धीरे-धीरे बाबासाहबके अहातेमें उमड़ आये बे-मौसमके बादल छिटकने लगे। घायलोंकी डॉक्टरी उपचारके लिए समीपके बड़े गाँवमें जहाँ इस तरहकी सुविधा थी, रवानगी की गई। दूसरे लोगोंको बाबासाहबने यह कहकर आश्वासन दिया कि कोर्टमें मुक़दमा चलाकर विपक्षियोंको इस मार-पीटका मज़ा चखाया जायगा। यह आश्वासन लेकर अन्य मार खानेवाले भी अपने विरोधियोंकी भविष्यमें होनेवाली साँसतका मन ही मन मजा लूटते और उस मजेमें अपनी चोटोंको भूलनेका प्रयत्न करते हुए वहाँसे चले गये।

इस अप्रत्याशित घटनामें काफ़ी समय लग जानेके कारण मंगेशरावको गुफा देखने जानेका कार्यक्रम रद्द कर देना पड़ा। उन्हें इसका दुःख तो बहुत हुआ परन्तु लाचारी थी, क्योंकि सूर्यास्तके कारण अन्धेरा होने लग गया था! बाबासाहबने अपने अतिथिके इस दुःखके प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रदर्शित की।

अब मंगेशराव वहींसे सीधे अगले मुक़ामके लिए रवाना हुए। परन्तु जानेसे पहले उन्होंने एक विचित्र काम यह किया कि अपनी अटैचीमेंसे कागज़ और रोशनाई निकालकर एक सादे कागज़पर उस धातुके टुकड़ेका छापा ले लिया और बाबासाहबसे बोले—अन्तमें मेरी आपसे यह प्रार्थना है कि आपके मुक़दमेका फैसला हो जाने पर कृपया धातुका यह टुकड़ा मुझे बम्बई भेज दें! वास्तवमें यह एक ताम्रपत्र—दानपत्र है! इसपर खुदा हुआ संस्कृतका यह छोटा-सा लेख संभव है विस्मृतिके गर्भमें छिपे पड़े किसी महान् ऐतिहासिक सत्यपर प्रकाश डालनेवाला और यों मानव-जातिकी ज्ञान-वृद्धिमें अनमोल सहायक सिद्ध हो!

बाबासाहबको मंगेशरावकी यह प्रार्थना कुछ ऐसी विचित्र लगी कि अभी थोड़ी देर पहिले कि घटनासे क्षुब्ध चित्त होनेके बावजूद भी उन्हें हँसी आ ही गई। बड़ी कठिनाईसे अपनी हँसी रोककर उन्होंने मंगेशरावकी प्रार्थना स्वीकार की और प्रेम-पूर्वक अपने अतिथिको विदा देते हुए नौकरोंसे कहा—अरे, व्यर्थमें इतनी देर हो गई! अब मेहमानको लेकर तुम लोग सुनारके पिछवाड़े बाँधपर होकर हाथ-पाटली खेतमें निकल जाना। वहाँसे सीधे गाँवके बाहर। उस रास्ते जानेसे बीच गाँवका चक्कर बच जायगा। और देखना, सावधानीसे जाना! देहातका जंगली रास्ता है! खोह-खड्ड, बाघ-चीते, साँप-बिच्छू न जाने क्या हों? मेहमानको अगले मुकाम तक बड़ी ही होशियारीसे ले जाना, समझे?

बाबासाहबके आदेशानुसार नौकर लोग मंगेशरावको सीधे रास्तेसे न ले जाकर बाँधकी ओरसे ले चले। थोड़ी देर बाद खेतोंकी पगडंडी शुरू होते ही अभी तक चुपचाप चले आते मंगेशरावने पूछा—यही है क्या हाथ-पाटली खेत?

'जी सरकार!' बम्बईवाले अतिथिसे सर्व प्रथम बोलनेका सम्मान प्राप्त करनेके इरादेसे हाथमें कंदील पकड़े हुए एक युवक चाकरने कहा—यही है, हाथ-पाटली खेत! इस बाँधसे ठेठ उस जामुन तक चला गया है। सालमें रबी और खरीफकी दो फसलें होती हैं। इसका मालिक है जगु देसाई! परन्तु आज पाँच सालसे खेत रेहन पड़ा है और व्याजकी एक पाई तक देनेका पता नहीं।

'चुप रह! अपना मुँह बन्द कर!' बड़े-बूढ़ोंके रहते कलका छोकड़ा मेहमानसे बातचीत करे, इस बातसे रुष्ट होकर बाबासाहबके एक बूढ़े कहारने उसे बीचमें ही झिड़क दिया। जो बात मालूम नहीं, उसके बारेमें बोलता ही क्यों है? क्या कोई तुझे शूली चढ़ाये देता था? जो जीमें आया भौंक दिया! बस उगल दिया, यही है हाथ-पाटलीवाला खेत! है तेरा सिर! हाथ-पाटलीवाला खेत वह आगे है! ठकुराइनकी पाटली इस खेतमें नहीं, उस आगेवाले खेतमें खोई थी। और तुझसे किन्ने कया रे कि यह खेत अब्भी गिरौं धरा है? बिचारे जगु देसाईने अभी दसहरे पर ही तो पाई-पाई अदा करके खेत छुड़ाया, तीन महीने पहले ही...

वह चाकरको और भी डाँटनेवाला था परन्तु उसे बीचमें ही रोककर मंगेश-रावने उत्सुकतासे पूछा—

'यह ठकुराइन कौन थी? और उसकी पाटलीका इस खेतसे क्या सम्बन्ध?'

'मुदा सरकार, बात यह है कि उस खेतमें बहनेवाले नालेके किनारे एक बार ठकुराइनके हाथकी पाटली (कंगन) खो गई थी। बहुत पुराना किस्सा है! हमारे दादा परदादाके बखतका। वह ठकुराइन हमारे गाँवके मन्दिरके पुजारीकी लुगाई थी। भिनसारे उठकर रोज खेतमें दूब लेने आया करती थी। पर बखत क्या कभी कहकर आता है?'

परन्तु पाटलीवाले खेतकी कथा गाँववालोंके ज्ञान-भण्डारकी अमूल्य निधि थी। बूढ़के अन्य साथी भला यह कब गवारा कर सकते थे कि वह अकेला ही पूरा किस्सा सुनानेका श्रेय ले जाये!

'दूब चुनते-चुनते उस पापिनके हाथकी सोनेकी एक पाटली खेतके नालेमें जा गिरी!' एक दूसरे आदमीने उतावलीसे कहानी के आगेका अंश मेहमान को कह सुनाया।

फिर झटसे एक दूसरेने कहा—पाटली तो नालेमें जा गिरी। ठकुराइन बेचारी क्या करे? रोते-रोते उसकी आँखें सूज गईं। अन्तमें उसने देवीका सुमिरन किया उस जमानेके लोगोंका देवताओं पर विश्वास भी खूब था।

'देवताओं पर जैसा उनका विश्वास था वैसी ही देवता उनकी सहायता भी करते थे! उस ठकुराइनकी पुकार सुनकर देवी भी तो उसकी सहायताको दौड़ी आई थी! और फिर जो चमत्कार हुआ ...''

तीसरेने दूसरेकी बातकी दुम पकड़कर उपर्युक्त वाक्य कहनेका श्रेय प्राप्त किया। फिर वह दम लेनेके लिए रुका ही था कि उसी युवक चाकरने बात आगे बढ़ाई—

'जी हाँ, चमत्कार ही था वह! ठकुराइनकी पाटली नालेकी पेंदीमेंसे अपने-आप ऊपर आकर किनारे-किनारे तैरने लगी। और देवी बोली—ठकुराइन, रो मत, यह ले अपनी पाटली! ठकुराइनने पानीपरसे अपनी पाटली उठाई और पीछे मुड़कर जो देखा तो देवी अदृश्य। तबसे यह खेत हाथ-पाटली वाले खेतके नामसे पुकारा जाने लगा। और इस मन्दिरकी देवीको भी लोग-बाग हाथ-पाटली भवानीके नामसे पुकारने लगे। वैसे इस देवीका असली नाम तो है भगवती। यह लीजिए 'हाथ-पाटली-भवानी' का मन्दिर भी आगया। यह कहकर उसने गाँवके छोर पर बाईं ओर खड़े मन्दिरकी ओर इशारा किया।

बाबासाहबके नौकरोंकी यह प्रतियोगिता मंगेशरावके लिए तो उपयोगी ही साबित

हुई। उन्हें पाटलीवाले खेतका किस्सा साररूपमें सुननेको मिल गया। यदि यही किस्सा किसी एक आदमीके मुँहसे सुननेको मिलता तो इस 'हाथ-पाटली पुराण' का न जाने कब अन्त होता।

'अच्छा, यह कारण है हाथ-पाटली वाला कहनेका?' मंगेशरावने अर्धस्फुट शब्दोंमें कहा और वह विचारोंमें लीन हो गये। परन्तु हाथ-पाटली भवानीके मन्दिरके पास पहुँचते ही वहाँके कुतूहलोत्पादक दृश्यने उनका ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया।

उस मन्दिरके आगे कोई सौ-सवा सौ आदमियोंका एक झुण्ड जमा था। झुण्डमेंसे प्रत्येक आदमी हाथमें बन्दूक, तलवार, हँसुए और लाठी आदि कोई न कोई हथियार लिये था। अन्धेरा हो जानेके कारण कुछ लोग अपने हाथकी नारियलकी पत्तियोंकी मशालें जलाने लगे थे। और सारा झुण्ड पाँच-पाँच सात-सात आदमियोंकी टोलियोंमें बँटा किसी महत्त्वपूर्ण विषयकी चर्चा कर रहा था!

मंगेशरावको अपने अगले मुकाम पर पहुँचनेकी जल्दी थी। फिर भी इस मन्दिरके निकट आने पर उनके पाँव रुक ही गये। वह खड़े होकर मन्दिर और उसके बाहर खड़े लोगोंके झुण्डको गौरसे देखने और उनकी बातें ध्यानपूर्वक सुनने लगे। तभी उन्हें एक परिचित आवाज़ सुनाई दी।

'क्यों साहब, आजके आज वापिस चल दिये? यह तो आज पहली मर्तबा देख रहा हूँ कि अपने यहाँ आनेवाले मेहमानको राजा मालिकने इतनी जल्दी जाने दिया! नहीं तो कोई भी मेहमान तीन-चार दिनसे पहले विदा हो ही नहीं सकता!' मंगेशरावके वहाँ रुकते ही एक आदमी झुण्डमेंसे बाहर निकल आया और उनके समीप विनीत भावसे खड़ा होकर बोला। मंगेशरावको उसे पहिचानते देर न लगी। वह आदमी सवेरे गाँवकी सीमापर मिला बूढ़ा था।

'क्यों बाबा, यह क्या हो रहा है?' उन्होंने मुस्कराकर उससे पूछा।

'यह हो रहा है, साहब, हमारी फूटी किस्मतका फैसला!' बूढ़ेने खिन्न मनसे उत्तर दिया और छन-भर रुकनेके बाद फिर बोला—भवानी माताकी पूजा हो रही है!

परन्तु मंगेशरावकी समझमें कुछ न आया। बूढ़ेने यह भाँप लिया और उन्हें समझानेके इरादेसे विस्तारपूर्वक कहने लगा—

'पाँच साल तो किसी तरह अधपेट खाकर निकाले; परन्तु अब बाल-बच्चों और जानवरोंका त्रास नहीं देखा जाता। इस बार यह आशा बँधी थी कि छोटे और बड़े मालिकोंमें समझौता हो जायगा परन्तु इधर आठ-दस दिनकी वारदातोंने उसे भी मिट्टीमें मिला दिया। अड़ोस-पड़ोसके सभी खेतोंमें जुताई होने लगी है। कहीं-कहीं तो सातों बार हल चल चुके हैं। एक सिर्फ हमारे खेतोंमें जो छाती तक पानी भरा था वह अब भी बरकरार है। कोई आशा बाक़ी नहीं! इस लिए बापदादोंके इस गाँव और अपने घरद्वारको राम-रामकर निकल जाएँगे भीख माँगने। जिसको जिधर रास्ता मिला उधरही चल देगा। कोई मुरगाँव जाकर सड़कपर गिट्टी कूटेंगे और कोई पणजीमें हमाली करेंगे। कुछ लोग अपने नाते-रिश्तेवालोंके खेतोंपर मेहनत-मजूरी कर पेट भरेंगे! और चारा ही क्या है? गाँव छोड़नेसे पहले माता हाथ-पाटली भवानीका हुकुम लेनेका काम रह गया था। वह भी आज निपटाये लेते हैं। भवानी माताकी इजाजत तो मिल जाएगी। बिलकुल तै है। आसार अच्छे दिखाई दे रहे हैं! परसों ही लड़के शिकारके लिए गये थे और आज सवेरे लौट आये हैं। पिछले पाँच-दस वर्षोंमें ऐसा तो कभी हुआ ही नहीं कि शिकारको जाएँ और उसी दिन शिकार हाथ लग जाय। भटकते-भटकते पाँच-सात दिन हो जाते थे तब कहीं शिकार मिलता था। कई बार तो पूरे पन्द्रह दिन पाँव तोड़ने के बाद भी खाली हाथ ही पूजा करना पड़ी है! इधर कुछ वर्षोंसे जंगलोंमें शिकार ही नहीं मिलता तो कोई क्या करे? मेरे आजाके जमानेमें इन्हीं जंगलोंमें हाथियोंके झुण्डके झुण्ड फिरा करते थे! परन्तु इस बार तो भवानी माताकी बड़ी ही मेहर हुई। जंगलमें घुसनेकी देर थी। पहले ही हमलेमें चार सूअर और दो हिरण हाथ लगे। आज रातको देवीकी पूजा की जाएगी और भोग लगाया जायगा। अब देखना है कि भोग लेकर भवानी माता क्या हुकुम देती है!'

इसी समय मंदिरके दरवाजेपरसे किसीने आवाज़ दी—चलो, सब जने भोग लगाने आओ! यह सुनते ही बूढ़ेने अपनी बात समाप्त की और 'इस ग़रीबको भूल मत जाना, साहब!' कहता हुआ शीघ्रतापूर्वक मन्दिरकी ओर चला गया!

मंगेशराव भी अन्तिम बार उस जमघटकी ओर दृष्टि डाल आगे बढ़ गये।

इस बातको दो सप्ताह हो गये। परन्तु इन दो सप्ताहोंमें ही गाँवमें कितना परिवर्तन होगया! बाँध टूट जानेके कारण पिछले पाँच वर्षोंसे खेतीका तो लगभग सभी काम बन्द हो गया था। परन्तु किसान अपने उदर-निर्वाहके लिए दिनभर जो छोटे-मोटे अन्य बीसियों काम-धन्धे किया करते थे वे भी अब कम हो चले। शाक-भाजी और फल-फूलोंकी यहाँ-वहाँ दिखाई देनेवाली छोटी-छोटी बाड़ियाँ सूखने लगी थीं। आम, कटहल, केला आदि फल-वृक्षोंके सभी फल गिरा लिये जानेके कारण वे नङ्गे हो गये थे। हर क़दमपर सुनाई देनेवाली गाय-भैंस और बकरीकी आवाज़ सुन पड़ना बन्द हो गई थी और उनकी मनोहर चहल-पहलके बदले सन्नाटा छाने लगा था! गाँवमें यहाँ-वहाँ दीख पड़नेवाली घासकी गंजियाँ, कण्डोंके ढेर, बाँसके गट्ठर और नारियलकी पत्तियोंके बोझ लुप्त होने लगे थे। घास-फूससे छाये, गोबरसे लिपे-पुते, साफ-सुथरे झोंपड़े, जो सारे गाँवमें फैले हुए थे एकके बाद एक उठने लगे। रास्तेपर, नदी किनारे, मैदान-जंगल और पहाड़की चोटीपर दिखाई देनेवाले कुनबियोंके भोले भाले और आश्वस्त चेहरे अब विरल होने लगे थे। बढ़ई और लुहारके झोंपड़ोंसे सुनाई पड़नेवाली खटर-पटर शान्त हो गई थी। ऐसा लगता था मानों इस गाँवसे जीवन और चैतन्य सदाके लिए विदा हो गये हों।

पन्द्रह दिन पहले ग्रामीणोंने गाँव छोड़कर अन्यत्र जानेके लिए देवीसे जो आज्ञा माँगी थी वह उन्हें मिल गई थी। देवीने पुजारीके शरीरमें प्रवेश कर उन्हें यह आश्वासन भी दिया था कि 'तुम कहीं जाओ, सर्वत्र मेरी कृपा-दृष्टि तुमपर बनी रहेगी!' शताब्दियोंसे चिथड़े पहनकर उस गाँवमें बसनेवाली अचल लक्ष्मी उस दिनसे चलायमान हो गई! किसानोंके छोटे-बड़े झुण्ड प्रतिदिन गाँव छोड़ने लगे। और आज बाक़ी बचे हुए सब लोग अपने बापदादोंकी उस भूमिको छोड़कर जा रहे थे।

उन्होंने अपने जानवर और खेतीका अन्य सामान तो पहले ही पास-पड़ोसके गाँवोंमें बेच दिया था। सम्पत्तिके नामपर उनके पास जो मिट्टीके दो-चार घड़े और चिथड़ोंकी गठरियाँ थीं उन्हें उन्होंने अपने सिरपर उठा लिया था। उनके पीछे-पीछे गाँवके कुछ दुबले-पतले अस्थिशेष कुत्ते थे, जो उनका साथ छोड़ना नहीं चाहते थे।

जानेसे पूर्व ये सब लोग बाबासाहबकी कोठीके हातेमें जमा हुए और 'मालिक आपके टुकड़ोंपर हम पले हैं; परन्तु अब आपकी सेवा भाग्यमें नहीं लिखी!' 'सरकार, हमपर दया बनाये रखना, भूल मत जाना, यह साढ़ेसाती उतरते ही आपकी सेवामें उपस्थित होंगे।' 'हमारी तकदीर ही खोटी है, आपका कोई दोष नहीं।' 'जहाँ रहेंगे वहीं आपकी और आपके बाल-बच्चोंकी खैर मनाते रहेंगे।' आदि वाक्यों-द्वारा उन्होंने स्वामि-भक्ति, कृतज्ञता और गाँव छोड़कर जानेसे होनेवाला दुःख व्यक्त किया और गाँवके मालिकसे विदा ली!

कोमल-प्रकृति बाबासाहबका हृदय भी पिघल उठा। 'भाऊ साहबसे समझौता कर मैं बाँध दुरुस्त करवानेकी व्यवस्था करता हूँ। तुम गाँव छोड़कर मत जाओ' दो-एक बार ये वाक्य उनके ओठों तक आये और लौट गये। नालेके उस पार 'छोटी हवेली' की ओर दृष्टि जाते ही प्रतिशोधकी भावना ज़ोर पकड़ती और मनकी इन उदार भावनाओंका गला घोंट देती थी।

बाबासाहबकी कोठीसे निकलकर वे लोग भाऊसाहबकी हवेलीमें गये और उनसे भी इसी तरह विदा माँग बाँधके ऊपर होकर गाँवके बाहर ले जानेवाली पगडण्डीकी ओर मुड़े।

परन्तु बाँधपर उनके पाँव भारी होने लगे! पीढ़ियोंसे वे जिसे प्यार करते आये थे जिसपर उन्हें अभिमान था और जो उनके ऐश्वर्यकी खान था, पानीमें डूबे हुए उसी विस्तृत खाजनका यह बाँध था! उनके पाँव उठते ही नहीं थे। आँखोंमें आँसू भरे हर दूसरे क़दम पर मुड़मुड़कर वे उस तालावकी ओर देखते जाते थे। उनका मन उसकी सतह पर लोटने लगा। उससे विदा होनेमें उन्हें एक अकथनीय वेदना होने लगी। बाँधपरकी पगडण्डी समाप्त हो गई। उमड़ते हुए आँसुओंको रोककर, दुःखकी आहें भरते हुए वे वहाँ क्षणभरके लिए ठिठक गये। अन्तिम बार मुड़कर उस खाजनकी ओर तथा गाँवमें जहाँ अपनी झोपड़ियाँ थीं उस जमीनकी ओर उन्होंने जी भरकर देखा! फिर मन मारकर वह बाँधसे उतरे और समतल रास्ते पर आ ही रहे थे कि उनमेंसे एक आदमी चिल्ला उठा—अरे ठहरो! वह देखो डाकियेका लड़का तालावमें फिसल गया है।

'देखो, शैतानके नातीको! डाकका थैला पानीमें ही बहता छोड़ खुद बाँधपर चढ़ आया है!' एक दूसरे आदमीने आवेशपूर्वक कहा। साथ ही एक बूढ़ा झिड़की भरे

स्वरमें बोला—ए भेसल्या, रमल्या, खड़े मुँह क्या ताकते हो? मालिकोंकी ही तो है डाक! वह छोकड़ा तो पाजी भागा घरकी तरफ़! परन्तु उसके इन शब्दोंकी सच पूछा जाय तो कोई आवश्यकता ही नहीं थी। क्योंकि उसके मुँहसे यह बात निकलनेके पहले ही उनमेंसे एक आदमीने जो बाँधपर ही खड़ा था तालाबमें कूद कर थैलेकी ओर तैरना शुरू कर दिया था।

गाँवसे दस-बारह मील दूर शहरके पोस्ट आफिससे गाँवकी डाक लाने और बाँटनेका काम वर्षोंसे एक डाकिया करता आ रहा था। वह काफी बूढ़ा हो चुका था और उसकी पेन्शनके दिन क़रीब आ लगे थे। परन्तु वह था क़िस्मतका धनी। तभी न उसको इतनी चैनकी नौकरी मिली थी! हर चौथे दिन शहरके डाकघरसे गाँवकी चिट्ठियाँ लाकर उन्हें सुविधानुसार बाबासाहब या भाऊसाहबके चबूतरे पर पटक दिया और उसकी छुट्टी हो गई! क्योंकि उस ज़रा-से गाँवमें इन दोनों घरानोंके सिवा और किसीकी चिट्ठी शायद ही कभी रहती! और यदि कभी किसी अन्य गाँववालेकी चिट्ठी रही तो उसके पास खबर पहुँच जाती और तब वह स्वयं आकर चबूतरेका कोना-कोना छानकर अपनी चिट्ठी ले जाता था! वर्षोंसे उस गाँवमें डाकके बारेमें यही परम्परा चली आ रही थी। तो यों डाकियेकी नौकरी बड़ी चैनकी थी। इधर कुछ दिनोंसे वह कभी-कभी डाक पहुँचानेका महत्त्वपूर्ण काम अपने नौ वर्षके लड़केको सौंपने लगा था; क्योंकि ढोर चराना शुरूकर वह लड़का ऐसे महत्त्वपूर्ण कार्यके लिए अपनी योग्यता प्रमाणित कर चुका था।

डाककी थैली बहकर काफी दूर चली गई थी। उसे लेकर वह आदमी थोड़ी देरमें बाँधपर चढ़ आया। बाबासाहबके साथके सेव्य-सेवक संबंधोंसे यद्यपि वह आदमी मुक्त हो चुका था, फिर भी उसकी ईमानदारी और सरलता मनके दीर्घ-कालीन संस्कारोंकी अवगणना न कर सकी।

'मालिककी डाक पहुँचाकर मैं यह आया तुम्हारे पीछे।' कम्बलसे थैलीको पोंछते हुए उसने अपने साथियोंसे कहा।

बाबासाहब अभी वहीं बैठे, टक लगाये, बाँधपर होकर जाते हुए अपने प्रजा-जनोंकी ओर देख रहे थे! बीच-बीचमें उनकी निगाहें गाँवकी निर्जनताकी

ओर भी उठ जाती थीं और वहाँकी श्मशान-शान्ति देखकर उनके हृदयमें हूक-सी उठती थी।

उनके दिमागमें विचारोंका तूफ़ान उठने और पश्चात्तापकी आगसे उनका हृदय दग्ध होने लगा। रह-रहकर उनके मनमें आता था—

'पाँच वर्षोंसे इन सैकड़ों गरीब लोगोंके पेटपर लात मारनेका पाप तो हमने किया ही था; परन्तु अब हमारा आपसी झगड़ा इनके घर-द्वारको भी ले डूबा! आज हमारे कारण ही इन बेचारोंको पथकी ठोकरें खानेके लिए बाध्य होना पड़ा। पीढ़ी दर पीढ़ी धूपमें तपकर, सर्दीमें ठिठुरकर, वर्षामें भीगकर, स्वयं अधपेट खाकर, अपने बालबच्चोंको भूखा रखकर उन्होंने हमारी श्री-वृद्धि की! यह कोठी और हमारी यह शानशौकत उन्हींके परिश्रमकी आभारी हैं। हमारा घी-मलीदा और हमारी मसनदें उन्हींके अस्थिपंजरों पर टिकी हुई हैं! उन्हींकी भौंहके पसीने और हलके फलोंने हमारे इस गाँवको स्वर्ण-भूमिकी उपमा प्रदान की और इस उपमाको चरितार्थ किया! फिर भी धरतीपर परिश्रम करनेवालोंका उसपर कानूनन कोई अधिकार नहीं! मानवीय कानून-कायदे उन्हें वंचित रखते हैं; परन्तु क्या ईश्वरीय नियम भी यही हैं? दूसरोंके मुँहकी रोटी छीननेकी हमारी यह निर्दयता क्या ईश्वरके यहाँ क्षम्य समझी जाएगी?

वह इन्हीं विचारोंमें तल्लीन हो रहे थे कि वह कुनबी डाककी थैली लिये वहाँ आ पहुँचा। बाबासाहबके हाथमें थैली देते हुए उसने बाँधपरका सारा किस्सा उन्हें कह सुनाया। सम्बन्ध-विच्छेद हो जानेके बाद भी उसकी ऐसी स्वामी-भक्ति देखकर बाबासाहबका हृदय भर आया!

'भोजनका समय होगया है। अब खाकर ही जाना, महतो!' बाबासाहबने अपनी प्रसन्नता व्यक्त करते हुए अति सौम्य स्वरमें कहा! फिर डाकियेको इस तरह कामसे जी चुरानेके लिए भला-बुरा कहते हुए उन्होंनें थैलीमें हाथ डालकर पत्र बाहर निकाले। अपरिचित हस्ताक्षरोंवाले एक पत्रपर निगाह पड़ते ही उन्होंने सबसे पहले उसीको उत्सुकतापूर्वक खोला। और वह जैसे-जैसे उसे पढ़ते गये उनका आश्चर्य बढ़ता गया।

'...इस पत्रमें सबसे अधिक खुशीकी और महत्वपूर्ण बात जो मैं लिखने जा रहा हूँ वह उस ताम्रपत्रसे सम्बन्धित है, जो आपके खेतमेंसे मिला है। उसे

आप एक अत्यन्त अनमोल ऐतिहासिक रत्न ही समझिए। उसपर खुदे हुए लेखकी आरम्भ और मध्यकी कुछ लकीरें घिस जानेसे अस्पष्ट हो गई हैं फिर भी उनका अर्थ लगानेमें कोई कठिनाई नहीं पड़ती। आपके अवलोकनार्थ मैं इस पत्रके साथ मूल संस्कृत लेखकी प्रतिलिपि और उसका अनुवाद भेज रहा हूँ। आपके चाचा साहब एक प्रसिद्ध पुरातत्त्ववेत्ता और इतिहासज्ञ थे। और स्वयं आप भी अवश्य इसमें कुछ अधिकार रखते होंगे। आपके गाँवका खाजन, उसका बाँध, ग्रामदेवताका हाथ-पाटली भवानी नाम, एक खेतका हाथ-पाटलीवाले खेतके नामसे पुकारा जाना, कुछ वर्ष पूर्व आपके गाँवके जंगलोंमें हाथियोंके झुण्डका पाया जाना और इस संस्कृत लेखमें प्रयुक्त हस्तिनिपट्टन शब्दका पारस्परिक सम्बन्ध आप आसानीसे लगा सकेंगे।

अन्तमें आप जैसे विद्वान पुरुषको यह लिखना तो अनावश्यक ही होगा कि इस समय जब कि आपके गाँवमें दुःखद् घटनाएँ घट रही हों इस ताम्रपत्रका उपलब्ध होना एक ईश्वरीय संकेत है।

आपका कृपाकांक्षी

मंगेश सर्वोत्तम साखरदांडे

पत्र समाप्तकर उन्होंने अधीरतापूर्वक उस लेखको पढ़ना शुरू किया।

" .... जातः श्रीनरवर्मेति करैरानन्दयञ्जगत् ॥

यश्चालुक्यं निजे राज्येऽस्थापयद्विजितालुपः ॥

कदंबितकदंबोऽलंकृतार्थी कृतवान्प्रभुः ॥

शौर्यश्रीपरिरंभ विश्रमभुजोद्दंडः प्रचंडोद्यमः

चंचच्चंद्रमरीचि निर्मलयशः पुंजैर्जगद्राजयन् ॥

चक्रे गोपकपट्टने स्थिरपदं ....

....

तस्मादभ्युदगाद्दिवोदितरविर्माद्यन्मही पद्मिनीम् ॥

आशा पूर्तिकरैःकरैः स विजयादित्यः समानंदयन् ॥

....

सदनंतवीरविक्रमकदंबकादंबसंपदां धाम्नः ॥

तदनंतवीरविक्रमनरसिंह इति विबुधैकसन्नाम्नः ॥

विलोक्य परितः सर्वान्
चरतो द्विपयूथकान्
तत्रैव स्थापयामास
हस्तिनीपट्टनं मुदा ॥

... ...

सततं सरितः पूराद् बन्वभंगवशात्कृषिः ॥
पीड्यते देत्रताक्षोभनिदानोऽयमुपप्लवः ।
तन्निरासाय तत्रत्यैः सर्वैः कृषिवलैर्ध्रुवम् ॥
प्रत्येकस्मात्कुलादेको वलिः कृच्छ्रात्समर्प्यते ॥
ततः सा क्षेत्रिया भूमिः निराबाधं स्थिरा भवत्
विश्रुत्य तेषां कृषिभूमिभक्तिं मुदायुतो भूमिपति कदंबः
यावत्सुधांशुर्कमहं महीं ददे भूमीन्दुवेदाधिकभूमितेऽब्दे
सामान्योयं धर्मसेतुनृपाणां काले काले पालनीयो भवाद्भिः
सर्वानेतान्भाविनः पार्थिवेंद्रान् भूयो भूयो याचते रामभद्रः

स्वदत्तां परदत्तां वा
यो हरेत वसुंधरा ।
षष्टिर्वर्ष सहस्राणि
विष्टायां जायते कृमिः ॥ ''

[............ अपने हाथोंसे जगत्को सुख पहुँचानेवाले नरवर्माने जन्म लेकर कदंबोंकी सहायतासे अलुपोंको जीता और उनपर चालुक्यों की सार्वभौम सत्ता स्थापित की और स्वयं अत्यन्त यशस्वी राजा हुआ। शूरता ही जिसका विश्राम था, प्रचण्ड उद्यमशीलता जिसकी भुजाएँ थीं, चंचल चन्द्रमाकी निष्कलंक किरणोंके समान जिसने अपनी निर्मल यश-चान्द्रिकासे जगत्को सुशोभित किया था, जिसने गोपक (गोवा नगर) को स्थायित्व प्रदान किया, ... आशापूर्णकारी हाथोंरूपी किरणोंसे पृथ्वी रूपी कमलिनीको विकसित करनेवाला जिसका विजयसूर्य उदित हुआ .... अनन्त वीरश्रीसे सम्पन्न, कदम्ब होनेके कारण कदम्बोंकी सम्पत्तिका स्वामी वह नरवर्मा राजा विद्वानों द्वारा अनन्तवीर विक्रम नरसिंह नामसे अलंकृत

हुआ । इस स्थानके चारों ओर हाथियोंके झुण्डको घूमते हुए देख प्रसन्न होकर उसने यहाँ यह हस्तिनिपट्टन बसाया । ....नदीका प्रवाह प्रतिवर्ष यहाँके बाँधको तोड़कर खेतीको नष्ट कर दिया करता था । इसे देवताओंका कोप समझकर उस दैव-कोपके निवारणार्थ यहाँके प्रत्येक खेतीहरने अपने-अपने घरसे एक व्यक्तिकी बलि दी । तबसे उनकी विपत्ति टल गई और यह कृषिभूमि निर्बाधरूपसे खेतीके काममें आने लगी ।

उन लोगोंकी खेतीके प्रति ऐसी भक्ति सुनकर मैं कदम्ब भूपति अत्यन्त प्रसन्न हू और १४११ शक संवत्में उन्हें यावश्चन्द्रदिवाकरो यह भूमि दानमें देता हूँ ।

अपनी या दूसरोंके द्वारा दानमें दी हुई भूमिका अपहरण करनेवाला साठ हज़ार वर्ष तक मलका कीड़ा होकर रहता है—धर्मकी इस आज्ञाका तुम सभी धर्मनिष्ठ सार्वभौम राजा प्रत्येक युगमें पालन करो, ऐसा वारंवार रामचन्द्र विनयपूर्वक कहते हैं ।]

ताम्रपत्रके लेखकी यह प्रतिलिपि पढ़कर बाबासाहबके श्वास-प्रश्वासकी गति बढ़ गई । भौंहोंमें बल पड़ गये । वह चबूतरेपर और आँगनमें बेचैनीसे चक्कर काटने लगे ।

थोड़ी देर बाद उन्होंने वह लेख फिरसे पढ़ना शुरू किया । एक बार पढ़ा, दो बार पढ़ा, तीन-चार बार पढ़ा !

'साक्षात् मर्यादापुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्रका यह आदेश है । इस भरतखंडमें आज दिन तक सैकड़ों सम्राट् और चक्रवर्ती राजा हो गये । कई युद्ध हुए ! आक्रमण हुए ! अनेकों बार रक्तकी नदियाँ बहाकर उन्होंने एक दूसरोंके साम्राज्योंका अपहरण किया ! परन्तु दशरथ कुलोत्पन्न रामचन्द्रके बतलाये हुए एक इस नियमका उनमेंसे किसीने कभी उल्लंघन नहीं किया !....वंश-परम्परासे हाथोंमें हल पकड़नेवाले ये किसान ही धरती माताके सच्चे पुत्र हैं ! इन्हें माकी छातीसे दूर करनेका पाप-पूर्ण साहस सर्व सत्ता-सम्पन्न चक्रवर्ती राजा भी नहीं कर सके ! आज वही भयंकर पाप मैं, एक अति क्षुद्र जीव जिसकी केवल तीन पीढ़ियाँ इस खाजनकी मालिक रहीं, बिलकुल निश्शङ्क होकर कर रहा हूँ !...उस धर्मात्मा कदम्ब राजासे दानमें मिली हुई भूमिका जो लोग पिछले पाँच सौ वर्षोंसे उपभोग करते आये हैं उसका अपहरण अपने एक अति क्षुद्र स्वार्थके वशीभूत होकर मुझे कदापि नहीं करना चाहिये !...

मंगेशरावने सच ही लिखा है कि यह एक ईश्वरीय संकेत है! मा हाथ-पाटली भवानी, यह ताम्रपत्र ठीक इसी समय भेजकर तूने इस पापीकी आँखें खोल दी हैं। यदि अब भी मैं तेरे संकेतका पालन न करूँ तो मुझ अधमके भाग्यमें नरक-कीट होना ही बदा है!'

बाबासाहबकी विवेकबुद्धि उनके मनका संचालन करने लगी।

'महतो!' उन्होंने ज़ोरकी आवाज़में पुकारा!

महतोकी रोज़ी छुड़ानेमें मूल कारण उसके मालिक ही थे, परन्तु उन्हींसे भोजनका निमन्त्रण पाकर वह उनकी उदारता पर बैठा मुग्ध हो रहा था! उनकी आवाज़ सुनते ही वह विनयपूर्वक उनके सामने जा खड़ा हुआ!

'इसी समय यहाँ से जा!' उन्होंने क्षुब्ध होकर कहा।

बेचारे महतोके तो देवता ही कूच कर गये! उसने गर्दन झुका ली। मालिककी नाराज़गीका कोई कारण उसकी समझमें नहीं आया। वह दुःख-सागरमें डूबने-उतराने लगा!

'जितना जल्दी हो सके जा! और आज गाँव छोड़कर जानेवाले प्रत्येक आदमीको वापिस बुला ला। उनसे कहना कि आजसे दोनों पट्टीदारों का झगड़ा खतम हो गया। दोनोंमें समझौता हो गया। आठ दिनके अन्दर बाँध दुरुस्त हो जायगा और पूनोंसे पहले खाजन जुताईके लिए खाली करवा दिया जायगा!'

मालिकके मुँहसे ये शब्द सुनकर महतोके आश्चर्यका ठिकाना न रहा! उसे लगा कि कहीं वह सपना तो नहीं देख रहा है। बड़ी देर तक बाबासाहबके चेहरेकी ओर ताकता वह बुत बना खड़ा रहा!

'अरे, यों अजगरकी तरह मुँह बाये खड़ा क्या है?' बाबासाहबकी यह गर्जना और उसके साथ ही साथ 'कम्बख्त' की शिष्ट-मिष्ट गाली सुनकर महतोको होश आया।

चबूतरेपरसे कूदकर वह बाहरकी ओर भागा! अब तक तो गाँववाले दो-तीन मील दूर पहुँच गये होंगे! परन्तु इस बातकी ज़रा भी पर्वाह किये बिना वह उनका नाम पुकारता हुआ बाँध परसे तीरकी तरह लपका चला गया! उसे यों खुशीमें मस्त चिल्लाते और दौड़ते हुए देखकर देखनेवालेको उस समय यही लगता कि वह कोई पागल है।

वन्देमातरम्

वन्देमातरम्

चैत्र महीनेका वह एक रविवार था। कुंडई गाँवकी हमारी छोटी-सी पुश्तैनी बगियामें नारियल उतारनेका जो काम कई दिनोंसे पिछड़ता चला आ रहा था उसे उस दिन किसी तरह निपटाकर सूर्यास्त होते-होते मैं शीघ्रतापूर्वक नदी-किनारे पहुँचा। बंकू खलासी वहाँ पहलेसे ही अपनी नाव लगाये खड़ा मेरी प्रतीक्षा कर रहा था। उसका फूला हुआ चेहरा देखकर मैं समझ गया कि बूढ़ा ज़रूर ही मुझपर नाराज़ होगया है। उसका मेरे साथ यह करार हो चुका था कि वह कल सबेरा होनेसे पूर्व मुझे नावके द्वारा पणजी पहुँच देगा; और इसके लिए उसने मुझसे यह वचन ले लिया था कि मैं भाटा शुरू होते ही नदी-किनारे पहुँच जाऊँगा। परन्तु मैं अपना वचन निभा नहीं सका और निश्चित समयसे कोई घंटे-डेढ़ घंटे बाद पहुँचा!

मैंने नावमें पाँव रखा ही था कि बंकूने डाँड़ अड़ाकर नाव जोरसे ठेली और नाव पानीमें आगे बढ़ी कि इतनेमें मुझे एक खास बात याद आ गई और मैं बोला—ज़रा ठहरना तो बंकू। नाव फिरसे किनारे लगाना होगी।

अब वह अधिक जब्त न कर सका और अपनी टकसाली भाषामें मेरी इस देर करनेकी आदतकी लानत मलामत कर चला! नाविकशास्त्रमें समयकी पाबन्दीके महत्त्वपर प्रमाणोंका ढेर लगाते हुए उसने एक लेक्चर ही झाड़ दिया और अन्तमें मेरे सामने यह रोना ले बैठा कि इससे पूर्व यात्रियोंकी अनियमितताके कारण उसे कितनी क्या मुसीबतें उठानी पड़ी हैं! परन्तु जब मैंने उसे अच्छी तरह ठोक-बजाकर यह बतला दिया कि नदी किनारेवाले हरि बाबाके घर मिले बिना मैं कुंडईसे जा ही नहीं सकता तो उसे अपनी नाराज़गीके बावजूद भी नौका किनारे लगाना ही पड़ी। नाव तीरपर लगते ही मैं उतर पड़ा और तेज़ीसे चलने लगा।

यह हरिबाबा पणजीके मेरे पड़ोसी लखमा भाऊके समधी होते थे। लखमा भाऊकी लड़की सेवन्ती उनकी पतोहू थी। कुण्डई आने पर मैं सेवन्तीसे अवश्य मिलता था। उससे मिलनेका मैंने नियम ही बना लिया था; और उसमें कभी व्यवधान नहीं होने देता था। परन्तु आज कामकी भीड़में मुझे उससे मिलने जानेकी सुध ही न रही। नावमें बैठ जानेके बाद कहीं याद आया। देरसे ही सही, परन्तु याद आ गया यह अच्छा ही हुआ नहीं तो पणजी पहुँचने पर लखमा भाऊके इस प्रश्नका कि सेवन्ती अच्छी तरहसे तो है? मैं क्या उत्तर देता? और लखमा भाऊ तथा उनकी पत्नी मुझसे उत्तर न पाकर कितने निराश होते? सेवन्तीसे बिना मिले चले जानेका स्वयं मुझे भी कुछ कम रंज न होता! मेरा उसपर उतना ही स्नेह है! उसका बचपन मेरी गोदमें खेल-कूदकर बीता। यद्यपि मैं उसका मुँहबोला चाचा ही हूँ, फिर भी वह मुझे अपने सगे चाचासे भी अधिक मानती है और सदैव उसका मन मेरी ओर लगा रहता है। यह सुनते ही कि मैं कुण्डई आनेवाला हूँ उसकी खुशीका ठिकाना न रहता और वह उत्कण्ठासे मेरे आगमनकी प्रतीक्षा करने लगती। मैं भी कितना ही अधिक काम क्यों न हो कुण्डई जानेपर उससे अवश्य मिलता था।

पाँच मिनटके अन्दर ही मैं हरि बाबाके घर पहुँच गया। बाहर चबूतरे पर सेवन्तीकी सास बैठी बत्तियाँ बँट रही थीं। मुझे देखते ही, क्योंकि मैं इस बार बहुत दिनोंमें गया था, वह प्रसन्न हो गईं और हाथमेंकी रुई एक ओर रखते हुए नित्यनैमित्तिक कुशल प्रश्न पूछने लगीं। उनके प्रश्नोंका शीघ्र और संक्षिप्त उत्तर देकर मैंने पूछा—सेवन्ती कहाँ है?

'ऊपर है भैया, चले जाओ! पिछले दो-एक दिनोंसे उसे और मँझले लड़केको बुखारने आ घेरा है!'—वह बोलीं।

मैं अन्दर जाकर ज़ीना चढ़ने लगा। अभी दो ही ज़ीने चढ़ा हूँगा कि मेरे आश्चर्य का ठिकाना न रहा! मैं कान लगाकर सुनने लगा। ऊपरके कमरेमेंसे किसीके गानेकी धीमी परन्तु मधुर आवाज़ आ रही थी। दो-चार सीढ़ियाँ और चढ़नेके बाद एक लयपूर्ण कम्पित कण्ठ-स्वरमें स्पष्ट सुनाई दिया—

"वन्देऽमाऽऽतरम्......सुजलांऽसुफलांऽ......

हमारे सुप्रसिद्ध राष्ट्र-गीत 'वन्देमातरम्' की कड़ियाँ मैं इससे पहले अनेकों बार लोगोंको गाते हुए सुन चुका था और स्वयं पढ़ चुका था; परन्तु मुझे स्वप्नमें भी

यह खयाल नहीं था कि यह गीत हरि बाबाके घरमें सुननेको मिलेगा ! मैंने आवाज़ पहिचाननेका प्रयत्न किया। थोड़ी देर सुननेके बाद मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि आवाज़ सेवन्तीकी ही है! मैं आश्चर्य-सागरमें गोते लगाने लगा ! मैंने पहले कभी सेवन्तीको गाते नहीं सुना था। उसके लिए यह बिलकुल ही असम्भव था; क्योंकि उसकी ससुराल और नेहर दोनों ही बिलकुल बाबा-पन्थी थे! वह उसी कड़ीको घुमा-फिराकर, काफी उतार-चढ़ावके साथ बारम्बार दुहराये चली जा रही थी! सुनकर मेरे मनमें अनेक तरहके विचारोंका अम्बार जमा होने लगा!

कहाँ सेवन्ती और कहाँ 'वन्देमातरम्'? परन्तु वही सेवन्ती 'वन्देमातरम्' गा रही थी। केवल गा ही नहीं रही थी उसके शब्द-शब्दमें लीन होगई थी! यदि लीन न हो जाती तो सुननेवालेके हृदयको हिला देनेकी शक्ति उसके स्वरमें आती ही कहाँसे? मुझे आश्चर्य होने लगा कि निरक्षर सेवन्तीमें इस गीतकी उदात्त भावनाएँ आत्मसात् करनेकी बुद्धि कहाँसे आ गई? वह कबसे इतनी सुसंस्कृत और शिक्षित बन गई? जमानेकी रफ्तारसे पिछड़े हुए उस गँवई गाँवके एक परिवारकी बहू सेवन्तीको कहीं किसी जादूकी छड़ीने पलक मारते ही विदुषी तो नहीं बना दिया हो!

मैंने अपने दिमाग़पर बहुत ज़ोर डाला; परन्तु मुझे कोई समाधान न मिला अन्तमें मैंने यह निश्चय किया कि क्यों न चलकर उसीसे यह पहेली बुझाई जाय? परन्तु अधबीचमें ही जाकर गीतका सारा मजा किरकिरा कर देनेको मेरा जी न चाहा! मैं वहीं खड़ा मन-प्राणसे सुनने लगा! मुझे उस स्थितिमें कोई दो-एक मिनट बीते होंगे कि अपने अन्तर्मनपरसे एक परदा हटता हुआ दिखाई दिया और एक बहुत पुराना दृश्य मेरे अन्तर्चक्षुओंके आगे आ खड़ा हुआ!

बहुत पुरानी बात थी वह! उस घटनाको घटे आज सोलह वर्ष बीत चुके थे! यदि आजका अनपेक्षित प्रसंग कारण न हुआ होता तो मुझे उस घटनाकी याद शायद ही आती! क्षण-भरमें उस घटनासे सम्बन्धित अनेकों चित्र एकके बाद एक सिनेमाके चलचित्रों की भाँति मेरे सामनेसे गुजरने लगे! अपने जीवन-कालमें जो घटनाएँ मनको ठेस पहुँचाकर उथल-पुथल मचानेवाली होती हैं वे मानस-पटल पर बहुत ही गहरी अंकित हो जाती हैं। समयके कितने ही स्तर उन्हें मिटानेमें समर्थ नहीं हो पाते! कभी-कभी तो एक ज़रा-सा कारण ही काफी होता है। वह एक्सरेका काम करता है। और समयकी विभिन्न मोटी

तहोंको भेदकर उन पुरानी घटनाओंको अभी कलकी घटनाओंकी तरह मानस-पटल पर चित्रित कर देता है।

मुझे अच्छी तरह याद है। सन् १९११ की ही बात थी! मैं चार-पाँच दिनकी यात्राके बाद हाल ही घर लौटा था। बैलगाड़ी और नावकी उकता देनेवाली लम्बी यात्राने मुझे बेहद थका मारा था। उस समय मुझे सेवन्तीकी याद हो आई। उसकी और मेरी उम्रमें जमीन-आसमानका अन्तर था! परन्तु जब कभी किसी कारणवश मेरा शरीर या मन क्लान्त होते तो मुझे उसकी सोहबतके सिवा और कुछ अच्छा नहीं लगता था। उन दिनों उसके साथ हँस-खेलकर, उसकी निर्दोष खिलखिलाहट सुनकर, उसका रूठना-मचलना देखकर और उसकी मीठी वाणी सुनकर मैं अक्सर अपने जीवन-संघर्षकी निराशाओं और करारी चोटोंको क्षणभरके लिए भुला दिया करता था।

मेरा और सेवन्तीका मकान करीब-करीब एक दूसरेसे सटा हुआ था। बीचमें मुश्किलसे पाँच-सात हाथका अन्तर होगा! मेरा लिखने-पढ़नेका कमरा उसके घरकी बगलकी ओर था और उसके ठीक सामने अपने घरके एक खाली कमरेमें वह तीनेक वर्षके अपने छोटे भाई बाबू या टोले-मुहल्लेकी अन्य लड़कियोंके साथ दिनभर खेला करती थी। कमरोंकी ऐसी स्थितिके कारण यदि मैं अपने कमरे की खिड़कीमें कुर्सी लगाकर बैठ जाता तो सेवन्तीके यहाँ गये बिना ही घण्टों हमारा हँसना, बोलना और खेलना होता रहता था! मैं वहाँ हुआ तो उसे भी क्षण-क्षणपर मेरी आवश्यकता पड़ती रहती थी। गुड़ियाको सजाने, उसे रेशमी साड़ी और उसके नाक-कान छेदकर नथ आदि पहिनानेके उत्तरदायित्वपूर्ण काम वह स्वयं न कर मुझे ही सौंप दिया करती थी और खिड़कीकी राह गुड़ियाको धीरेसे मेरी ओर फेंक देती थी! कपाल की बेंदीके छोटे या बड़े होनेके मामलेमें अपने हाथमें शीशा होते हुए भी वह मेरे निर्णयपर ही अधिक निर्भर करती थी। जब कभी छोटा बाबू बिगड़कर सत्याग्रह कर देता—उसके सत्याग्रह अधिकाँश अत्याचारपूर्ण ही होते थे—और उसे रूला मारता तो वह फर्याद लेकर मेरे पास ही आती थी। क्योंकि उसे पक्का विश्वास हो गया था कि उन दोनोंमें समझौता करवानेका महा दुर्धर्ष काम मेरे सिवा और कोई कर ही नहीं सकता। कहनेका साराँश यह कि इस तरह हमारा प्रेम अनिवार्य रूपसे अन्योन्याश्रयी था।

उस दिन कमरेमें जाकर मैंने नित्यकी तरह अपनी कुर्सी खिड़कीके पास खींची और आराम करनेके इरादेसे उसपर लेटते हुए सेवन्तीको दो-एक आवाज़ें दीं; परन्तु उसका कोई जवाब नहीं मिला ! साँझके समय या तो वह गुड़ियाके ब्याह, ज्योनार आदि विवाह-कार्योंमें या फिर आँख-मिचौनी, झूमर, सास-बहू आदि खेलोंकी धूमधाममें व्यस्त रहा करती थी ! उससे कोई उत्तर न पाकर मैंने पता लगानेके इरादेसे खड़े होकर गर्दन खिड़कीसे बाहर निकाली और उसके कमरेकी ओर झाँका। वहाँ मुझे एक बिलकुल ही नया और अनोखा दृश्य दिखाई दिया।

सारे कमरेमें बेतरतीब फैले पड़े रहनेवाले सेवन्तीके खिलौनोंका कहीं पता ही नहीं था। उनके स्थानपर कमरेमें दो-एक बक्से, बिछौने और चटाइयाँ सलीकेसे रखी हुई थीं और एक चटाईपर कोई दो अपरिचित व्यक्ति बैठे थे। उनमेंसे एककी उम्र अट्ठारह-उन्नीस और दूसरेकी बीस-बाईस वर्षके लगभग होगी ! और उन दोनोंके बदनपर बंगाली काटके एक-एक कुर्ते और धोतीके सिवा और कोई कपड़ा नहीं था।

अपनी चार ही पाँच दिनकी अनुपस्थितिमें सेवन्तीके कमरेकी यह कायापलट देखकर मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। और इससे भी अधिक आश्चर्य यह देखकर हुआ कि छोटा बाबू और सेवन्ती उन दोनों अपरिचितोंसे कितना हिलमिल गये हैं !

उन दोनोंमेंसे एक युवक हाथमें दिलरुबा लिये उसके तार मिला रहा था और सेवन्ती उसके इस कामकी ओर कुतूहलपूर्वक टक लगाये उससे सटी बैठी थी। उधर बाबू दूसरेकी गोदमें आसन जमाये उसके कुर्तेके सुनहरी बटनोंको हथियानेके प्रयत्नोंमें मशगूल था। मैं बड़ी देर तक खड़ा यही दृश्य देखता रहा। अन्तमें दिलरुबावाले युवकने तार मिलानेका काम समाप्त किया और अंगुलीसे प्रत्येक तारको बजाकर उनकी ध्वनिकी परीक्षा की। तारोंका टुनटुनाना सुनकर सेवन्तीका चेहरा प्रसन्नता-व्यंजित मुस्कराहटसे दीप्त हो उठा। वह उससे थोड़ा परे हटकर बाजा सुननेके इरादेसे सँभलकर बैठ गई और फिर पुरखिनकी तरह बाबूसे बोली—अब सुरेशमामाकी गोदसे उतर जा और यहाँ आकर बैठ। उन्हें गाने नहीं देगा ? अब वह गायेंगे और वीरेशमामा दिलरुबा बजाएँगे। आ, झटपट उतर आ !

बाबू तुरन्त सुरेशमामाकी गोदसे उतरकर उसके पास जा बैठा। मेरी जानकारीमें यह पहला ही अवसर था जब उसने बिना किसी ननूनचके इतनी आसानीसे अपनी जीजीका कहना मान लिया था।

धीरे-धीरे वीरेशकी अंगुलियाँ चपलतासे दिलरुबाके तारोंपर नाचने और एक अत्यन्त मधुर नादकी सृष्टि करने लगीं। थोड़ी ही देर बाद सुरेशने 'आमार देश' नामक एक अति सुप्रसिद्ध बंगाली गीत गाना आरम्भ किया और वीरेशके दिलरुबाने भी उसके स्वरमें स्वर मिलाया। जैसे-जैसे गाना-बजाना जमता गया सेवन्तीका चेहरा भी उतना ही अधिक प्रफुल्लित होता गया। वह बीच-बीचमें खिलखिलाकर अपने मनका आनन्द प्रकट करने लगी। बाबूके चेहरेपर भी आनन्द, विस्मय और कुतूहल छा गये। गायन-वादनके उस अभूतपूर्व चमत्कारने उसके आगे एक पहेली ही खड़ी कर दी और उस पहेलीका समाधान पानेके लिए वह बारी-बारीसे सुरेश, वीरेश और सेवन्तीके चेहरोंकी ओर अपनी प्रश्नसूचक दृष्टि फिराने लगा!

अन्तमें सुरेशने गाना समाप्त कर सेवन्तीसे पूछा—क्यों सेवन्ती, कैसा क्या लगा गाना? अब तो बस? उसकी भाषा हिन्दी, मराठी और बंगालीका एक अजीब मिश्रण थी। तीनों भाषाओंसे अपरिचित होते हुए भी सेवन्ती उसका आशय झटसे समझ गई और अत्यन्त आग्रहपूर्वक बोली—बस मामा, एक गीत और!

सुरेश और वीरेशने मुस्कराकर एक दूसरेकी ओर देखा और उसका आग्रह स्वीकार कर लिया। सुरेश फिर गाने लगा। इस बार उसने गाया:

'वन्दे ऽ ऽ मा ऽ तरम्...वन्दे ऽ ...'

यह नया गीत सुरेशकी खास पसन्दगीका होना चाहिये। उसके गलेसे बाहर निकलनेवाला प्रत्येक शब्द, प्रत्येक अलाप करुणा और माधुर्यसे इतना ओतप्रोत था कि उनका अर्थ सुननेवालोंकी समझमें भले ही न आये परन्तु उनके हृदय तो उस समय अवश्य ही गद्-गद् हो जाते! पहला गीत सुनकर सेवन्तीका हृदय खुशीसे नाच उठा था! परन्तु इस दूसरे गीतका प्रभाव तो उससे भी अधिक हुआ! जैसे-जैसे गीत आगे बढ़ता गया उसके हृदयसे करुणाका स्रोत प्रवाहित हो उठा। सुरेशके चेहरे पर एक टक लगे हुए उसके नेत्रोंमें पानी भर आया और थोड़ी देर बाद उसके गालोंपर आँसू टपकने लगे। वीरेश बाबूकी दृष्टि उस ओर पड़तेही उन्होंने अपना दिलरुबा एक ओर रख दिया और सुरेशको आँखोंसे कुछ संकेत करते हुए बंगालीमें दो-एक शब्द कहे। सुरेशने

तत्काल अपना गाना बन्द कर दिया और सेवन्तीकी ओर दृष्टि जाते ही अपनी धोतीके छोरसे चटपट उसकी आँखें पोंछ दीं ! फिर वह उठकर खड़ा हो गया और उसका तथा बाबूका हाथ अपने हाथोंमें पकड़ता हुआ बोला—चलो, अब हम लोग बाहर पहाड़ी पर घूम आएँ ! और वे चारों कमरेसे बाहर निकल गये।

मैं बड़ी देर तक वहीं कुर्सी पर बैठा सेवन्तीके कमरेमें जो कुछ देखा था उसपर आश्चर्यचकित मनसे विचार करता रहा। पन्द्रह-बीस मिनट बाद समीपके गिर्जा-घरसे साँझका घण्टा बजनेकी आवाज़ सुनाई दी। उस आवाज़को सुनकर मुझे चेत हुआ और मैं भीतर जानेके लिए कुर्सीपरसे उठा। मैं अभी उठ ही रहा थी कि मुझे सेवन्तीके पिता बाहरसे आते और अपने घरकी सीढ़ियाँ चढ़ते दिखाई दिये। मैं तो उनसे मिलनेकी प्रतीक्षा ही कर रहा था। मैंने उन्हें उत्सुकतापूर्वक पूछा—कहिये लखमा भाऊ, इस कमरेमें रहनेवाले आपके यहाँ ये दो नये आदमी कौन आये हैं ?

'कोई बंगाली विद्यार्थी हैं ! चार-पाँच दिन पहले उस झरीके पास मिले और समीप आकर हिन्दीमें बोले—हम बंगाली विद्यार्थी हैं। बम्बई प्रान्तके दर्शनीय स्थान देखनेके इरादेसे घूमने निकले हैं। गोवामें यह स्थान हमें बहुत ही पसन्द आया। ऐसा सुन्दर और साफ-सुथरा शहर हमने और कहीं नहीं देखा। यहाँ हमारा विचार महीना-पन्द्रह दिन रहनेका है। यदि कहीं हमारे रहनेके लिए किरायेसे दो-एक कमरे दिलवानेकी व्यवस्था करवा दें तो बड़ी कृपा होगी। मैं सोचने लगा कि इनके उपयुक्त जगह कहाँ मिलेगी ? आप तो जानते ही हैं कि इधर शहरमें अच्छे मकानोंका मिलना कितना मुश्किल हो गया है ! अन्तमें मैंने यह सोचकर कि आदमी दिखनेमें तो शरीफ मालूम पड़ते हैं उनसे कहा—यदि महीना-पन्द्रह दिनकी ही बात हो तो मकान किराये लेनेकी कोई आवश्यकता नहीं। मैं आपको अपने यहीं एक कमरा दे सकूँगा। उन्होंने भी इसे मंजूर कर लिया। हमारा यह कमरा खाली ही पड़ा था। वे यहाँ आकर रहने लग गये।'

लखमा भाऊके इस उत्तरसे मेरी जिज्ञासा मिट गई और मैं घरके अन्दर चला गया।

दूसरे दिन मैं अपने कमरेमें बैठा कुछ लिख रहा था। इतनेमें सेवन्तीके कमरेमेंसे ज़ोरसे हँसने और खिलखिलानेकी आवाज़ सुनाई देने लगी। लिखना समाप्त-

कर मैं उठा और खिड़कीपर गया; वहाँ खड़े होकर सेवन्तीके कमरेकी ओर देखने लगा। एक चटाईपर वह, सुरेश और वीरेश तीनों बैठे हुए थे। वह अपने नये मित्रोंको कमरेकी प्रत्येक वस्तु अंगुलीसे दिखलाती और उनका नाम बोलती हुई उन्हें कोंकणी बोलीका ज्ञान करा रही थी! वे भी पाँच-दस मिनटमें सीखे हुए टटपूंजिये शब्द-ज्ञानके आधार पर बीच-बीचमें कोंकणी बोलीमें अस्खलित रूपसे बोलनेका प्रयत्न करते थे और जब सेवन्ती उन्हें उनकी ग़लतियाँ बतलाती तो तीनों मिलकर ज़ोरसे खिलखिलाने लगते थे।

मैं बड़ी देर तक खड़ा उनका यह तमाशा देखता रहा और अन्तमें सेवन्तीको पुकारा। क्यों सेवन्ती, क्या हो रहा है?

मेरी आवाज़ सुनते ही वह आनन्दित हो गई! दौड़ी-दौड़ी खिड़कीके पास आई और झट-झट कहने लगी—चाचाजी, आप गाँवसे कब लौटे? मैं कितने दिनोंसे आपका रास्ता देख रही हूँ! हमारे यहाँ ये मेहमान आये हैं, आप जानते हैं इन्हें? 'बंघाल' गाँवके रहनेवाले हैं ये! बहुत दूर है यहाँसे! मडगाँवसे भी आगे! बम्बईसे भी दूर! परसों बाबूजी इन्हें अपने साथ लाये। इनका नाम वीरेशमामा है और उनका सुरेशमामा। यह दिलरुबा बजाते हैं और वह गाते हैं! मुझे भी गाना और बजाना सिखाएँगे! अपनी बोली इनकी समझमें नहीं आती। अब ये हमारे यहीं रहनेवाले हैं!

नये मित्र प्राप्त होनेका शुभ संवाद अपने एक पुराने मित्रको सुनानेके लिए अधीर हो रही सेवन्ती एक ही साँसमें मुझे उनका पूरा परिचय दे गई! जब वह मुझसे बोल रही थी उसके दोनों मित्र खड़े कौतुकपूर्ण दृष्टिसे उसकी ओर देख रहे थे!

उसकी बात समाप्त होनेपर, उसे प्रसन्न करनेके इरादेसे मैं उसके नये मित्रोंके सम्बन्धमें उससे कुछ पूछने ही वाला था कि भीतरसे उसकी माने उसे पुकारा और वह अन्दर चली गई। मेरा भी पूजा-पाठका समय हो आया था, इसलिए सेवन्तीके नव-परिचित मित्रोंसे शिष्टाचारार्थ दो टूक बातें कर नहानेके लिए चला गया।

उस दिनके बादसे जब कभी मैं अपने कमरेमें गया उन दोनोंको या तो गाते-बजाते या फिर सेवन्तीके साथ हँसी-मजाक या गपशप करते ही पाया। हर घड़ी

दिखाई पड़नेवाले कमरेके उस उल्लास मुखरित वातावरणमें किसी प्रकारका कोई विक्षेप न डालनेके इरादेसे मैंने इधर उससे बोलना-बतियाना बन्द-सा ही कर दिया था। मैं इस बातकी भी पूरी सावधानी रखता था कि उसे मेरा कमरेमें होना मालूम न होने पाये। उसकी सोहबतसे भी अधिक खुशी मुझे उस समय होती जब मैं उसे खिड़कीके अधमुँदे कपाटों की ओटसे अपने मित्रोंके साथ हँसते-बोलते और खुशियाँ मनाते हुए देखता और सुनता था।

इसी तरह दस-बारह दिन बीत गये और एक रविवार आया। मैं अपने कमरेमें लेटा हुआ कुछ पढ़ रहा था। उमस जोरों की थी और थोड़ी देरमें मेरा सारा शरीर पसीनेसे तर हो गया। बाहरकी ठण्डी हवाके लिए मैं उठकर खिड़कीके पास गया। वहाँ जाते ही मुझे सेवन्ती और उसके मित्रोंकी याद हो आई। आज रोजकी तरह उनकी किलर-बिलर और हँसीकी फुलझड़ियाँ झड़ते हुए न सुनकर मुझे आश्चर्य हुआ। मैंने जरा-सा बाहरकी ओर झुककर उसके कमरेमें झाँका। वहाँका सारा दृष्य ही बदला हुआ था। सेवन्ती वहीं थी। उसके सुरेशमामा और वीरेशमामा भी वहीं थे। परन्तु वीरेश स्टव सुलगाये उसपर कोई चीज़ गरम कर रहा था, और सुरेश एक बिस्तरेपर पड़ा करवटें बदल रहा था। सेवन्ती पास ही मुँह लटकाये बैठी थी। सुरेशको बिस्तरे पर तड़पता हुआ देखकर मैं समझ गया कि उसे बुखार चढ़ा है। हवामें यकायक उष्णता बढ़ जानेके कारण बस्तीमें बुखारका प्रकोप शुरू हो जानेकी बात मुझे मालूम थी।

थोड़ी देर बाद सुरेशने सेवन्तीकी ओर देखा। वह उसकी उदासीका कारण जानता था; इसलिए अपने चेहरे पर प्रसन्नताके बनावटी भाव लाता हुआ बोला— क्यों सेवन्ती, तू आज चुप क्यों है? कुछ तो बोल!

सुरेशका यह बनावटीपन सेवन्तीसे छिपा न रहा। उस समय तो वह केवल उंहु करके रह गई। परन्तु थोड़ी देर बाद सुरेशके समीप खिसककर बोली— क्यों सुरेशमामा, दर्द ज्यादा होता है? मुझे मालूम है। बुखार आनेपर सिर और आँखें बहुत दर्द करती हैं और रोना भी आता है। मुझे भी एक बार बुखार आया था, तब अम्माँने अपनी दवाइयोंकी पेटीमेंसे एक जड़ी निकालकर और उसे घिसकर मेरे माथेपर लगाई थी। आँखोंपर गीली पट्टी रखी थी और हाथ, पाँव तथा पीठको खूब-खूब सेका था। गरम-गरम काढ़ा

बनाकर मुझे पिलाया था; तब कहीं मेरा बुखार उतरा था। वीरेशमामाको यह सब कहाँ मालूम होगा? तुम्हारा बुखार उतारनेके लिए क्या मैं अम्माँसे जाकर कहूँ? परन्तु वह तो यहाँ बाहर आती ही नहीं। तुम पराये हो इसलिए तुमसे लजाती है! अच्छा मामा, तुम्हारी अम्माँ कहाँ हैं?

निष्कलुष प्रेम और सच्ची सहानुभूतिसे सने हुए बालिकाके इन शब्दोंको सुनकर भावुक प्रकृति सुरेशका हृदय भर आया! उसे कोई उत्तर सूझ न पड़ा। प्रेमपूर्वक सेवन्तीका हाथ अपने हाथमें लेकर और थोड़ी देर सोचनेके बाद उसने कहा—बेबी, आज तुझे अपनी एक अति गुप्त बात बतलाता हूँ! यह भेद दूसरे किसीसे कहना मत! हमारी एक देवी माता हैं। मेरी और वीरेशमामाकी। हम जो यह 'वन्देमातरम्' गाते हैं न यह उन्हींका भजन है। भजन ही नहीं मन्त्र भी है। इस मन्त्रका भक्तिपूर्वक पाठ करनेपर कैसा ही दर्द क्यों न होता हो, कितनी ही वेदना क्यों न हो हम सब कुछ भूल जाते हैं। ऐसा जादू है इस मन्त्रमें। यही कारण है कि बुखार आनेपर न तो मेरा सिर और आँखें दुखती हैं और न मुझे तेरी तरह रोना ही आता है। मन्त्रका पाठ करनेपर रोना आएगा ही कैसे? सुन, मैं फिरसे उस मन्त्रका पाठ करता हूँ!

वन्देमातरम्......

सुरेशने गाना शुरू किया। जैसे-जैसे गीत आगे बढ़ता गया सेवन्तीके चेहरेपरसे वेदनाकी छाया लुप्त होती गई? उसके भोले मनपर सुरेशकी बतलाई हुई बातका इष्ट परिणाम हुआ! परन्तु उस बातकी ओटमें जो एक भव्य और उदात्त सत्य छिपा हुआ था वह उस समय जब स्वयं मेरी ही समझमें नहीं आया तो उस बेचारी अज्ञ बालिकाकी समझमें कहाँसे आता?

थोड़ी देरमें सुरेशका गीत समाप्त हो गया। वीरेश एक गरम पेय पदार्थ ले आया और सुरेश उसे पीने लगा। मैं भी आरामकुर्सीपर टाँगे फैलाकर पुस्तक पढ़नेमें लीन हो गया।

इसके बाद पाँच-छः दिन और बीत गये! भादों समाप्त होकर आश्विन लग गया और नवरात्रि शुरू हो गई। फोंड़ें तहसीलके कवळे नामक स्थानमें नवरात्रिका बड़ा भारी मेला लगा करता है। वहीं लखमा भाऊकी कुलदेवी शान्ता-दुर्गा का मन्दिर है। इस बार उन्होंने सपरिवार उस मेलेमें जाने और दो-तीन दिन वहीं

बितानेका निश्चय किया। लखमा भाऊके आग्रहसे मैं भी उनके साथ वहाँ जानेको तैयार हो गया।

पंचमीके दिन सवेरे उन्होंने मुझसे यह कहा कि आज रातको ठीक नौ बजे ज्वार शुरू होगा और उसी समय नाव छूटेगी; मैं सब लोगोंके साथ तैयार रहूँ। रातको ठीक समयपर मैं, लखमा भाऊ और उनके परिवारके अन्य लोग घरसे नदीकी ओर रवाना हुए; परन्तु सेवन्ती लापता थी। 'कितनी पाजी है यह लड़की! इस समय भी घुसी बैठी होगी उन मेहमानोंके ही कमरेमें!' लखमा भाऊ गुस्सेमें भरकर बड़बड़ाये और ज़ोरसे उसे आवाज़ दी। सेवन्तीने उस कमरेमेंसे उत्तर तो दिया परन्तु जब काफी समय हो जानेपर भी वह बाहर नहीं निकली! तो उसकी ढीठतापर खीझते हुए लखमा भाऊ स्वयं कमरेकी ओर चले। मैं भी उनके पीछे-पीछे गया। वहाँ सेवन्ती सुरेश और वीरेशके हाथ पकड़े उन्हें अपने साथ यात्रापर चलनेका जोरोंसे आग्रह कर रही थी और वे दोनों उसे समझाने-बुझानेका प्रयत्न कर रहे थे।

वीरेश गंभीरतापूर्वक उसे यह समझानेका प्रयत्न कर रहा था कि नावमें बैठनेसे उसे चक्कर आते हैं। इस सम्बन्धमें उसने दो-एक उदाहरण भी दिये। उधर सुरेश हाथमें एक कागज़ लिये उसे यह पढ़कर सुना और समझा रहा था कि बंगालसे कल ही उसकी माकी चिट्ठी आई है और उसने लिखा है कि पणजीमें लखमा भाऊका घर छोड़कर वह अन्यत्र कहीं न जाय। परन्तु इतने सबल कारण होते हुए भी वह अपना आग्रह छोड़नेको तैयार नहीं होती थी। अन्तमें उसे रुआँसी होते देख मेरा दिल पिघल गया और मैंने उन दोनोंसे उसका आग्रह स्वीकार कर लेनेकी प्रार्थना की। लखमाभाऊ भी बोले—दो ही दिनकी तो बात है! चले चलिये उसका मन रह जायगा और आप लोगोंका भी घूमना हो जायगा। वह स्थान भी बहुत ही दर्शनीय है।

सेवन्तीके प्रबल हठके आगे उन लोगोंका निश्चय तो वैसे ही डिग चुका था, ऊपरसे हम लोगोंका आग्रह हुआ तो वे साथ चलनेके लिए राजी हो गये। झटसे उन्होंने अपने कपड़ोंकी एक छोटीसी गँठरी बाँधी, वीरेशने अपना दिलरुबा उठाया और वे दोनों बंगाली अतिथि हमारे साथ हो लिये।

थोड़ी देरमें हम नदी किनारे पहुँचकर नावमें बैठ गये। नावके खुलते ही

लखमा भाऊ और उनके परिवारके अन्य लोग तो नौकाकी छायादार जगहके नीचे बिस्तरे फैलाकर लेट गये। सुरेश और वीरेश पीछेकी खुली जगहमें जा बैठे। सेवन्ती भी वहीं जाकर उनके पास बैठी और मुझे भी एक तमाशा दिखानेके लिए आग्रहपूर्वक बुलाकर वहीं अपने पास बैठा लिया।

नदीकी तरंगोंमें डूबने-उतरानेवाली मल्लाहोंकी डाँड़ोंका एकतान संगीत, पंचमीकी क्षीण चाँदनीमें स्नान करती हुई हमारी नौकाको मन्थर गतिसे आगे बढ़ाये लिये जा रहा था। नदी किनारेके कोंदल वृक्षोंपर बैठा एक स्वरमें विश्रांति गीत गाता भोंवार पक्षियोंका दल डाँड़ोंकी छपाछपसे चौंककर कभी-कभी उड़ जाता था तो ऐसा लगता था मानो नील नभमें शुभ्र मोतियोंका एक धवल हार ही उड़ा जा रहा हो। एक दूसरेके गलेमें गलबहियाँ डाल पवनके हिंडोलेपर झूलनेवाले नारियल वृक्षोंके विरल पत्तोंवाले सिर नदीकी लोल लहरियोंमें प्रतिबिम्बित हो रहे थे। समस्त प्रकृति निस्तब्धताका मोहक आवरण ओढ़े एकतान संगीतमें लीन हो रही थी।

सुरेश और वीरेशके सौन्दर्य-पारखी हृदय प्रकृतिका इतना सुन्दर रूप देखकर अपने अड़ोस-पड़ोसके वातावरणके साथ तद्रूप हो गये थे। वे निश्चल और निःशब्द बैठे अतृप्त नेत्रोंसे प्रकृतिके चारु चित्रोंको देख रहे थे! सेवन्ती और मैं भी स्तब्ध बैठा था। बीच-बीचमें वह उन्हें एकाध प्रश्न पूछ बैठती थी जिसके उत्तरमें वह खाली 'हाँ-हूँ' कर देते थे!

इस तरह घण्टे-डेढ़ घण्टेकी नीरव शान्तिके बाद वीरेशकी अंगुलियाँ अपने आप ही दिलरुबाके तारोंपर फिरने और वातावरणको एक मधुर नादसे झंकृत करने लगीं। सुरेश मस्त होकर डोलने लगा। सेवन्ती खुशीसे फूल उठी! मैं भी एकाग्र चित्त होकर सुनने लगा। मल्लाहोंने भी अपनी बातचीत बन्द कर दी। थोड़ी देर बाद सुरेश गाने लगा! श्रीचैतन्य स्वामीके भक्ति और प्रेमरसपूर्ण पद उसके मधुर कण्ठसे बाहर निकलने लगे। वीरेशका दिलरुबा उसके स्वरमें स्वर मिलाने लगा। श्री चैतन्य स्वामीके पदोंके बाद वह तुलसीदासके दोहे और कबीरकी साखियाँ गाने लगा। कोई घण्टे-डेढ़ घण्टे तक यह क्रम अबाध रूपसे चलता रहा। संगीतकी मधुरताने हम सभीको इतना अधिक मोहित कर लिया था कि हम सारी रात बैठे सुनते रहते; परन्तु सुरेश और वीरेश थक गये थे। कबीरके 'रामनाम तू भजले प्यारे' भजनके बाद सुरेश चुप हो गया और वीरेशने भी अपना दिलरुबा एक ओरको

रख दिया। हम लोग समझ गये कि अब और आगे गानेका उन लोगोंका इरादा नहीं है। परन्तु दो-एक मिनट प्रतीक्षा करनेके बाद सेवन्तीने दुलराते हुए और निराशासे भरे स्वरमें कहा—वीरेशमामा, क्या आज देवी माताका भजन नहीं गाओगे? वे दोनो जानते थे कि देवीका भजन सेवन्तीको विशेष प्रिय है। उसे स्नेहपूर्वक अपने पास खींचते हुए सुरेशने विनोदी स्वरमें कहा—गाएँगे क्यों नहीं री पगली! और पुनः गाना शुरू किया—'वन्देमातरम्'! वीरेश भी अपना दिल-रुबा उठाकर बजाने लगा।

अभी उसने गीतकी आरम्भकी केवल दो कड़ियाँ ही दुहराईं थीं और मस्तीसे हमारे सिर डोलने ही लगे थे कि हमारे पीछे बैठे हुए एक मल्लाहने उच्च स्वरमें अपने एक साथीको पुकारा—भिकू ऽऽ! ए ऽऽ भिकू ऽऽ! जरा उधर देखना तो रे!......

उसने ये शब्द इतने जोरकी कर्कश और विचित्र आवाज़में कहे थे और इन्हें सुनकर अन्य मल्लाह भी अपनी डाँड़े रोककर ऐसा शोरगुल मचाने लगे कि सुरेशको अपना गाना वहीं रोक देना पड़ा। नदीके जिस मोड़को हमारी नाव बहुत पहले पीछे छोड़ आई थी उसीकी ओर देखते हुए वे सब मिलकर जोर-जोरसे न जाने क्या विवाद करने लगे! उनकी यह आवाज़ सुनकर नावके अन्दर लेटे हुए लखमा भाऊ बाहर निकल आये। हम भी झुककर उस ओर देखने लगे। अचानक ही उस ओर दिखाई देनेवाला एक उज्ज्वल प्रकाश उनके कुतूहल और चर्चाका विषय हो रहा था। उस उजालेको लेकर हरएक आदमी अपनी राय प्रकट करने लगा; परन्तु किसीकी राय एक-दूसरेसे मिल नहीं रही थी। अन्तमें एक ज़ोरकी तालबद्ध आवाज़ सुनाई देने लगी और उसने हम सबका संशय मेट दिया। उस आवाज़को सुनकर सभीको यह विश्वास हो गया कि वह तेज़ीसे पानी काटते हुए अगिनबोटके आनेकी आवाज़ है। थोड़ी देरमें उसके ऊपरकी तेज़ बत्तीका उजाला और समीप आगया और उसके नीचे अगिनबोटकी शकल साफ़-साफ दिखाई देने लगी। परन्तु उस अवेलामें अगिनबोटको उधर आते हुए देखकर हम लोगोंको अत्यन्त ही आश्चर्य हुआ! अगिनबोटके आने-जानेके दो चक्कर और दिशाएँ निश्चित थीं। फिर उसका इस समय इधर दिखाई देना एक आश्चर्य ही था। पाँच-दस मिनट बाद तो अगिनबोट बिलकुल ही समीप आ गया। उसके

लिए रास्ता छोड़नेके इरादेसे पतवारवाला नावको नदीकी बीच धारासे बाईं ओरको घुमाने लगा। ठीक उसी समय नावको बिना घुमाये जहाँकी तहाँ रोक रखनेके लिए किसीका अधिकारपूर्ण स्वर सुनाई दिया। सुनते ही मल्लाहोंने अपने डाँड़ ऊपर उठा लिये। इस आकस्मिक घटनाने हम सब लोगोंको हतबुद्धि ही बना दिया। अग्निबोट समीप आकर रुका और हमारी नावसे सटकर खड़ा हो गया। उसमेंसे तुरन्त आठ-दस आदमी हमारी नावमें उतर आये। एक आदमी हाथमें कंदील लेकर हम सब लोगोंके चेहरे देखने लगा! मुझे उस आदमीको पहचानते देर न लगी! वह आदमी दो-एक सप्ताह पूर्व ही पणजीमें अपना दफ्तर खोलनेवाली बम्बईकी किसी स्वदेशी बीमा कम्पनीका एजेण्ट टी० सुब्बाराव था! अपने धन्धेको लेकर उसने इतने कम समयमें ही हमारे शहरके कई लोगोंसे खासा परिचय कर लिया था! अपनी कम्पनीका प्रास्पेक्टस् लेकर दो-एक बार वह मेरे और लखमाभाऊके यहाँभी चक्कर लगा गया था। एक सप्ताह पूर्व महालक्ष्मी मन्दिरमें 'स्वदेशी' पर उसका जोरदार भाषण भी हो चुका था। उसे देखकर मेरे जीमें जी आया और मैं आगे बढ़कर अधीरतापूर्वक उससे पूछने ही जा रहा था कि 'यह क्या माजरा है?' कि उसी समय वीरेश और सुरेशके चेहरे कंदीलके उजालेमें देखकर वह जोरसे चिल्ला उठा 'ये ही हैं वे बदमाश! पहनाओ इनके हाथोंमें हथकड़ियाँ!' इन शब्दोंको सुनतेही उसके साथके तीन-चार कान्स्टेबलोंने वीरेश और सुरेशको चारों ओरसे घेर लिया और उनके हाथोंमे हथकड़ियाँ जड़ दीं। फिर पुर्तगाली पुलिस विभागके एक युरेशियन सार्जण्ट और तीन-चार सशस्त्र सिपाहियोंने आगे बढ़कर उन दोनोंको अपने अधिकारमें कर लिया!

वीरेश और सुरेश पर यह विपत्ति आकस्मिक रूपसे टूट पड़ी थी परन्तु वह इसका मुकाबला करनेके लिए पहलेसे ही तैयार थे। उनके चेहरोंपर दुःख और निराशाकी एक घनी छाया व्याप्त हो जानेके बावजूद भी उनके हृदयकी शान्ति और निर्भयतामें लेशमात्र कमी नहीं होने पाई थी! हाँ, इस अनपेक्षित घटनाने अवश्य ही हम लोगोंके होश-हवास गुम कर दिये थे! सुरेश और वीरेश पर इस तरहकी विपत्ति पड़नेकी तो हमें स्वप्नमें भी कल्पना नहीं थी! सुब्बारावके मुँहसे उन शब्दोंको सुनकर और बादकी सारी कार्रवाई देखकर लखमा भाऊके

क्रोधका ठिकाना न रहा । वह सन्तप्त होकर चिल्ला उठे—ऐसे शरीफ लोगोंपर न जाने कैसा वारण्ट निकलवाते हुए तुम्हें शर्म नहीं आई मिष्टर सुब्बाराव? ज़रा हमें भी तो बताइये कि आपकी बीमा कम्पनीमें इन्होंने ऐसा कौनसा डाका डाला है?

'देखिये साहब, इतने गरम मत हूजिये! बीमा कम्पनीसे इस बातका कोई संबंध नहीं और न मेरा ही उस बीमा कम्पनीसे कोई सम्बन्ध है! ये लोग कौन हैं और इन्होंने कैसा डाका डाला है ये सब बातें आपको शीघ्र ही मालूम हो जाएँगी। तब तक आप इसे देख लीजिये।' दुष्टतापूर्वक हँसते हुए सुब्बारावने बड़ी ही शान्तिसे ये शब्द कहे और अपनी जेबसे एक कार्ड निकालकर उसे कंदीलके उजालेमें हमारे सामने रखा। इस कार्डपर उसका असली नाम और ओहदा लिखा हुआ था! वह अंगरेज़ी भारतके सी० आई० डी० विभागका एक इन्स्पेक्टर था! तभी पास खड़े हुए पुर्तगाली सारजेण्टने भी कहा—ऐसे बम बनानेवाले राज-विद्रोहियोंका पक्ष लेकर झगड़नेमें कोई अक्लमन्दी तो है नहीं!

लखमा भाऊ और मैं उस जमानेके समाचार-पत्रोंकी मार्फत इतना तो जानते ही थे कि डिटेक्टिव, राज-द्रोही और बम शब्दोंके पीछे ऐसा कौनसा आतङ्कमय इतिहास छिपा हुआ है! सुब्बाराव और सार्जेण्टके ये शब्द सुनकर लखमा भाऊका सारा गुस्सा काफूर हो गया। मैं भी बंगाली अतिथियोंकी ओरसे सुब्बारावको जो कुछ कहनेकी सोच रहा था उसे मनका मनमें ही दबा गया। इसके बाद हमने मुँहसे एक भी शब्द नहीं निकाला!

अपने महीने डेढ-महीनेके सहवासमें उन बंगाली अतिथियोंने अपने सुस्वभाव और मधुर व्यवहारके कारण हमारा मन इतना अधिक मोह लिया था कि इस अप्रत्याशित घटनासे उनके प्रति हमारी सद्भावनाओंमें किसी तरहका कोई अन्तर नहीं पड़ा। उलटे उन्हें इस तरहकी मुसीबतमें फँसे देख हमारा हृदय अनुकम्पासे भर आया और इस मुसीबतमें उनके किसी काम न आ सकनेकी असमर्थताके कारण हमारे हृदयमें रह-रहकर एक शूल-सा चुभने लगा!

थोड़ी देर बाद उन्हें नाव छोड़कर अगिनबोटपर चढ़नेकी आज्ञा दी गई। नाव छोड़नेसे पहले उन दोनोंने स्नेहपूर्वक अपने हाथ जोड़े और वाष्पाकुल कण्ठसे

हमें नमस्तेकर विदा ली। फिर वे सेवन्तीकी ओर मुड़े। उस बालिकासे वे किन शब्दोंमें विदा माँगते ?

उनके मुँहसे केवल एक शब्द निकला—सेवन्ती ! बस, इससे अधिक वे कुछ न कह सके। परन्तु एक इसी करुण शब्दने उनके हृदयगत सभी भावोंको प्रकट कर दिया ! क्षणभर वे सेवन्तीके अश्रुविगलित और भयसे पीले पड़े हुए चेहरेकी ओर देखते रहे। उसके आँसू थमते ही नहीं थे। अन्तमें किसी तरह अपने मनको समझा-बुझाकर उन लोगोंने जानेके लिए पाँव उठाये ! विदाकी इस अन्तिम वेलामें वेदनाने घनीभूत होकर सेवन्तीके मनसे सशस्त्र सिपाहियों और काली वर्दीवाले कान्स्टेबलोंका सारा भय नेस्त-नाबूद कर दिया। वह लपककर बीरेशसे चिमट गई और सिसकती हुई बोली—बीरेशमामा, ये लोग तुम्हें पकड़कर कहाँ लिये जा रहे हैं ? ये तुम्हें मारेंगे तो कौन छुड़ाएगा ? इनके हाथोंमें तलवारें और बन्दूकें हैं !

सेवन्तीके इन सीधे-सादे शब्दोंमें उसके अन्तरकी सारी वेदना मुखरित हो उठी ! उसको आश्वासन दिये बिना वहाँसे एक क़दम बढ़ाना भी सुरेश और वीरेशके लिए दूभर हो गया। सुरेश अपने चेहरेपर बनावटी प्रसन्नता और लापरवाहीका भाव झलकाते हुए नीचे झुककर उसके कानमें धीरे-धीरे कहने लगा—पगली, हमारी देवी माताका भेद जानते हुए भी तू इस तरह डरकर रोती है ? अरे, देवीमें इतनी सामर्थ्य है कि उनकी इच्छा मात्रसे इनकी ये बन्दूकें टूट जाएँगी और तलवारोंके टुकड़े-टुकड़े उड़ जाएँगे ! उसके आशीर्वादसे हम इन हथकड़ियों तकको तड़का सकेंगे और वे बेचारे सिपाही हमारे कदमोंपर लौटते नज़र आएँगे। सचमुच ! वह मन्त्र अधूरा ही रह गया। लाओ, उसे पूरा कर दूँ ! और उसने धीमी परन्तु सदाकी मधुर आवाज़में वह गीत गुनगुनाना शुरू किया।

‘ वन्देऽऽमाऽतरम् !
बहुबल धाऽरिणीम् नमामि तारिणीम्
रिपुदलवाऽरिणीम् माऽतरम् !
वन्देऽऽमाऽतरम् ! ’

आवाज़ धीमी होते हुए भी हम सब लोग सुन सकें इतनी स्पष्ट थी ! ऐसी भयंकर परिस्थितिमें भी उसका यह धैर्य देखकर मेरे और लखमा भाऊके आश्चर्यका ठिकाना

न रहा। इन्स्पेक्टर, सार्जेण्ट और कान्स्टेबलोंने तो उसका यह अनोखा काम देख-कर उसे पागल ही समझा होगा।

संकटके समय उसकी यह उदासीनता और लापर्वाही एक सरकार-परस्त कान्स्टेबलको अपना घोर अपमान दिखाई दी। उसने गुस्सेसे लाल-पीले होकर सुरेशको एक धक्का दिया और अगिनबोटपर चढ़नेका हुक्म सुनाया। इधर सुरेशका गाना भी समाप्त हो ही गया था। अपने इस प्रयत्नसे सेवन्तीके मनको थोड़ा-बहुत आश्वासन दे सकनेका सन्तोष ले (क्योंकि सेवन्तीके चेहरेका भाव थोड़ा-सा बदल गया था।) वे दोनो अगिनबोटपर चढ़ गये।

उस अनपेक्षित विपत्तिसे उन दोनोंको छुटकारा दिलानेका कोई मार्ग मुझे और लखमा भाऊको सूझ नहीं पड़ रहा था; फिर भी यह सोचकर कि भाग्य बलवान् है और प्रयत्न करनेसे संभव है कोई रास्ता निकल आये, मैंने लखमा भाऊके साथ मेलेमें जानेका कार्यक्रम रद्द किया और सार्जेण्टसे बड़ी मिन्नत-समाजतके बाद अगिन-बोटपर उनके साथ जानेकी इजाजत हासिल की।

थोड़ी देर बाद अगिनबोट और नाव दोनोंही परस्पर विरुद्ध दिशाओंकी ओर रवाना हुए। नावको पीछे छोड़कर जब अगिनबोट मुड़नेको हुआ नावपरसे सेवन्तीके रोनेकी आवाज़ फिरसे सुनाई देने लगी।

अगिनबोट पर हम तीनोंको तीन अलग-अलग कोनोंमें बैठाया गया ताकि हम आपसमें एक-दूसरेसे बात-चीत न कर सकें। वीरेश और सुरेश बेचारे शून्य दृष्टिसे कभी आसमानके तारे गिनते और कभी घुमड़ती हुई लहरों और कभी तीरवर्ती झाड़ियोंकी ओर देखते थे! इन्स्पेक्टर, सार्जेण्ट, कान्स्टेबल और सिपाही बीच-बीचमें धुआँ उड़ाते हुए ताश खेलनेमें मग्न हो गये थे और मैं भी इन परस्पर विरोधी दृश्यों को देखता हुआ एक बेञ्चपर पड़ा-पड़ा इस उधेड़-बुनमें लगा था कि देखें, आगे क्या होता है?

तीन-चार घण्टे चलनेके बाद सूर्योदय होते-होते अगिनबोट पणजी पहुँच गया। कान्स्टेबलोंने अपने कैदियोंकी हथकड़ियोंकी एक बार पुनः अच्छी तरहसे देख-भाल की, उनकी मुश्कें बाँधीं और सशस्त्र सिपाहियोंके पहरेमें उन्हें बन्दरगाहपर उतारकर थानेकी ओर ले चले। मैं भी किसी तरह पाँव घसीटता हुआ अपन घर लौट आया।

फिर वह सारा दिन मैं न्याय-विभाग और पुलिस-विभागके अपने विभिन्न परिचित अफसरोंसे मिलता और उन्हें उन दोनों बंगाली युवकोंका क़िस्सा सुनाकर सहायताकी याचना करता फिरा। परन्तु सुनकर सभीने हाथ टेक दिये। उनमेंसे बाज़ने मुझे ब्रिटिश सरकार और पुर्तगाली सरकारके बीच हुए समझौतेके अन्तर्गत दोनोंके अन्तरराष्ट्रीय रिश्तोंकी कतिपय ऐसी गुप्त बातें बतलाईं, जिन्हें सुनकर मुझे विश्वास हो गया कि उन दोनों युवकोंको किसी तरह भी बचाना सम्भव नहीं है। इस निराशासे मुझे अपार वेदना हुई।

बातकी बातमें सारे शहरमें यह खबर फैल गई कि 'दो बंगाली आतंकवादियोंको ब्रिटिश सरकारके एक डिटेक्टिवने गिरफ्तार किया है।' इस खबरको लेकर जनतामें तरह-तरहकी सच्ची-झूठी अफवाहें भी उड़ने लगीं। 'डिटेक्टिवके आनेका सुराग लगते ही आतङ्कवादियोंको नावके द्वारा भाग जानेमें सहायता पहुँचानेके अपराध-स्वरूप लखमा भाऊ और उनके पड़ोसीकी भी गिरफ्तारी शीघ्र ही की जाएगी!' 'पुलिसवालोंने लखमा भाऊके आँगनमेंसे बंगालियों द्वारा छिपाये हुए दो बम बरामद किये हैं!' आदि कई झूठी अफवाहोंमें एकाध सच भी थी और खासकर यह कि ब्रिटिश सरकारकी ओरसे दूसरा हुक्म आने तक ये दोनों कैदी पणजीकी पुर्तगाली जेलमें रखे जाएँगे।

चार दिन बाद लखमा भाऊ सपरिवार मेलेसे लौट आये। घर आते ही सबसे पहले उन बंगाली युवकोंके बारेमें पता लगानेके लिए वह मेरे पास आये! मेरे प्रयत्नोंका निराशाजनक परिणाम सुनकर उन्हें अत्यन्त दुःख हुआ और व्यथित स्वरमें बोले—कितने भले, बुद्धिमान और मधुर स्वभावके थे वे युवक! ईश्वर करे वे इस भयंकर विपत्तिसे किसी तरह बच जायँ! अब आप किसी तरह एक काम कीजिये! सेवन्ती उसी दिनसे उनके नामका हठ ले बैठी है! रोते-रोते उसकी आँखें सूज आई हैं और उनके बारेमें प्रश्नोंकी झड़ी लगाकर तो उसने हमारे नाकों दम ही कर रखा है। न तो पेट-भर खाती है और न ठीकसे सोती ही है! यहाँ आनेके बादसे उसे एक दूसरी ही ज़िद सवार हुई है। तबसे उसने जहाँ वे हों वहाँ ले चलनेकी रट लगा रखी है! अब आप जैसे भी हो उसे एक बार उनसे मिला लाइये! पुलिस थानेका वह सार्जेंत (सार्जेण्ट) पेरैरा भला आदमी है। यदि आप उसे समझा-बुझाकर कहेंगे तो वह थोड़ी देरके लिए सेवन्तीको अन्दर ले जाकर उनसे मिला लाएगा या कमसे कम दूरसे तो उन्हें दिखा ही देगा।

जेलमें सुरेश और वीरेशसे मुलाक़ात कर सकना कितना कठिन काम है इसका पूरा अनुभव मुझे हो चुका था। उनसे मिलनेके लिए मैं पिछले चार दिनोंमें जेल-खानेके पचासों व्यर्थ चक्कर भी लगा चुका था। फिर भी इस खयालसे कि संभव है आज मुलाक़ात मिल जाय, मैं सेवन्तीको साथ लेकर थानेकी ओर रवाना हुआ।

आज कैदियोंके जंगलेके बाहर पुर्तगाली सिपाहियोंके साथ रोजकी तरह ब्रिटिश कान्स्टेबलोंको न देखकर मुझे थोड़ी आशा बँधी। मैंने सार्जण्टको सेवन्तीका पूरा क़िस्सा कह सुनाया और कैदियोंसे मुलाक़ात देनेके लिए कहा। सेवन्तीका क़िस्सा सुनकर सार्जण्टका दिल भी पिघल गया। वह बोला—परन्तु आजके दिन तो उनसे मुलाक़ात पाना बिलकुल ही असंभव है। अंग्रेज़ अफसर उनके बयान लेनेमें लगे हुए हैं। दो-तीन घण्टे हुए वे उन्हें उधरकी कोठरियोंमें ले गये हैं। वे कोठरियाँ यहाँसे इतनी दूर और एकान्तमें हैं कि यदि कोई आदमी ज़ोरसे चिल्लाये तो भी उसकी आवाज़ यहाँ न सुनाई देगी!

वह यह कह ही रहा था कि उधरकी कोठरीका दर्वाज़ा खुलने और बन्द होनेकी आवाज़ हमें बाहर सुनाई दी। आवाज़ सुनकर वह बोला—शायद वे उन्हें वापिस इन कोठरियोंमें ले आये हैं! निश्चित रूपसे इस बातका पता लगानेके लिए वह भीतर गया और दूसरे ही क्षण फुर्तीसे बाहर आकर मुझसे कहने लगा—सौभाग्यसे आज तुम्हारी इच्छा पूरी होती दिखाई देती है! उन दोनोंमेंसे एकको वे वापिस इस कोठरीमें छोड़ गये हैं। ऐसा मालूम पड़ता है कि इसका बयान लिया जा चुका है! अब जबतक वे उस दूसरेका बयान लेनेमें लगे हुए हैं तुम झटपट इस लड़कीको भीतर ले जाकर बता लाओ। कोठरीसे तीस-चालीस क़दमकी दूरीपर जो वह दिवाल है उससे आगे मत जाना। सीखचोंवाली खिड़कीके जरिये तुम उसे आसानीसे देख सकोगे। नज़दीक मत जाना और बोलना भी मत, इतना ज़रूर याद रखना। नहीं तो यदि उन हरामियोंने देख लिया और कहीं मेरे खिलाफ रिपोर्ट लिख मारी तो रोजीसे ही हाथ धोना पड़ जायगा। धरम करते करम ही फूट जाएँगे।

सार्जण्टकी अनुमति मिलते ही मैं सेवन्तीको लेकर अन्दर गया। उसके आदेशानुसार मैं कोठरीसे दूर दीवालके पास ही खड़ा रहा। हमारी ओर दृष्टि जाते ही

सुरेशने नमस्कार किया और सीखचोंसे सटकर खड़ा हो गया। सेवन्तीको देखकर उसने अपने चेहरेपर प्रसन्नता और लापर्वाहीके भाव लानेका प्रयत्न किया; परन्तु आज उसे सफलता नहीं मिली ! यदि यह कहा जाय कि उसका चेहरा शवकी तरह विकृत हो रहा था तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। उसका वह निर्जीव पीला चेहरा, उसपर छाई हुई वह ग्लानि और अविरल अश्रुप्रवाहसे सूजी हुई आँखें देखकर मेरा हृदय टुकड़े-टुकड़े हो गया ! परन्तु इन सबका कारण जाननेमें भी मुझे देर न लगी। उसके हाथोंकी ओर निगाह जाते ही मैं धक्-से रह गया। उसके दोनों हाथोंकी अंगुलियाँ फूली हुई थीं ! वे अपने वास्तविक आकारसे तिगुनी मोटी होगई थीं ! उनपर खूनके दाग़ भी लगे हुए थे ! और तिसपर भी हाथोंमें हथकड़ियाँ पड़ी थीं ! धोती और कमीज़में भी यहाँ-वहाँ खूनके बड़े-बड़े लाल धब्बे पड़े हुए थे। कुछ दिनों बाद मुझे पता चला कि उसके मुँहसे बात निकलवानेके लिए किसी भारी वस्तुके नीचे उसकी अंगुलियाँ कुचलकर वेदना पहुँचानेके परिणाम स्वरूप ही उस समय उसकी ऐसी दशा हो गई थी !

मैं अधिक समयतक उस हृदय-विदारक दृश्यको देख न सका। विशेषतः सेवन्तीके सुकोमल हृदयका खयाल कर मैं उसे साथ लिये हुए लौट पड़ा पर अभी मैं मुड़ा ही था कि वह मेरा हाथ छुड़ाकर सुरेशके जंगलेकी ओर लपकी। मैं उसे डरा-धमकाकर लौट आनेके लिए कहने लगा; परन्तु वह कब सुननेवाली थो ! वह सुरेशके जंगलेके पास पहुँच गई और छड़ोंमें अपना हाथ डालकर उसका कमीज़ पकड़ लिया। फिर करुण दृष्टिसे उसके चेहरेकी ओर देखती हुई सिसक-सिसककर रोने लगी ! इस बार सुरेशके धैर्यका बाँध भी टूट गया। उसकी आँखोंसे आँसू बहने लगे ! बड़ी मुश्किलसे अपने आपपर काबू पाकर वह बोला—सेवन्ती, हमारी इस नरक-यन्त्रणाको देखनेके लिए तू यहाँ क्यों आई ? जा, चली जा मुन्नी, देख वह विसू चाचा बुला रहे हैं ! उनके साथ घर लौट जा ! अगर पुलिसवाला तुझे यहाँ देख लेगा तो बहुत-बहुत बिगड़ेगा। जा मेरी रानी बिटिया ! परन्तु उसके इन शब्दोंसे सेवन्तीके हृदयका दुःख और भी अधिक उमड़ पड़ा। अपने दोनों नन्हें-नन्हें हाथोंसे उसकी कमर पकड़कर अस्फुट और व्यग्र स्वरमें वह कहने लगी—सुरेश मामा, तुम घर कब आओगे ? ये पुलिसवाले तुम्हें यहाँसे कब छोड़ेंगे ? तुम्हारी अंगुलियाँ सूजकर कितनी मोटी हो गई हैं ? खून भी कितना-सारा निकल आया है !

यह ऐसा किसने किया? अब इन अंगुलियोंको कौन अच्छा करेगा? बहुत दुखती होंगी, क्यों मामा? आओ, घर चलो।

अब तक सुरेश हमेशाकी तरह पूरा-पूरा सँभल चुका था। अपने तईं पूरी लापर्वाही और गंभीरता प्रकट करते हुए उसने कहा—कल ये सिपाही यहाँसे मुझे और वीरेश मामाको बंगाल ले जाएँगे और फिर वहाँ छोड़ देंगे। वहाँसे हम तुझे और विसू चाचाको पत्र लिखेंगे और फिर थोड़े दिनों बाद तुझसे यहाँ मिलने आएँगे। अब तू घर जा। देख, मेरी अंगुलियाँ दुखने लगी हैं। अभी तक मैं मन ही मन अपनी देवी माताका मंत्र जप रहा था, उसके प्रभावसे इतना खून निकलनेके बाद भी मुझे दर्द नहीं हो रहा था। मैं फिरसे उसी मंत्रका पाठ करता हूँ और रही-सही जो भी वेदना होगी वह चुटकी बजाते मिट जाएगी—

“ वन्दे ऽ ऽ मातरम् !
सुखदांऽ वरदांऽ माऽतरम् !
तुमि विद्या, तुमि धर्म,
तुमि हृदि, तुमि मर्म,
त्वंहि प्राणा शरीरे !
बाहुते तुमि मा शक्ति
हृदये तुमि मा भक्ति
वन्दे ऽ ऽ मातरम् ! ”

सुरेशके इतना गा चुकनेपर मैं, चूँकि आवाज़ें देकर असफल हो चुका था, लपका हुआ उसके जंगलेके पास पहुँचा और सुरेशकी कमरमें लिपटे हुए उसके दोनों हाथ छुड़ाकर सेवन्तीको वहाँसे घसीटता हुआ बाहर खींच लाया! जब मैं सेवन्तीको जंगलेसे हटा रहा था सुरेशने दो छड़ोंके बीचमेंसे उसके कपालका आवेगसे चुम्बन लिया और यों उससे अन्तिम विदा ली। उसे घसीटकर बाहर लाते समय मुझे रूद्ध कण्ठमें कहे हुए सुरेशके ये शब्द सुनाई दिये। जा, मेरी रानी बिटिया! हम अभागे किस प्रकार तुझसे उऋण हो सकेंगे? ईश्वर ही तुझे हमारे प्रति तेरे इस स्वर्गीय प्रेमका प्रतिदान दे! तुझे आजीवन अपने ही जैसे प्रेमपूर्ण, निष्कलुष और सुकोमल हृदयोंका सहवास प्राप्त हो और तेरा जीवन सुखमय हो!

बाहर आकर मुझे रूमालसे सेवन्तीके आँसू पोंछते देख सार्जेण्टको बड़ा ही आश्चर्य हुआ ! मेरे मुँहसे भीतरके हृदय-द्रावक दृश्यका हाल सुनकर वह फुर्तीसे भीतर गया और थोड़ी देर बाद लौट आकर वेदना-विजड़ित स्वरमें कहने लगा—यह है ब्रिटिश पुलिसका बयान लेनेका पाशविक ढंग ! मुझे पहले ज़रा-सा भी खयाल होता तो हर्गिज इस बच्चीको अन्दर न जाने देता ! वह सब देखकर इस बेचारीके दिलपर क्या बीती होगी ? तुम लोग बड़ी तारीफ़ किया करते थे उस सरकार की ! अब देख ही लिये अपनी आँखों उसके कारनामे ! कुछेक लोग पुर्तगाली क़ानूनकी हँसी उड़ाते हैं; परन्तु कहीं किसी निरपराधीको सजा न मिल जाय इस डरसे हम हाथमें आये हुए अपराधीको भी छोड़ देते हैं ! और सच पूछा जाय तो अन्तर्राष्ट्रीय नियमके अनुसार जहाँ तक ये लोग हमारी सरकारके क़ैदी और हमारी सीमामें हैं ब्रिटिश अफ़सरोंको उनके साथ इस तरहकी मार-धाड़ करनेका कोई अधिकार नहीं । आज उन्होंने उस कानूनको भी बालाए ताक़ रख दिया ! समरथको नहीं दोस गुसाईं ! ब्रिटिश सरकार चाहे जिस क़ानूनको ठेंगा बतला दे और चाहे जिस क़ानूनको दूसरोंके सिर थोप दे !

बहुत देर तक वह सार्जण्ट इसी तरह अपने मनका मलाल निकालता रहा। अन्तमें उससे विदा लेकर मैं सेवन्तीके साथ घरकी ओर लौटा। वह रास्तेभर रोती आई और मैं उसके आँसू पोंछता आया।

दूसरे दिन आतङ्कवादियोंको लेकर अंगरेज़ी अफ़सरोंके बम्बई चले जानेकी खबर सारे शहरमें फैल गई !

उस दिनके बादसे कई दिनों तक सेवन्ती अपने सुरेश मामा और वीरेश मामाके पत्रकी उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करती रही ! रोज डाकके समय वह बिला नागा यह पूछने दौड़ी आती कि क्या सुरेश मामाका पत्र आया है ?

इस घटनाको घटे दो-तीन सप्ताह हो गये थे। एक दिन मैं बरामदेमें खड़ा डाकसे आये 'कालगति' साप्ताहिक पत्रके ताज़े अंकका ऊपरका कवर फाड़ रहा था। सेवन्ती नित्यकी तरह दौड़ी आई। मैंने अख़बार पढ़नेकी शुरुआत की ही थी कि उसने रोज़की तरह पूछा—क्या आजकी डाकमें भी सुरेश मामाका कोई पत्र नहीं ?

उस समय मैं बड़े-बड़े अक्षरोंमें छपा निम्न समाचार पढ़ रहा था—

'गोवामें पकड़े गये दोनों बंगाली युवकोंको आजन्म काले पानीकी सजा ! दोनों अन्दमान टापू भेजे गये !

रोजकी तरह मुझसे नकारात्मक उत्तर न पाकर सेवन्तीको कुछ आशा बँधी। वह पुनः-पुनः वही प्रश्न दुहराने लगी। अन्तमें उसे चुप करनेके लिए मेरे मुँहसे असावधानीपूर्वक हाँ निकल गया ! वह खुशीसे तालियाँ पीटने लगी और दूसरा प्रश्न किया—कहाँसे आया ? वे इस समय कहाँ हैं ?

मैंने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया—अन्दमानमें।

'अन्दमान कहाँ है ? वे वहाँ क्या करते हैं ? यहाँ कब आएँगे ?' आदि प्रश्नों की उसने झड़ी ही लगा दी ! परन्तु मैं उन शीर्षकोंके नीचेकी दो-तीन कॉलम मैटर पढ़नेमें इतना तल्लीन हो गया था कि उसके प्रश्नोंका सिवा 'हाँ-हूँ' के और कोई उत्तर न दे सका। उसने भी जब मेरे चेहरेकी गंभीरता क्रमशः बढ़ती हुई देखी तो इतने ही समाचारपर सन्तोषकर वह नाचती-कूदती घरके अन्य लोगोंको यह खुश खबर सुनाने चली गई ! जो भी उसके रास्तेमें पड़ गया उसे उसने अपने वीरेश मामा और सुरेश मामाके पत्र आने और उनके अन्दमानमें होनेका शुभ समाचार सुना डाला।

इस तरह आजसे सोलह वर्ष पुरानी वह सारीकी सारी घटना जब सिनेमाके चलचित्रोंकी नाई मेरी आँखोंके आगेसे गुजर गई तो मुझे होश आया ! मैं वहीं जीने पर खड़ा था और सेवन्ती अब भी गा रही थी ! उसने गाया—नमामि कमलाम्, अमलाम् अतुलाम्...। अब मैं अधिक समय तक रुक नहीं सकता था इसलिए बाकीकी सीढ़ियाँ चढ़कर उसके कमरेमें पहुँच गया। मुझे देखते ही वह हड़बड़ाकर उठ बैठी। उसका गाना वहीं समाप्त हो गया। यों गाते हुए पकड़े जाकर वह एकदम झेंप गई। कुशल प्रश्नोंके आदान-प्रदानके बाद मैंने उससे कहा—मैं तो सपनेमें भी यह कल्पना नहीं कर सकता था कि तेरा स्वर इतना मधुर होगा और तू इतना अच्छा गा लेती होगी ? अपने गीतके सम्बन्धमें मेरी यह राय सुनकर वह फिर लजा गई और इस डरसे कि कहीं मैं उसकी हँसी न करने लगूँ वह विषय-परिवर्तनका प्रयत्न करने लगी। अन्तमें मेरे आग्रह करनेपर और यह आश्वासन देनेपर कि मैं न तो उसकी हँसी उड़ाऊँगा और न उसके गानेकी बात ही किसीके आगे कहूँगा, वह बोली—

आपको याद होगा, आजसे कई वर्ष पहले, जब मैं छोटी थी, पणजीमें हमारे यहाँ दो परदेशी आकर टिके थे। बादमें पुलिस उन्हें पकड़कर बम्बई ले गई थी। वे अक्सर यह गीत गाया करते थे और उन्हें गाते हुए सुनकर मुझे भी यह गीत याद हो गया था। आज भी उसकी कुछ कड़ियाँ मैं नहीं भूली हूँ। इस गीतको उन्होंने अपनी एक देवी माताका मन्त्र बतलाया था और सच मानिये, चाचाजी, इसमें ज़रूर दैवी सामर्थ्य है।

उसका यह उत्तर सुनकर मैं आश्चर्यचकित रह गया और बोला—क्या आज भी तेरा यही विश्वास है कि यह गीत देवीका मन्त्र है और इसमें दैवी सामर्थ्य है? क्या इसके किसी शब्दका अर्थ भी तू जानती है।

'नहीं, मन्त्रका अर्थ जाननेकी आवश्यकता ही क्या है? मन्त्रका अर्थ मालूम हो या न हो उससे होनेवाला शुभ परिणाम तो होकर ही रहेगा। विवाह-उपनयन आदि अवसरोंपर पढ़े जानेवाले कठिन मंत्रोंका अर्थ तो बिरले ही जानते हैं, परन्तु इनसे भला तो सभीका होता है? आप भी इस बातसे तो इन्कार नहीं ही करेंगे? फिर इस देवी-मंत्रका दिव्य प्रभाव तो बचपनमें मैं स्वयं अपनी आँखों देख चुकी हूँ। हमारे घर रहनेवाले उन दोनों युवकोंकी इस मन्त्रपर पूर्ण श्रद्धा थी! उन्हें कैसी ही मानसिक या शारीरिक वेदना क्यों न हो इस मन्त्रका पाठ करते ही शान्त हो जाती थी। एक बार आप मुझे उनसे मुलाक़ात करवाने जेल ले गये थे। उस समय पुलिसकी मारपीटके कारण उनमेंसे एकका हाथ जख्मी हो गया था। अंगुलियाँ भी फूलकर बैंगन हो गई थीं! खून भी बह रहा था! परन्तु इसी देवी-मन्त्रका पाठकर उन्होंने वह सारी वेदना शान्तिसे सह ली थी। खुद आपने अपनी आँखों देखा था। मुझे भी इस मन्त्रका ऐसा ही संकट-हारी चमत्कार अनेकों बार दिखाई दिया है। जब कभी मुझपर कोई विपत्ति आ पड़ती है, कोई मानसिक या शारीरिक वेदना होने लगती है, मैं इस मन्त्रका पाठ करने लग जाती हूँ और बातकी बातमें मेरी सब आधा-व्याधा मिट जाती है।

उसकी यह बात सुनकर मुझे कहीं पढ़ा हुआ एक वाक्य 'अज्ञानी परमसुखी' याद हो आया। मैं थोड़ा सोचमें पड़ गया! उसे अपने इस सुखदायी अज्ञानसे मुक्त करना अच्छा होगा या नहीं?

थोड़ी देर बाद सेवन्तीने उत्सुकतापूर्वक कहा—उन दोनों युवकोंकी कितनी ही बातें मैं आज भी नहीं भूली हूँ। क्यों चाचाजी, जेलसे ले जानेके बाद उन लोगोंका क्या हुआ होगा?

सोच-विचारमें पड़े होनेके कारण मैंने संक्षिप्त-सा उत्तर दिया—फिर उन्हें काले-पानीकी सजा हो गई!

'काले-पानीकी सजा कौनसी सजा है?' उसने साश्चर्य पूछा।

'जिस तरह यहाँकी सरकार भयंकर अपराधियोंको मोसांबिक (पुर्तगाली अफ्रिकाका एक प्रदेश) भेज देती है उसी प्रकार अंग्रेज़ सरकार अपने यहाँके विशेष अपराधियोंको हिन्दुस्तानसे बाहर अन्दमान द्वीप-समूहमें भेज देती है! परन्तु दोनोंमें एक बड़ा भारी अन्तर है। मोसांबिकको भेजे जाने वाले अधिकाँश अपराधी वहाँ खेती-बाड़ी या कोई अन्य काम-धन्धा करते, अपनी नई घर-गृहस्थी बसाकर चैनसे रहते और पन्द्रह-सोलह वर्षमें अपनी सजा काटकर मालामाल होकर स्वदेश लौट आते हैं। परन्तु अन्दमानको भेजे जानेवाले अधिकाँश अपराधी वहीं गिट्टी फोड़ते या कोल्हू पेरते हुए अपने जीवनकी अन्तिम घड़ियाँ गिनते रहते हैं। खासकर उन बंगाली युवकोंकी श्रेणीके अपराधियोंमेंसे तो शायद ही किसीको स्वदेश लौटना नसीब होता हो! हाँ, मरनेके बाद समुद्रकी तरङ्गें भले ही दयाकर उनकी अस्थियाँ मातृभूमिके किसी किनारे लगा दें।'

मेरे इस उद्वेगजनक उत्तरको सुनकर सेवन्तीने फिर उनके बारेमें और कुछ न पूछा।

'वे सचमुच ही देव पुरुष थे!' उसने करुणार्द्र स्वरमें केवल इतना ही कहा और उसकी आँखोंमें आँसू भर आये!

तभी मैंने सुना : कोई नीचेसे मेरा नाम लेकर जोर-जोरसे पुकार रहा है। आवाज़ बंकू खालासीकी थी। अपने सप्तम स्वरमें उसने 'विसू भैया! विसू भैया!' की रट ही लगा दी थी। मैं चटपट सेवन्तीसे विदा लेकर नीचे उतर आया और बंकू के साथ नदी किनारेकी ओर चल पड़ा।

रास्तेभर बंकू नाराज़ होकर बड़बड़ाता रहा! मेरी इस देरके कारण नावके निर्दिष्ट स्थानपर पहुँचनेसे पहले अब जो-जो मुसीबतें उसे उठाना पड़ेंगी उन सबका,

ज्वार-भाटा और हवाकी उलटी-सीधी गतिके आधारपर सप्रमाण और ब्यौरेवार विवरण वह मुझे सुना चला। उस समय यदि मैं उसे ठहराई हुई मज़दूरीसे चार आने अधिक देनेका आश्वासन दे देता तो उसमें इन सब मुसीबतोंका सामना करनेकी हिम्मत आ जाती और उसका मुँह बन्द हो जाता। परन्तु मैं विचारोंमें इतना मशगूल था कि इस ज़रा-सी बातकी ओर मेरा ध्यान ही न गया।

थोड़ी देरमें हम नदी पर पहुँच गये और नावमें सवार हो गये। बंकूने पाल खोल दिया। हमारे अनुकूल हवा जोरोंसे बह रही थी। उसका सहारा मिलते ही पानीको तेजीसे चीरती हुई नौका दौड़ चली।

पालका एक कोना ज़रा-सा फटा हुआ था और हवा ज़बर्दस्तीसे उसमें घुसकर कर्कश गीत गा रही थी। पतवार हाथमें पकड़े बंकू भी अपने मोटे और बेसुरे गलेसे एक खलासी गीत गाकर उसका साथ दे रहा था। प्रकृति और मनुष्य सम्मिलित होकर जिस अत्यन्त कर्णकटु संगीतकी सृष्टि कर रहे थे उसमें भी मुझे थोड़ी देर पहले सुना हुआ सेवन्तीका मधुर स्वर ही सुनाई दे रहा था। मेरे कानोंमें अब भी उसका वह ‘ देवीका मंत्र ’ गूंज रहा था।